बेसिक शिक्षा के

मिशन शिक्षण संवाद

अनमोल रत्न

संस्करण -१

सन् २०१६-१७

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान

★मिशन शिक्षण संवाद★

- **मिशन शिक्षण संवाद क्या ?**

मिशन शिक्षण संवाद हम सब शिक्षकों को आपस में एक साथ जोड़ कर एक दूसरे के आपसी सहयोग से सकारात्मक सोच की शक्ति से बेसिक शिक्षा को नई पहचान दिलाने का प्रयास करना है।

- **मिशन शिक्षण संवाद का उद्देश्य क्या है?**

शिक्षा एवं शिक्षक के हित और सम्मान की रक्षा आपसी सहयोग से करना। जिसका एक सूत्रीय उद्देश्य है---
"शिक्षा का उत्थान और शिक्षक का सम्मान"

- **मिशन शिक्षण संवाद के कार्य क्या है?**

मिशन शिक्षण संवाद के चार प्रमुख कार्य है।
□1- **परिवेश:-** हम सब का यथा सम्भव प्रयास होगा कि विद्यालय के परिवेश को आकर्षक और सकारात्मक ऊर्जा का केन्द्र बनाने के लिए आपसी सहयोग और जनसहयोग से सदैव प्रयासरत रहेंगे।

□2- **पढ़ाई:-** विद्यालय और शिक्षक की पहचान पढ़ाई को किसी भी परिस्थिति में प्रथम कार्य समझते हुए गुणवत्तापूर्ण बनाने के लिए प्रयासरत रहेंगे। क्योंकि शिक्षण ही शिक्षक का अस्तित्व होता है। इसलिए शिक्षा के उत्थान के लिए हम सब अपने प्रयास एक दूसरे से अवश्य साझा करेंगे।

□3- **प्रचार:-** हम सब मिलकर एक- दूसरे के सहयोग से विद्यालय की गतिविधियों और उपलब्धियों तथा सामाजिक स्तर पर किये गये कार्यों

को यथा सम्भव सम्पूर्ण समाज के बीच प्रचार और प्रसार करेंगे। जिससे समाज के बीच बन चुकी बेसिक शिक्षा एवं शिक्षक की नकारात्मक छवि को, सकारात्मक और सम्मानित छवि में बदलते हुए सामाजिक विश्वास को मजबूत कर सकेंगे। इसके लिए संकोच और शर्म छोड़ एक दूसरे के सक्रिय सहयोगी बनेंगे।

4- पॉवर:- उपर्युक्त कार्यों की सफलता के लिए हम सब बिना किसी पद, प्रतिष्ठा की उम्मीद के समानता के सिद्धान्त को अपनाते हुए संगठित होकर एक- दूसरे के सहयोगी बनेंगे। जो प्रत्येक जनपद में टीम भावना से शिक्षा एवं शिक्षक के हित और सम्मान की रक्षा के लिए काम करेंगे। हम सब केवल सहयोगी कहलायेंगे तथा सामूहिक रूप से संवाद परिवार कहलायेंगे। हम सब सहयोगी सर्वदलीय और निर्दलीय रूप से केवल शिक्षा एवं शिक्षक के हित और सम्मान की रक्षा के उद्देश्य पर काम करेंगे।

- **मिशन शिक्षण संवाद का सहयोगी कौन बन सकता है?**

मिशन शिक्षण संवाद का सहयोगी ऐसा प्रत्येक व्यक्ति बन सकता है जो बिना किसी लोभ, लालच या स्वार्थ के, शिक्षा के उत्थान और शिक्षक के सम्मान के लिए सहयोगात्मक व्यवहार अपनाने के लिए स्वेच्छा से तैयार होगा।

- **मिशन शिक्षण संवाद की पहचान क्या है?**

मिशन शिक्षण संवाद की पहचान उसका चिह्न है जो हम सबको संदेश देता है कि-

आज़ाद भारत के आज़ाद परिंदे है हम, जो कलम की ताकत से, हम सब हाथ से हाथ मिलाकर शिक्षा का उत्थान और शिक्षक के सम्मान की नींव मजबूत करेंगे।

" दो शब्द "

कहते हैं "आवश्यकता अविष्कार की जननी है"। ऐसी ही एक आवश्यकता का नाम है "मिशन शिक्षण संवाद", जो आज किसी परिचय का मोहताज नहीं है। "मिशन शिक्षण संवाद" प्रादेशिक समूह के अतिरिक्त आज प्रदेश के 48 जनपदों में अपनी जड़ें फैला चुका है। सोशल मिडिया के इस दौर में जहाँ समूहों के झुण्ड फैले हुए हैं, वहाँ "मिशन शिक्षण संवाद" व्हाट्सएप्प समूह एवं "शिक्षण संवाद एवं गतिविधियां" फेस बुक पेज, ने अपने साफ़, स्वच्छ, शालीन और *विमल* रूप को प्रस्तुत किया है। राजनीतिकरण के इस दौर में मिशन संवाद एक ऐसा शिक्षक समूह है जिसका राजनीति से कोई सरोकार नहीं है।

"मिशन शिक्षण संवाद" का एक ही मूल मंत्र, एक ही धर्म और एक ही उद्देश्य है:- "शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान"।

"मिशन शिक्षण संवाद" अपने इस उद्देश्य को दृष्टिगत रखते हुए देश के कोने-कोने से ऐसे अनमोल रत्नों (शिक्षक भाई- बहनों) की खोज करके उन्हें एक मंच प्रदान कर रहा है, जिन रत्नों को समाज की दूषित राजनीति की धूल ने छिपा लिया है।

समाज और मिडिया के सामने केवल सिक्के का एक रूप ही आया है जिसके अनुसार बेसिक शिक्षा आज बदहाल स्तिथि में है। अतः आज आवश्यकता इस बात की है कि हम सब स्वयं द्वारा किये गए कार्यों को समाज के सामने रखते हुए सिक्के के दूसरे रूप को भी प्रदर्शित कर दें। साथ ही उनको बता दें कि आप किसी पूर्वाग्रह से ग्रसित होकर बेसिक शिक्षा को निरन्तर बदनाम कर रहे हैं।

यदि मिशन शिक्षण संवाद के कार्यों पर बात की जाए तो मिशन के चार प्रमुख कार्य हैं।

- **परिवेश**- विद्यालयी परिवेश को आकर्षक बनाना।
- **शिक्षा**- बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना।
- **प्रचार**- विद्यालयी प्रयासों का समाज में प्रचार कर, नकारात्मक छवि को बदलना।
- **पावर**- किसी भी पद, प्रतिष्ठा की लालसा के बिना समानता के सिद्धांत को अपनाते हुए, संगठित होकर कार्य करना।

मिशन शिक्षण संवाद की उत्त्पत्ति कोई संयोग मात्र नहीं है। वर्षों से शिक्षक समाज के मन-मस्तिष्क में ये बात उठती रही है कि हमारे प्रयासों के बाद भी, हमें समाज में, सम्मान की दृष्टि क्यों नहीं देखा जाता।

आज हमारे कुछ शिक्षक भाई/बहनों ने इस पर चिंतन करते हुए दृढ संकल्प लिया कि हमें अपने माथे से इस कलंक को मिटाना ही होगा। जब इस कल्पना ने जन्म लिया तब आवश्यकता हुई इस असाधारण कार्य को साकार करने की। एक ही नाम आया सामने जिस को सहर्ष स्वीकार किया गया - विमल कुमार ।

विमल कुमार जी, आज बेसिक शिक्षा जगत को, *मिशन शिक्षण संवाद* के माध्यम से सकारात्मक सोच और ऊर्जा प्रदान कर रहे हैं। मिशन संवाद के माध्यम से विमल कुमार जी, नित नये अनमोल रत्नों को समाज के सामने ला कर खड़ा कर रहे हैं। ऐसा प्रतीत होता है विमल कुमार सूर्य हैं और सभी अनमोल रत्न उनकी रश्मियां।

संक्षिप्त परिचय

विमल कुमार पुत्र श्री लक्ष्मी चन्द्र मूल रूप से ग्राम सलैया, जनपद-औरैया के रहने वाले हैं। आपने भौतिक शास्त्र से स्नातकोत्तर के साथ बी0टी0सी0 की है। 2002 में आपने अपनी सेवा का आरम्भ सहायक अध्यापक के रूप में प्राथमिक विद्यालय कुँवरपुर विकास खण्ड मलासा जनपद कानपुर देहात से किया। वर्तमान में आप पूर्व माध्यमिक विद्यालय अमराहट विकास खण्ड राजपुर जनपद कानपुर देहात में सहायक अध्यापक के रूप में कार्य कर रहे हैं।

विमल कुमार जी की सोच ने, बेसिक शिक्षा जगत में आपको एक अलग पहचान प्रदान की है। समाज में बेसिक शिक्षा की सकारात्मक सोच का प्रचार-प्रसार कैसे हो?

यह प्रश्न विमल कुमार जी के मन-मस्तिष्क में निरन्तर चलता रहता है। आपके घनिष्ट मित्र भी, आपके इस भागीरथ प्रयास में कंधे से कंधा मिलाकर खड़े रहते हैं। जिनके प्रयासों से आज *मिशन शिक्षण संवाद* उत्तर प्रदेश के 48 जनपदों तथा 6 राज्यों में कार्य करते हुए प्रगतिपथ पर अग्रसर है। शीघ्र ही अन्य जनपदों/राज्यों में मिशन समूह स्थापित करने की योजना है।

राष्ट्रनिर्माताओं को शत् शत् नमन !!

क्र० सं०	शिक्षक का नाम	विद्यालय का नाम	ब्लॉक	जनपद
1.	श्री रवि प्रताप सिंह	प्राथमिक विद्यालय धौरहरा,	कर्नलगंज	गोंडा
2.	कपिल मलिक	प्राथमिक विद्यालय इटायला माफ़ी	असमोली	सम्भल
3.	शैलजा त्रिपाठी	प्राथमिक विद्यालय भरतौल	बिथरी चैनपुर	बरेली
4.	कृष्ण मुरारी उपाध्याय	उच्च प्राथमिक विद्यालय पठा	महरौनी	ललितपुर
5.	अल्पा निगम	प्राथमिक विद्यालय तिलौली	सरदार नगर	गोरखपुर
6.	नीरज गोयल	प्राथमिक विद्यालय नं.-10	नगर क्षेत्र	शामली
7.	डॉ० मनोज कुमार वार्ष्णेय	पूर्व माध्यमिक विद्यालय गोठा	वजीरगंज	बदायूँ
8.	डॉ० जगदीश पाठक	प्रा० वि० गोकुल-प्रथम	बल्देव	मथुरा
9.	अख़लाक़ अहमद	वि0 तितावी न0- प्रथम	बघरा	मुज़फ्फरनगर
10.	डॉ० सर्वेष्ट मिश्र	पूर्व मा0 विद्यालय, परसा जागीर,	बस्ती सदर	बस्ती
11.	खुर्शीद हसन	पूर्व माध्यमिक विद्यालय हस्तिनापुर	बड़ागाँव	झाँसी
12.	ज्योति कुमारी	पूर्व माध्यमिक विद्यालय कोइलरा	औराई	भदोही
13.	डॉ विभा शुक्ला	प्रा०वि० पुरानी बाज़ार,	बदलापुर	जौनपुर
14.	संयोगिता	प्राथमिक विद्यालय पौटा	हल्दौर	बिजनौर
15.	डॉ अनीता मुदगल	श्री श्रद्धानंद प्राथमिक पाठशाला ,झींगुरपुरा	नगर क्षेत्र	मथुरा
16.	अजय सिंह	प्राथमिक विद्यालय गजोधरपुर	सिधौली	सीतापुर
17.	राजवीर सिंह प्रभाकर	प्राथमिक विद्यालय बकैनिया दीक्षित	बरखेड़ा	पीलीभीत
18.	आशीष शुक्ल	प्राथमिक विद्यालय बोझवा कुरसेली	हरियावां	हरदोई
19.	प्रज्ञा राय	प्राथमिक विद्यालय मैनपुर कोट	कसया	कुशीनगर
20.	सुशील कुमार	प्राथमिक विद्यालय गुलरिया	हरक	बाराबंकी
21.	सम्पन्न कुमार निगम	प्रा० वि०बिशुनपुर-२	फतेहपुर	बाराबंकी
22.	कुँवरसेन	पूर्व माध्यमिक विद्यालय हर्रायपुर,	बिसौली	बदाँयू
23.	अलका बाजपेई	पूर्व माध्यमिक नैका	बहादुरपुर	इलाहाबाद
24.	प्रीती वर्मा	प्रा.वि.कुन्देरामपुर	अमौली	फतेहपुर
25.	उमेश कुमार सिंह	प्रा० वि० करमपुर नवीन	बेरुआरबारी	बलिया
26.	आशीष कुमार सिंह	कन्या पूर्व मा0 विद्यालय भुलईपुर	भदोही	भदोही
27.	सुमन लता यादव	प्रा० वि० कुँवरपुर बनवारी	छिबरामऊ	कन्नौज
28.	अफ़ाक अहमद	प्राथमिक विद्यालय रावतपार अमेठिया	लार	देवरिया
29.	अनन्त तिवारी	प्रा० वि० देहरे बाबा	मसौरा कलाँ	ललितपुर
30.	बहन सुमन	में प्रा० वि० अजब पुर मंगावली	मुरादनगर	गाजियाबाद

श्री रवि प्रताप सिंह

शिक्षक मित्रों आज हम 1989 में जन्मे एक ऐसे युवा शिक्षक भाई से आपका परिचय करा रहे हैं जो हम जैसे तमाम शिक्षक भाई बहिनों के लिए आदर्श, प्रेरणा और जागरूकता के स्रोत हो सकते हैं।

जिन्होंने अपने कार्य, लगनशीलता और प्रतिभा की दम से मात्र अगस्त 2013 से अब तक के अल्प समय में बेसिक शिक्षा विभाग की तमाम प्रतिकूल परिस्थितियों के बाबजूद शिक्षक धर्म के उस मानवीय पहलू को कर दिखाया जिसे हम बेसिक शिक्षा में स्वप्न भी कह सकते हैं।

https://www.facebook.com/shikshansamvad/posts/1714237192187204

वह है परिवर्तन की अलख जगाने वाले सम्मानित भाई श्री रवि प्रताप सिंह प्राथमिक विद्यालय धौरहरा, व्लाॅक- कर्नलगंज जनपद- गोंडा। जिनकी उपलब्धियाँ निम्नवत् हैं।

👉🏻1- जनपद का प्रथम स्कूल के लिए पुरस्कार हेतु चयनित। मिलेंगा एक लाख बीस हजार का पुरस्कार।

👉🏻2- NCERT नई दिल्ली में आयोजित होने वाली National meet on community involvement and mobilisation in education में सहभागिता के लिए नामित।

👉🏻3- विश्व गौरैया संरक्षण सूची में स्थान।

👉🏻4- पृथ्वी दिवस पर वाशिंगटन से प्रमाण पत्र।

👉🏻5- जैव विविधता दिवस पर कोरिया में आयोजित विश्व सम्मेलन में गूगल मैप पर आपके स्कूल को स्थान और स्कूल के कार्यक्रम को सम्पूर्ण विश्व के प्रतिभागियों के सम्मुख दिखाया जाना।

👉🏻6- विश्व तम्बाकू निषेध दिवस पर WHO बधाई पत्र प्राप्त।

👉🏻7-विभाग द्वारा आदर्श अध्यापक का चयन।

👉🏻8- ब्लॉक स्तर के आदर्श अध्यापक सरकार द्वारा घोषित किया गया।

👉🏻9- बेसिक शिक्षा मंत्री द्वारा आर.टी. मेले में सम्मानित।

👉🏻 10-मंडलायुक्त, जिलाधिकारी, सी डी ओ और बी एस ए द्वारा शिक्षक दिवस पर सम्मानित शाल ,प्रसास्ति पत्र, मेडल।

👉🏻 11-हिन्दुस्तान गोण्डा महोत्सव में बेसिक शिक्षा में सुधार हेतु प्रशस्ति पत्र, शाल व प्रमाण पत्र देकर सम्मानित।

👉🏻12- डायट एल्युमनाई डे पर प्रदेश स्तरीय पुरस्कार लखनऊ में सम्मानित।

👉🏻13- खण्ड शिक्षा अधिकारियों के प्रदेश स्तरीय कार्यशाला में सम्बोधन। प्रदेश के सभी खण्ड शिक्षा अधिकारियों, कुछ बी एस ए, सभी निदेशक, सचिव, प्रमुख सचिव, विशेष सचिव, माननीय मंत्री गण की उपस्थिति में।

👉🏻14- तत्कालीन माननीय बेसिक शिक्षा मंत्री श्री राम गोविन्द चौधरी जी द्वारा बेसिक शिक्षा में सुधार हेतु सुझाव मांगे गए।

👉🏻15- पर्यावरण शिक्षण केंद्र लखनऊ द्वारा पर्यावरण से सम्बंधित किये जा रहे कार्यों के लिए प्रशस्ति पत्र।

👉🏻🏻16- गौरैया संरक्षण के उत्तर प्रदेश सरकार के पोस्टर में पाँच फ़ोटो पूरे प्रदेश से लिए गए थे उनके से एक आपका भी था।

👉🏻🏻17- राष्ट्रीय कैम्प व मेला में देश में आपके विद्यालय के बच्चों ने दूसरा स्थान प्राप्त किया।

👉🏻🏻18-समाज कल्याण राज्य मंत्री ने ट्राफ़ी देकर सम्मानित किया।

👉🏻🏻19 जनपद स्तरीय आर टी ई मेले में आपके विद्यालय द्वारा लगाए गए स्टाल पर एडिशनल पुलिस अधीक्षक समेत कई वरिष्ठ अधिकारियों ने बनाए गए गेम में अपने हाथ आज़माए। जीतने वाले अधिकारियों को स्कूल के छात्रों ने टाफ़ी दी। एडिशनल पुलिस अधीक्षक ने कहा सरकारी स्कूलों में ऐसा सराहनीय कार्य है। उन्होंने कहा आप यह सब करते कैसे हैं? छात्रों द्वारा गेम खिलाया जा रहा था जिस पर अधिकारियों, शिक्षक नेताओं ,शिक्षकों आदि सभी ने हाथ आज़माए। ज़िलाधिकारी महोदय को स्कूल की प्रगति रिपोर्ट सौंपी। स्कूल के बारे में ज़िलाधिकारी महोदय सुनने के बाद चौंकते हुए कई प्रश्न किए। वह स्कूल के बारे में सब कुछ जानना चाह रहे थे। उन्होंने कहा सरकारी स्कूल में ऐसा भी होता है। मैंने अभी तक नही सुना। बहुत अच्छे मैं आपके यहाँ आऊँगा। गर्मजोशी से कारपोरेट स्टाइल में हाथ मिलाते हुए ज़िलाधिकारी महोदय ने कहा वेल डन। सबको सिखाइए और लोगों को प्रेरित करिए। कार्यक्रम में ज़िलाधिकारी महोदय, अपर ज़िलाधिकारी महोदय, एडिशनल एस पी महोदय, बेसिक शिक्षा अधिकारी महोदय सहित कई अधिकारी, टीचर्स आदि से सम्मानित एवं बधाई।

👉🏻🏻20 पर्यावरण व जल संसाधन द्वारा प्रशस्ति पत्र प्राप्त।

👉🏻🏻21 प्रदेश के शैक्षिक कैलेण्डर में स्कूल की गतिविधियों में स्कूल की गतिविधियाँ शामिल।

रवि प्रताप सिंह
प्राथमिक विद्यालय धौरहरा,
ब्लॉक - कर्नलगंज
जनपद- गोंडा

2.

कपिल मलिक

मित्रो आज हम आपको विश्व शिक्षक दिवस के अवसर पर एक बार पुनः आदर्श परिवर्तन के साथ मिशन शिक्षण संवाद के माध्यम से बेसिक शिक्षा के उस अनमोल रत्न से परिचित करवा रहे हैं जो शिक्षा के प्रति समर्पण के प्रतीक पुरुष हैं। आपने अपनी विद्यालय के प्रति समर्पित लगन से ऐसा चमत्कार कर दिखाया जो हम सामान्य शिक्षक के लिए स्वप्न के समान है।

आपने जब विद्यालय में शिक्षक के रूप में सेवाएं शुरू की तब मात्र 15 से 20 बच्चों की उपस्थिति के साथ छूटे- फूटे कक्षा कक्ष थे। विद्यालय परिसर में गाँव वालों का वर्षों से पूर्ण विकसित अघोषित

पशुशाला और बैलगाड़ियों का स्टेशन था। इस बैलगाड़यों के स्टेशन और अघोषित अतिक्रमण करने वाली पशुशाला को हटाने की बात कहने पर विद्रोही स्वभाव, सरकारियत सोच और नियत के साथ बेसिक शिक्षा की पूर्व धारित धारणा को लेकर आप पर चारों ओर से हतोत्साहित और भयभीत करने का असफल दुश्चक्र भी आक्रमण करता रहा है।

लेकिन शिक्षा के प्रति समर्पण, लगन और राष्ट्र भक्ति पूर्ण सकारात्मक तथा मानवतावादी सोच के आगे, बिना विभागीय सहयोग के, एफ आई आर और पुलिस प्रशासन की कानूनी सहायता से एवरेस्ट चोटी की चढ़ाई के समान समस्त चुनौतियों का अन्त कर आज एक विकसित, सुसज्जित, प्रगतिशील, गुणवत्तापूर्ण शिक्षण से युक्त, 250 बच्चों की उपस्थिति से चहकते विद्यालय के प्रधानाध्यापक के रूप में हमारे सम्मानित भाई श्री कपिल मलिक जी

प्राथमिक विद्यालय इटायला माफ़ी, ब्लॉक- असमोली, जनपद- सम्भल में कार्यरत हैं।

आपकी उपलब्धियों की सराहना लिखने के लिए आज हमारी लेखनी पीछे छूटती नजर आ रही है फिर हम आप सब की प्रेरणा स्वरूप लिखने का प्रयास कर रहे हैं। जिसे आप नीचे दिए गये लिंक से भी देख सकते हैं।
https://m.facebook.com/story.php?story_fbid=1780489452228644&id=159822084712217 3

★उपलब्धियाँ और गतिविधियाँ★

□□1- 150 गमलों में खुशबू बिखेरते पौधों की श्रृंखला तथा लगभग इतने ही छायादार और फलदार वृक्षों से सुसज्जित खूबसूरत विद्यालय परिवेश।

□□2- पारदर्शी खिड़कियों, हवा, प्रकाश एवं सुन्दर और उपयोगी टी एल एम से सुसज्जित कक्षा कक्ष।

□□3- विद्यालय में समरसेबिल पम्प द्वारा स्वच्छ पानी की व्यवस्था।

□□4- सोलर पैनल द्वारा विद्युत व्यवस्था।

□□5- विद्यालय में नियमानुसार समितियों की बैठक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का जनसहभागिता के साथ धूमधाम से उत्सव।

□□5- सुसज्जित प्रार्थना स्थल पर दैनिक प्रार्थना, राष्ट्रगान और राष्ट्रगीत कम्प्यूटरीकृत बोर्ड पर अंकित।

□□6- विद्यालय में कम्प्यूटर आधारित शिक्षा और टी एल एम का उपयोग।

□□7- टाई, बैल्ट, वैज, बैग और एक जैसे स्वेटरों से सुसज्जित छात्र तथा मेधावी बच्चों को और 100% उपस्थिति वाले बच्चों को स्टार ऑफ द क्लास के रूप में सम्मानित करना।

□8- अपनी लगन और समर्पण के प्रमाणपत्र के रूप में उपस्थिति के लिए बायोमैट्रिक मशीन लगने का तैयारी।

आदि अनेकों उपलब्धियों का कारवां अभी तो अनवरत आगे की ओर अग्रसर है। जो वर्षों में नहीं महीनों में कुछ नया करने के लिए हमें भी प्रेरित करता है।

अभी तक जहाँ बेसिक शिक्षा में कमाने खाने और खज़ाने का माहौल बना रहा है। वहीं ऐसे आदर्श शिक्षक हम सब के सम्मान के प्रतीक के रूप में, बेसिक शिक्षा में सकारात्मक सोच की नयी रोशनी का दर्शन कराते है।

अतः हम सब मिशन शिक्षण संवाद की ओर से शिक्षा एवं शिक्षक के हित और सम्मान की रक्षा के लिए समर्पित भाई श्री कपिल मलिक जी एवं विद्यालय परिवार को सतत प्रगति और उज्ज्वल भविष्य की कामना के साथ बहुत बहुत शुभकामनाएं!

बहन शैलजा त्रिपाठी

मित्रो आज हम दीपकोत्सव की शुभकामनाओं के साथ आपको मिशन शिक्षण संवाद के माध्यम से सतत परिचय के क्रम में बेसिक शिक्षा के अनमोल रत्नों की खोजशाला में जनपद- बरेली की वन्दनीय बहन शैलजा त्रिपाठी जी से करा रहे हैं। जिन्होंने बेसिक शिक्षा की अल्प संसाधन की विभिन्न बहुप्रचारित योजनाओं के बीच भी आपसी सहयोग से अपने विद्यालय को नवीन गति प्रदान कर जनपद का आदर्श विद्यालय बनाने में सफलता प्राप्त की है। जो हम सबको आपसी सहयोग के लिए सोचने पर मजबूर करता है। क्योंकि कई विद्यालयों में सफलता सिर्फ इसलिए दूर है कि हमारे आपसी सहयोग एवं बात करने में अहंकार हमें कमजोर करता हैं। आदर्श विद्यालय की सफलता

का विवरण हम बहन जी के सम्मानित शब्दों के माध्यम से जान सकते हैं।---
https://m.facebook.com/story.php?story_fbid=1794452477499008&id=1598220847122173

हमारी इस प्राथमिक विद्यालय भरतौल की यात्रा का प्रारंभ माननीय मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव जी के अंग्रेजी माध्यम बेसिक विद्यालय के सिद्धांत पर हुआ। बरेली में अंग्रेजी माध्यम के लिए आयोजित परीक्षा के उपरांत जब मेरा चयन इस विद्यालय के लिए हुआ तब मन में एक जज्बा उभर कर आया, कि अब एक नया माहौल, नया विद्यालय मिलेगा। मेरे दिमाग में अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों की छवि थी जिसको लेकर जब मैं विद्यालय पहुँची तो विद्यालय की स्थिति देखकर अहसास हुआ कि यह तो किसी पिछड़े बेसिक विद्यालय जैसा ही है, इसको अंग्रेजी माध्यम बनाने से पहले क्या सोचा गया होगा?

खैर वहाँ पर अन्य चयनित शिक्षकों आनन्द जायसवाल और शिवानी जौहरी से भी परिचय हुआ और एक दो दिन में ही हम तीनों ने एक बेसिक विद्यालय को एक श्रेष्ठ अंग्रेजी माध्यम विद्यालय बनाने का दृढ़ निश्चय कर लिया। क्योंकि:--

"दृढ़ निश्चय, सटीक रणनीति और सही मार्गदर्शन से बड़े -बड़े युद्ध जीत लिए जाते हैं„

इस वाक्य को अपना आदर्श बनाकर हमने अपने प्रयास प्रारंभ कर दिए। हमारे सामने सबसे पहली समस्या थी- बालकों की उपस्थिति!

विद्यालय में अप्रैल- 2015 मे 110 नामांकित विद्यार्थी थे। हमने उपस्थिति के लिए प्रार्थना सभा में हर कक्षा की 2 लाइनें लगवायी, एक नियमित आने वाले और दूसरी अनियमित आने वाले।

नियमित आने वाले बच्चों को प्रार्थना स्थल पर प्रोत्साहन दिया जाने लगा और कक्षा में उपस्थिति रजिस्टर सभी बच्चों को दिखाया गया। अब सारे बच्चों में स्वयं की उपस्थिति लगवाने का कौतूहल और उसके आधार पर प्रोत्साहन पाने की चाहत विकसित हो गयी, और यही नियम साफ और गन्दे आने वाले बच्चों पर भी लागू किया गया। इसी समय हमने अंग्रेजी माध्यम की तरह शिक्षक- अभिभावक की मीटिंग हर माह , अवकाश पर सूचना / प्रार्थना पत्र अनिवार्य कर दिया। इसके परिणाम काफी सुखद रहे।अभिभावकों के सीधे सम्पर्क के कारण हमारे विद्यालय की उपस्थिति में ठहराव तो हुआ ही अपितु सितम्बर आते-आते विद्यालय में 150 नामांकन हो गये जिनमें 135 हमेशा उपस्थित रहें। उपस्थिति बढ़ने पर हमें अधिक स्थान की आवश्यकता हुई। हालाँकि परिसर बड़ा था पर अनियमित था हमने इसको साफ करने का निश्चय किया लेकिन हमेशा इसे भी नया रूप देना चाहते थे इसलिए हमने इसे GO GREEN सिद्धांत में परिवर्तित कर लिया इसमें हम परिसर को साफ करने के साथ साथ पौधे भी लगाते हैं हर बच्चे ने अपना अपना पौधा लगाया। अब इसी को विस्तृत रूप देते हुए हमने हर बच्चे को उसके जन्मदिन पर एक पौधा लगाने की बात बतायी है।अब हमारे सामने परिसर के बाद, इतनी अधिक संख्या में बच्चों का होना और सिर्फ 3 शिक्षकों का होना, यह भी अपने आप में बड़ा दायित्व था। हमने यहाँ पर school cabinet का निर्माण किया जिसमें School Captain, Vice Captain, Food incharge, Discipline incharge, cleanliness incharge, Cultural incharge, के साथ हर कक्षा के लिए Class Representative भी बनाए गये। इससे हमारा विद्यालय सुचारु रूप से गतिमान अवस्था में आ गया। गति भी ईंधन पर ही निर्भर करती हैं अतः अब हमें ईंधन की

आवश्यकता थी, और वह ईंधन था- हमारी गतिविधियों पर आधारित, नवाचार से परिपूर्ण शिक्षा और शिक्षण सहायक सामग्री।

हमने कई प्रकार के चार्ट, पोस्टर बनाए, अक्षर ज्ञान हेतु हमने विद्यालय के मैदान में मिट्टी का बोर्ड बनाकर उस पर स्लेट की तरह लिखने का अनुभव भी किया। इसके अलावा त्रिआयामी अक्षरों तथा अन्य शिक्षण अधिगम सामग्री के प्रयोग से हमने सीखने की प्रक्रिया को और सरल व रोचक बनाया। इसके बाद हमने बच्चों को स्वयं एक अक्षर की भूमिका निभाकर के दो अक्षरों से मिलकर नये शब्द सिखाये। मात्र सात माह की अवधि में हमने पहचाना कि हमारे छोटे छोटे सफल प्रयासों में बच्चों ने जिस लगन और मेहनत से प्रतिभाग किया और हमें सुखद परिणाम दिये, उन परिणामों को विस्तृत रूप प्रदान करते हुए, हम अपने बच्चों को उनकी प्रतिभा के प्रदर्शन के लिए एक मंच देना चाह रहे थे जिसके फलस्वरूप आविर्भाव हुआ हमारे ★विद्यालय के वार्षिकोत्सव★ का।

इसमें हमने कार्यक्रमों को ऐसे समन्वित किया जिससे कि अधिक से अधिक बच्चों को अपनी बहुमुखी प्रतिभा दिखाने का अवसर मिले। इसलिए हमने समूह नृत्य , एकल नृत्य, वन्दना ,फैशन शो, नाटिका, काव्यपाठ जैसे कार्यक्रमों कार्यक्रम मंचन किया। हमारे इस कार्यक्रम में हमारे समस्त वरिष्ठ अधिकारी गण मौजूद रहें जिन्होंने कार्यक्रम की भूरि-भूरि प्रशंसा की। हमारे अथक प्रयासों के कारण ही उस समय हमारे विद्यालय को जनपद के सर्वश्रेष्ठ विद्यालय योजना में द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ। सर्वश्रेष्ठ विद्यालय का पुरस्कार न जीत पाने का मलाल तो था परन्तु उससे कहीं अधिक इस बात की खुशी थी कि मात्र आठ माह के छोटे अन्तराल में हमने जनपद के बाकी विद्यालयों को पीछे छोड़ते हुए यह अभूतपूर्व उपलब्धि हासिल की। अंग्रेजी माध्यम की स्वर्णिम सफलताओं को देखते हुए अब हम आगे अपने विद्यालय को तकनीकी रूप से आगे बढ़ाने के लिए प्रयासरत हैं। शैक्षिक स्तर में शत-प्रतिशत

उन्नति करना हमारा सर्वप्रथम लक्ष्य है। प्रदेश स्तर तक विद्यालय व विद्यार्थियों की हर गतिविधि में सहभागिता हमारे प्रमुख उद्देश्यों में से एक हैं ।सफलता के शिखर पर पहुँचना आसान है परन्तु वहाँ बने रहना मुश्किल है। हमारे निरन्तर प्रयास, लगन और मेहनत ने हमें सफल बनाया, परन्तु हमारा सपना है *प्राथमिक विद्यालय भरतौल को जनपद का ही नहीं अपितु प्रदेश का सर्वश्रेष्ठ विद्यालय बनाना*।
प्रा० वि० भरतौल का फेसबुक पेज:-
https://www.facebook.com/psbhartaulssa/
है।

मित्रो आपने बहन जी का बेसिक शिक्षा के प्रति समर्पित भाव और सकारात्मक सोच को जाना। जो किस उत्साह के साथ विद्यालय को प्रदेश स्तरीय बनाने के लिए दृढ़ संकल्पित हैं। ऐसी साहसी और सकारात्मक सोच की बहन को हम मिशन शिक्षण संवाद की ओर से कोटि- कोटि नमन करते हैं तथा उज्ज्वल भविष्य की कामना के साथ समस्त सहयोगी विद्यालय परिवार को बहुत बहुत शुभकामनाएँ प्रदान करते हैं।

4.

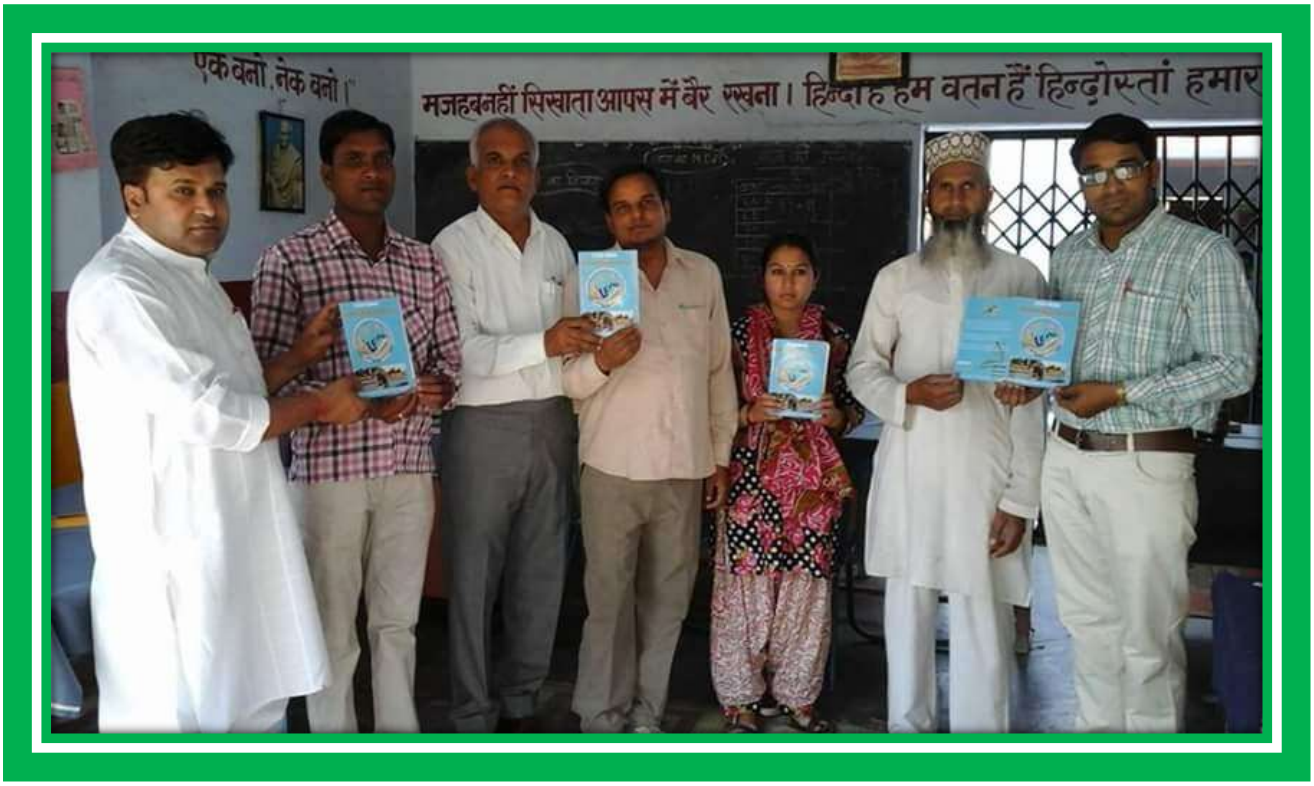

कृष्ण मुरारी उपाध्याय

मित्रो आज हम आपको मिशन शिक्षण संवाद के माध्यम से आपका परिचय बेसिक शिक्षा को शून्य से शिखर की ओर ले जाने का सतत प्रयास करने वाले शिक्षाशास्त्री एवं LEAP के जनक सम्मानित शिक्षक भाई श्री कृष्ण मुरारी उपाध्याय जनपद- ललितपुर से करा रहे हैं। आज जहाँ हमारे बहुत से शिक्षक भाई शिक्षक बनें रहने के अतिरिक्त सब कुछ बनने को लालायित रहते हैं वहीं आपने अपने को विद्यालय में बेसिक शिक्षा के उत्थान के लिए शोधार्थी शिक्षक बनना उचित समझा, जिसके फल स्वरूप आज हम सबके सामने CCE के बाद LEAP जैसा कॉन्सेप्ट प्राप्त हुआ। तो आइये जानते हैं सर जी से कि---

https://m.facebook.com/story.php?story_fbid=1771625489781707&id=1598220847122173

LEAP क्या है?????

साथियो की जिज्ञासा रहती है कि लीप (LEAP) क्या है?

वर्ष 2011 मई से ब्लाक महरौनी जनपद ललितपुर में ABRC रहा। विभिन्न प्रशिक्षण लिए और दिए, ब्लाक स्तर से लेकर राज्य स्तर तक।

सतत और व्यापक मूल्यांकन (CCE) उत्तर प्रदेश में 2012 में प्रदेश के पांच जनपदों (ललितपुर भी शामिल) के पांच - पांच स्कूलों में फील्ड ट्रायल के तौर पर लागू किया गया, मेरी खुशकिस्मती रही कि मैं इसके पहले चरण से ही इससे जुड़ गया जिससे मुझे इसको बहुत नजदीक से जानने और समझने का अवसर मिला। 2013 में CCE के परिवर्तन और सम्बर्धन के बाद में उक्त पांच जनपदों के समस्त स्कूलों में इसे लागू किया गया। सघन प्रशिक्षण, फीडबैक और फॉलोअप, अनुश्रवण व अनुसमर्थन पर बहुत मेहनत की गयी।

2014 में राज्य स्तरीय दल ने व्यापक रूप से कार्यक्रम का परीक्षण किया। उन्होंने जो भी निष्कर्ष निकाले हों और प्रेषित किए हों यह तो पता नहीं। परंतु मैंने जो निष्कर्ष निकाला वह मुझे पता था।

इस बात से और सभी के साथ मैं सहमत था कि--

"बच्चों के आकलन के निष्कर्षों को दर्ज करने से बेहतर परिणाम प्राप्त किए जा सकते हैं।„

परंतु CCE के प्रारूप में कुछ कमियां हैं जिससे अभीष्ट उद्देश्य की प्राप्ति नहीं होती है। मैं बेचैन था और यही बेचैनी एक नये विचार को जन्म दे रही थी।

नवंबर 2014 में मैंने ABRC के पद से त्यागपत्र दे दिया। तत्कालीन जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी ललितपुर श्री विनोद कुमार मिश्रा जी ने रोका पर मैं नहीं माना। उन्होंने मेरी इच्छानुसार मेरे पूर्व के विद्यालय उच्च प्राथमिक विद्यालय पठा में पदस्थापित कर दिया। जहाँ

मैंने 2004 से कार्य किया था। जहाँ मेरे पुराने अधूरे और कुछ नये सपने मेरा इन्तजार कर रहे थे। (UPS PATHA Mahrauni lalitpur के बारे में फिर कभी)

□आवश्यकता और उद्देश्य- -

□1 - आकलन से प्राप्त निष्कर्षों को दर्ज करना बहुत आसान हो। जिससे कोई भी शिक्षक बिना बड़े- बड़े प्रशिक्षणों के कार्य कर सके।

□2 - चाइल्ड प्रोफाइल के स्थान पर एक ऐसा डॉकूमेन्ट हो जो बच्चे के पास रहे, जिससे वह जब चाहे कुछ सीखने पर शिक्षक से दर्ज करा सके।और स्वयं अवलोकन कर सके।

□3 - पाठ्यक्रम में निर्धारित कौशल उल्लिखित हों, संकेतक बनाने और लिखने का कार्य न करना पड़े।

□4 - बच्चों की प्रगति आसानी से समझी जा सके, उसका विश्लेषण किया जा सके।

□5 - बच्चे सीखने को प्रोत्साहित हों, तथा नैतिक शिक्षा व्यवहारिक हो।

□6 - बच्चे की सहभागिता को सीखने की प्रक्रिया में प्रथम पायदान माना जाए।

□7 - एक ऐसी प्रक्रिया जो बालकेन्द्रित हो।

□8 - आकलन और मूल्यांकन प्रक्रिया भयरहित हो।

उद्देश्यों के अनुरूप एक खाका तैयार किया गया। अन्तिम रूप दिया गया।Eduleap team ने सामग्री निर्धारित की। नाम दिया - Knowledge Bank (Passbook) और प्रेरणा वाक्य मुख्य पृष्ठ पर अंकित किया गया -

"न चौर हार्यं न च राज हार्यं न भ्रातभाज्यं न च भारकारि,

व्ययेकृते वर्धते एव नित्यं विद्या धनं सर्व धन प्रधानम,,

दिसम्बर 2014 में अपने विद्यालय उच्च प्राथमिक विद्यालय पठा में लागू किया गया। अगले सत्र में प्राप्त उपलब्धियों , फीडबैक तथा भविष्यगत आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर इसे विल्कुल नया रूप दिया गया। दो साल की कठिन मेहनत के परिणति है - लीप

Project name -
LEAP -- Learning Evaluation and Augmentation Passbook
नया लोगो बना।
LEAP का अर्थ होता है उछाल और कूद
प्रत्येक विद्यालय , जहाँ सीखने -सिखाने की प्रक्रिया चलती रहती है वह है - Knowledge Bank
पूरी तरह से यहाँ स्पष्ट नहीं कर पाऊंगा।
LEAP (Passbook) उच्च प्राथमिक विद्यालय की तीनों कक्षाओं के लिए है।
कक्षा - एक और दो के लिए - सार (SAAR)-- Skill Assessment and Analysing Record
आरम्भिक पठन कौशल विकास हेतु सार का प्रयोग किया जा रहा है। यह केवल एक पेज का फारमेट है। Peer coaching group के शिक्षक साथियों ने इसकी मांग की थी। बच्चों के शैक्षिक सम्बर्धन हेतु वह प्रयासरत हैं। उन सभी को यह प्रारूप मेल कर दिया गया था। और उन्होंने इसे अपने विद्यालय में लागू किया है । जिसका जल्द ही फीडबैक मिलने लगेगा।

Follow us : https:// www.facebook.com / pages / Eduleaps /
सादर -
कृष्ण मुरारी उपाध्याय
सहायक अध्यापक
उच्च प्राथमिक विद्यालय पठा

ब्लाक महरौनी जनपद ललितपुर

मो नं - 9936067894

WhatsApp - 7607510481

□लीप की सहयोगी टीम:--

TEAM EDULEAPS-
The LEAP has taken painstaking efforts from the people mentioned below-

Krishna Murari Upadhyay--ORIGINAL IDEA of Passbook(Knowledge Bank), Direction, Methodology and Editing

Pranesh Mishra, Mukesh Nayak, Sanjeev Jain, Kaleem Khan, Preeti, Ramlal-- Subject matter , Content and Implementation(experimental phases)

CONTRIBUTING VOLUNTARILY-
Sanjeev & Vandana Sirotia-- inputs and FINANCE
Akshay-- LOGO design, Naming(Eduleaps,LEAP,SIM,SAAR), Editing and Methodology development
Vibhore-- Support

COMPUTER WORK- (Abhay&Minakshi) and Shubham

मिशन शिक्षण संवाद की ओर से सभी LEAP टीम को बहुत- बहुत शुभकामनाएँ!

5.

अल्पा निगम

मित्रो आज के परिचय में मिशन संवाद के माध्यम से आपको मानवता का संरक्षण करने वाली राष्ट्र देवी स्वरूप प्रतिभाओं की प्रतिभा बहन अल्पा निगम जी से करा रहे हैं। जिन्होंने अपने परिवर्तन कारी प्रयासों से ऐसा चमत्कार कर दिखाया कि एक बेसिक शिक्षा के विद्यालय में अभिभावकों को अपने बच्चों का नामांकन कराने के लिए संघर्ष और प्रयास करने पड़ते हैं। जबकि हमें घर – घर जाकर बच्चों को विद्यालय तक लाने के लिए निवेदन करना पड़ता है। हम जिस तंत्र का अनुकरण करते– करते परतंत्र हो गये। वही आपने उसी तंत्र पर मानवता की सेवा करके विजय प्राप्त कर स्वतंत्रता प्राप्त कर ली।

हमारी बहन की सकारात्मक सोच और ऊर्जा ने किस तरह अपने मूल निवास से सैकड़ों मील दूर होने के बाबजूद एक ग्रामीण परिवेश के

विद्यालय को उपलब्धियों और गतिविधियों का केन्द्र बना दिया है। जो हम जैसे हजारों शिक्षकों के लिए प्रेरणा और प्रशिक्षण का स्रोत है।

तो आइये जानते हैं बहन अल्पा निगम जी की गतिविधियों और उपलब्धियों की कहानी उन्हीं के सम्मानित शब्दों में---
https://m.facebook.com/story.php?story_fbid=1754199954857594&id=159822084712217 3

प्राथमिक विद्यालय तिलौली , गोरखपुर , पर मेरा सफ़र 31 जुलाई 2010 में सहायक अध्यापिका के रूप में आरम्भ हुआ था। उस समय विद्यालय में मात्र 69 बच्चे ही नामांकित थे और कुल 24 बच्चे उपस्थित थे , वो भी नंगे पैर और मैले कुचैले कपड़ों में। विद्यालय भी काफी अस्त व्यस्त सा था। भौतिक परिवेश में सुधार से ज्यादा आवश्यक था बच्चों की उपस्थिति में सुधार करना जो की मेरे लिए उस समय एक चुनौती ही थी क्योंकि मैं उस स्थान के लिए नयी थी। मैंने नियमित रूप से प्रतिदिन विद्यालय शुरू होने से पहले और विद्यालय के बाद अभिभावकों से संपर्क करना प्रारंभ किया, कभी बच्चा नहीं मानता तो कभी अभिभावक। ऐसे में मैंने विचार किया कि ऐसा क्या किया जाए कि बच्चे विद्यालय आयें। मेरा मानना है कि बच्चे कोमल होते हैं उनके मन में जगह बनाना आसान होता है। बस इस बात को ध्यान में रखते हुए मैंने विद्यालय को गतिविधियों का केंद्र बनाने का प्रयास किया। हमारे प्राथमिक विद्यालय के बच्चों के लिए उस समय आर्ट और क्राफ्ट के अवसर नहीं मिलते थे। मैंने अपने विद्यालय के सभी बच्चों के लिए चार्ट पेपर को काट कर क्राफ्ट बुक तैयार की। बच्चों की उपस्थिति को सुधारने के लिए मैंने अपने विद्यालय में पहला व आखिरी घंटा रचनात्मक क्रियाकलापों का रखा ताकि बच्चे सुबह में प्रार्थना के समय उपस्थित हों और छुट्टी तक रुकें क्योंकि उनके मन में कौतुहल रहता कि अभी विद्यालय में कुछ नया होना बाकी है । मेरे

इस प्रयास में मुझे पूर्ण सफलता मिली क्योंकि बच्चे जो भी रचनात्मक कार्य करते उसे घर जा कर अपने मित्रो से साझा करते जिससे अनुपस्थित बच्चों के मन में भी कुछ नया सीखने की इच्छा होने लगी जिस कारण विद्यालय की उपस्थिति में अत्यधिक सुधार हुआ। बच्चों को स्वच्छता एवं साफ़ सफाई के लिए प्रेरित करने को मैंने प्रतिदिन सबसे साफ़ बालक को उजाला और सबसे साफ़ बालिका को रोशनी बनाना आरम्भ किया जिससे बच्चे साफ़ सुथरे आने लगे। बच्चों के रचनात्मक कार्यों को समाज तक पहुंचाने के लिए प्रतिवर्ष विद्यालय में विज्ञान, tlm एवं हस्तशिल्प कला प्रदर्शनियों का आयोजन किया जाता है जिसमें बच्चों की प्रतिभा का लोहा मंडलायुक्त महोदय से लेकर जिलाधिकारी महोदय तक मान चुके हैं जब बच्चों ने 45 working और 40 non working विज्ञान के मॉडल्स बनाए जैसे आलुओं से विद्युत्, सौर ऊर्जा चलित रोबोट, simple rocket, levitating पेंसिल, epidiascope, simple वैक्यूम क्लीनर आदि । विद्यालय में 2011 से अनवरत ग्रीष्मकालीन शिविर का आयोजन किया जा रहा है जिसके परिणामस्वरुप 8 आउट ऑफ़ स्कूल बच्चे और 5 बाल श्रमिक पुनः शिक्षा की मुख्य धारा से जुड़कर आज पूर्व माध्यमिक कक्षाओं में अध्ययनरत हैं। अभिभावकों के विद्यालय से जुड़ाव के लिए मैंने विद्यालय में प्रत्येक धार्मिक पर्व (जैसे बसंत पंचमी, होली, दीवाली, ईद , क्रिसमस, जन्माष्टमी, नागपंचमी, रक्षाबंधन आदि) को विद्यालय में मनाना प्रारम्भ किया जिसके परिणामस्वरूप कई सामाजिक कुप्रथाओं का बच्चों व उनके अभिभावकों द्वारा बहिष्कार किया गया जिसमें उल्लेखनीय है नागपंचमी पर गुड़िया पीटना। विद्यालय के बच्चों ने समय समय पर नुक्कड़ नाटकों व नृत्य नाटिकाओं के माध्यम से कन्या भ्रूण हत्या, बालिका शिक्षा एवं स्वास्थ्य, महिला एवं प्रौढ़ शिक्षा, यातायात नियमों आदि के प्रति ग्रामवासियों को जागरूक किया जिसके फलस्वरूप गाँव की 85 महिलाओं ने विद्यालय के बाद विद्यालय में

पढ़ने की इच्छा व्यक्त की तब मैंने उन्हें विद्यालय के बाद पढ़ाना आरम्भ किया जिन्हें देखकर 55 अन्य महिलाओं ने भी विद्यालय में शिक्षा लेना प्रारंभ किया। इनमें से 9 महिलाएं विद्यालय में बच्चों के बीच बैठकर क्रमशः कक्षा 1, 2 व 3 में शिक्षा ग्रहण कर रही हैं।

विद्यालय के बच्चों को प्राप्त सुविधाएं :

□1. प्रोजेक्टर के माध्यम से शिक्षा
□2. पूरे विद्यालय में सोलर पैनल द्वारा विद्युत् व्यवस्था
□3. सबमर्सिबल व वाटर प्यूरीफायर
□4. साप्ताहिक गणवेश के रूप में house colour t.shirt और सफ़ेद यूनिफार्म
□5. समृद्ध पुस्तकालय जिसमें 700 से अधिक पुस्तकें हैं
□6. कक्षा 1 व 2 के बच्चों के लिए अनुलेखन-प्रतिलेखन अभ्यास हेतु worksheets
□7. सभी बच्चों को छात्र दैनन्दिनी और परिचय पत्र
□8. सभी बच्चों को टाई व बेल्ट
□9. कंप्यूटर शिक्षा
□10. प्रतिदिन हारमोनियम व ड्रम के साथ प्रार्थना सभा
□11. बच्चों को संगीत व मार्शल आर्ट्स की शिक्षा
□12. सभी कक्षाओं में wall to wall matting
□13. टॉयलेट काम्प्लेक्स : बालक व बालिकाओं के लिए 4 -4 शौचालय

विद्यालय द्वारा किये जा रहे प्रयास :
□1. प्रतिवर्ष ग्रीष्मकालीन शिविर का आयोजन
□2. विज्ञान , tlm एवं हस्तशिल्प कला प्रदर्शनी

□3. अभिभावक शिक्षा : जिसके अंतर्गत अब तक 140 महिलाएं साक्षर हो चुकी हैं

□4. निबंध , कविता, कहानी, सुलेख, चित्र कला, सामान्य ज्ञान, प्रतियोगिता

□5. कमज़ोर बच्चों को अतिरिक्त समय देकर शिक्षा देना

□6. सभी धार्मिक पर्वों को विद्यालय में मनाना

□7. 100% उपस्थिति वाले छात्रों को पुरस्कृत करना

□8. शैक्षिक भ्रमण

□9. समय समय पर प्रेरणास्रोत व प्रतिष्ठित व्यक्तियों द्वारा अतिथि व्याख्यान

□10. गतिविधि आधारित शिक्षण

□11. सक्रिय बाल समितियां

□12. पौधों की देखभाल के लिए बच्चों व अभिभावकों को जिम्मेदारी सौपना

□13. समय सारणी के अनुसार शिक्षण

विद्यालय की उपलब्धियां

□1. Unicef द्वारा विद्यालय की विडियो फिल्मिंग

□2. राष्ट्रीय हिंदी दैनिक "अमर उजाला" द्वारा रूपायन एचीवर अवार्ड

□3. EDI अहमदाबाद द्वारा "I can" अवार्ड

□4. 2012 व 2014 में तत्कालीन जिलाधिकारियों द्वारा आदर्श शिक्षक सम्मान

□5. Nation Builder Award

□6. जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान गोरखपुर द्वारा आदर्श शिक्षक सम्मान

□7. नामांकित 252 छात्रों के सापेक्ष 225 – 230 की छात्र उपस्थिति

□8. D.I.G. (ssb) सर द्वारा विद्यालय के 6 बच्चों को अपने शिविर में विशेष प्रशिक्षण के लिए आमंत्रित करना

□9. सामुदायिक सहयोग के माध्यम से विद्यालय के विकास के लिए NCERT द्वारा सम्मानित

विद्यालय की उपलब्धियों को विद्यालय के फेसबुक i.d. (प्राथमिक विद्यालय तिलौली), फेसबुक पेज के साथ साथ you tube पर भी देखा जा सकता है।

https://www.youtube.com/watch?v=5vHyK5CBk-Y
https://www.youtube.com/watch?v=A5jamgfKdPQ

सफ़र अभी जारी है और आशा है कि आने वाले समय में विद्यालय के बच्चे नए कीर्तिमान स्थापित करने में सफल होंगे क्योंकि--

"कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती |"

अल्पा निगम (प्र.अ.)
प्राथमिक विद्यालय तिलौली, सरदार नगर
गोरखपुर

मित्रो आपने पढ़ते हुए सीखा होगा कि किस तरह प्रेम और वात्सल्य से बहन ने एक आम गाँव गरीब के लिए शिक्षा को उच्च मानकों के साथ सुगम बना दिया तथा विविध संस्कारों का ज्ञान करा कर विद्यालय को ज्ञानशाला के साथ संस्कारशाला भी बना दिया। वैसे हमें प्रत्येक कर्मयोगी शिक्षक के विषय में जानकर और लिखने में बहुत ही खुशी होती है लेकिन आज इस बहन के परिवर्तन कारी प्रयासों का पूरा विवरण पढ़ते और लिखते हुए खुशी के आंसुओं का वजन सहन नहीं कर सका जिससे वह बाहर निकल ही आये। इसलिए ऐसी प्रेरणा स्रोत शिक्षा की देवी को कोटि - कोटि नमन करते हैं। तथा मिशन संवाद की ओर से बहन और

उसके सहयोगी विद्यालय परिवार को उज्ज्वल भविष्य की कामना के साथ बहुत- बहुत शुभकामनाएँ!

नीरज गोयल

मित्रो आज हम आपको मिशन संवाद में परिचय के क्रम में जनपद- शामली के बेसिक शिक्षा में नवाचार और परिवर्तन के लिए सतत प्रयासरत और दूधवार के जनक शिक्षक भाई नीरज गोयल जी से परिचय करा रहे हैं। जिन्होंने हम सब को सकारात्मक सोच बढ़ाने वाला संदेश वाक्य-- "दशा बदलेगी, तो दिशा बदलेगी„ से प्रेरित किया है। इसी आदर्श वाक्य को अंगीकार करते हुए आपने एक लक्ष्य को लिया। वह लक्ष्य है---

"विद्यालय एवं बच्चों के लिए समाज की भूमिका„

जहाँ आज देश में एकाकी और समाज तोड़ो व्यवस्था का अतिवाद दिखाई देता है। वहीं आपने समाज को अपनी सकारात्मक सोच से रात में भी विद्यालय के विकास के लिए सोचने की नयी दिशा दी है। जिसे आप दी गयी फोटो में भी देख सकते हैं।
https://m.facebook.com/story.php?story_fbid=1747530315524558&id=159822084712217 3

तो आइये पढ़ते है, देखते है और हम भी कुछ नया करने के लिए आगे बढ़ते हैं। आपके प्रयास, आपके शब्दों में--

सर्व प्रथम शिक्षण संवाद एवं गतिविधियाँ में शामिल करने के लिए आपका हृदय से आभार

मित्रों जब बेसिक शिक्षा विभाग में अगस्त-2010 में ग्रामीण क्षेत्र के एक प्राथमिक विद्यालय में स.अ. के पद पर मेरी नियुक्ति हुई तो सरकारी नौकरी का उत्साह तो था, साथ ही साथ विद्यालय एवं बच्चों के लिये कुछ अलग करने का जुनून भी मन में था, परन्तु वास्तव में कहूँ तो उस समय विद्यालय के मन से एकदम शिथिल प्रधानाध्यापक एवं कार्य के प्रति नकारात्मक सोच रखने वाले एकमात्र स.अ. ने मेरी उर्जा का भी पतन कर दिया। मैंने भी प्राथमिक शिक्षकों के लिये समाज की सोच को सार्थक मानकर उनकी तरह ही कुछ समय व्यतीत किया परन्तु अपनी भूमिका के प्रति न्याय नहीं कर पा रहा था और मन में रहा कि शायद विभाग में नौकरी इसी तरह होती होगी।

इसी उधेडबुन में जल्द ही मेरा तबादला फरवरी 2011 में नगर क्षेत्र शामली के प्रा.वि.नं.-6 में स.अ.के पद पर हो गया। लेकिन परिस्थितियाँ यहाँ भी कुछ अलग नहीं मिली। जल्द ही जून-2011 में प्रधानाध्यापिका के सेवानिवृत हो जाने पर जुलाई माह में मुझे मेरे विद्यालय का इंचार्ज बना दिया गया। परिस्थितियाँ और भी कठिन दिखाई दे रही थी। एक ओर तो विद्यालय में केवल 30-35 बच्चों का

नामांकन और उनमें भी विद्यालय आने वाले बच्चों की संख्या बेहद कम। साथ ही साथ नगर की प्रत्येक गली में प्राइवेट स्कूलों की भीड़ के बीच विद्यालय को चलाना भी एक बेहद मुश्किल कार्य था। और तो और विद्यालय में मेरे अलावा कोई नियमित शिक्षक नहीं था। विद्यालय भी मात्र एक शिक्षामित्र के भरोसे था।

लेकिन मैंने हार नहीं मानी और यहीं से मैने अपनी सोच और उर्जा को एक नयी दिशा के साथ एकत्रित करके अपना कार्य शुरू किया। विद्यालय समय के पश्चात आस-पास के क्षेत्रों में संध्या एवं रात्रि में भ्रमण करके विद्यालय में बच्चों की संख्या को 100 के पार पहुँचाया और लगातार ध्यान देते हुए विद्यालय की नियमित उपस्थति को भी 85-90 के बीच बनाये रखा। यदि कोई विद्यार्थी स्कूल नहीं आया तो उसके घर जाकर उसके बारे में जानकारी ली। और इस तरह बच्चों के अभिभावकों के बीच अपनी जगह बनायी। मैंने अपनी सोच में एक विचारधारा को शामिल किया कि *"दशा बदलेगी तो दिशा बदलेगी"* के साथ एक नये लक्ष्य को लिया और वह था----

विद्यालय एवं बच्चों के लिए समाज की भूमिका।

क्योंकि शिक्षा विभाग से मिलने वाली गौण सुविधाओं से यह संभव नहीं था। समाज की इस भूमिका को तय करते हुए मैने अपने नगर की कुछ प्रमुख समाजसेवी संस्थाओं के माध्यम से विद्यालय को पानी की बेहतर सुविधा, बच्चों के लिये प्रतिमाह हैल्थ चेकप कैंप, डेंटल चेकप कैंप के अतिरिक्त बच्चों के लिये जूते, आईकार्ड, जर्सियाँ, मौजे, कैप के अतिरिक्त संस्था द्वारा विद्यालय की चारदीवारी को मजबूत कराया। इसी दौरान हमारे प्रयासों से विद्यालय से एक होनहार बालिका कु.स्वाति का चयन जवाहर नवोदय विद्यालय में कक्षा 6 में हो गया जो विद्यालय के लिए गर्व का विषय था। लेकिन मेरे द्वारा किये गये कार्यों को जबरदस्त गति , प्रशंसा और उर्जा तब मिली जब हमारे

जनपद में प्राथमिक शिक्षा के प्रति बेहद गंभीर, सख्त और प्रभावशाली व्यक्तित्व वाले माननीय जिलाधिकारी महोदय श्री नागेंद्र प्रसाद सिहं का आगमन हुआ। जिन्होंने आते ही सर्वप्रथम जनपद की प्राथमिक शिक्षा की समीक्षा बैठके लेनी शुरू की। उस दौरान मैने नगर क्षेत्र की प्राथमिक शिक्षा के प्रति विपरीत परिस्थतियों के बावजूद अपने अथक प्रयास से बहुत दूर स्थित ढेवा जाति (कूडा बीनने वाले लोग) के पास दिन-रात बैठक करके वहाँ के 67 बच्चों का प्रवेश अपने विद्यालय में कराया और लगातार विद्यालय में उनकी उपस्थति सुनिश्चित की।

यह सुनकर जिलाधिकारी महोदय एक माह में चार बार मेरे विद्यालय में आये और हमारी मेहनत और लगन से प्रभावित होकर प्रशंसा करते हुए, उन्होंने हमें विद्यालय के बच्चों सहित अपने आवास पर दीवाली मनाने के लिये विशेष रूप से आमंत्रित किया। मेरे लिये जीवन का वो अविस्मरणीय क्षण था जहाँ उन्होंने प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में किये गये इस योगदान के लिये मंच पर खुले दिल से सराहना करते हुए मुझे सम्मानित किया। और जब वे बालदिवस मनाने मेरे विद्यालय में आये तो बच्चों के लिये ढेर सारे उपहार लेकर आये और मेरे आग्रह पर उन्होंने विशेष रुप से मिड डे मील खाकर मीडिया बंधुओं के सामने मेरी और मेरी मेहनत की जमकर प्रशंसा की और मेरा तभी से मुझे मेरा विद्यालय उच्च श्रेणी के विद्यालयों की सूची में खड़ा होता दिखाई देने लगा।

मित्रों मेरी योजना का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा, मेरा ड्रीम प्रोजेक्ट अभी बाकी था । जिसके लिए मैं बहुत समय से प्रयासरत था। क्योंकि मैंने कूड़ा बीनने वाले बच्चों के कुपोषित जीवन को अपनी आँखों से देखा और महसूस किया था। और मेरे जीवन का वह महत्वपूर्ण क्षण भी जल्दी ही आया जब मैने अपने बेहद अथक प्रयास से अपने नगर के एक समाजसेवी, किसान और उद्योगपति द्वारा अपने विद्यालय के

बच्चों के लिये रोजाना एक गिलास गरमागरम दूध की व्यवस्था की शुरूआत करायी। और अपने इस विद्यालय को प्रदेश में प्रथम स्थान लाकर खड़ा कर दिया। जहाँ सबसे पहले सबसे पहले ऐसी व्यवस्था लागू कर दी गयी। मित्रो इस प्रयास की सबसे महत्वपूर्ण बात ये थी कि दूध की सारी व्यवस्था उस समाजसेवी के घर से तैयार होकर आती थी। इस बेहद कठिन प्रयास की जहाँ जिलाधिकारी महोदय ने खुले दिल से प्रशंसा की तो वहीं इस प्रयास को मीडिया ने जबरदस्त कवरेज देकर इसकी सराहना की। इस दूध वितरण योजना के अथक प्रयास के लिये राष्ट्रीय स्तर के अंग्रेजी के एक अग्रणी समाचार पत्र हिन्दुस्तान टाइम्स ने मेरा साक्षात्कार लेकर उसे अपने समाचार पत्र में विशेष स्थान दिया। यही नहीं इस प्रयास के लिये विभिन्न प्रमुख समाचार चैनलों ने विद्यालय आकर मेरा साक्षात्कार लिया जिसे अलग-अलग विभिन्न प्रमुख राष्ट्रीय चैनलों पर प्रसारित किया गया। इस कार्य एवं शिक्षा के क्षेत्र मे इस अतुलनीय प्रयास के लिये मुझे शिक्षा विभाग की ओर से जनपद का सर्वोच्च शिक्षक चुना गया। इसके अलावा नगर चेयरमेन द्वारा भी मुझे बेसिक शिक्षा के क्षेत्र में विशेष प्रयास के लिये सम्मानित किया। साथ ही साथ हमारे शहर की विभिन्न अग्रणी संस्थाओं द्वारा भी भी सम्मानित किया गया।

मित्रो मेरे लिए गर्व की बात है कि जब इस प्रयास की गूजं उत्तर-प्रदेश शासन तक पहुँची तो शासन ने भी इसे कुपोषण के विरोध में जंग मानते हुए अगले सत्र से दूध को अपने मीनू में शामिल करते हुए प्रत्येक बुधवार को इसके वितरण को सुनिश्चित किया।

मेरे द्वारा शुरु की गयी इस योजना को और अधिक सम्मान तब मिला जब स्टार प्लस पर आयोजित श्री अमिताभ बच्चन जी के शो " आज की रात है जिन्दगी" में इस योजना को दिनाकं 10 जनवरी 2016 को प्रसारित किया गया। मित्रों मुझे गर्व है कि मेरे द्वारा शुरु की

गयी दूध वितरण योजना आज प्रदेश के सभी प्राथमिक और उच्च प्राथमिक विद्यालयों के मीनू मे प्रत्येक बुधवार को लागू है।

मित्रों जब मैं अपने प्रयासों को सार्थक करता हुआ आगे बड़ रहा था। तभी इसी बीच विभाग ने मेरी पदोन्नति प्रधानाध्यापक के पद पर करते हुए एक नये विद्यालय में मेरा स्थानान्तरण कर दिया गया। वहाँ भी विद्यालय केवल एक महिला शिक्षामित्र के भरोसे था और विद्यालय में नामांकन तकरीबन 90-100 के बीच था और वहाँ भी कठिन परिस्थितियाँ मुँह बाए खड़ी थी। इस नयी जिम्मेदारी को फिर से अपने कंधो पर लेकर मैंनेI वहाँ भी मैने घर - घर संपर्क करके और विभिन्न प्रकार के नामांकन कार्यक्रम चलाकर आज विद्यालय में बच्चों की संख्या को लगभग 350 के पास पहुँचा दिया है। आज मेरा नया विद्यालय भी विभिन्न प्रकार की सुविधाओं से युक्त है। आज मुझे फख्र है कि नगर की विभिन्न सामाजिक संस्थाएँ मेरे विद्यालय में अपने कार्यक्रम आयोजित करने में अपना सम्मान समझते हैं। अभी कुछ माह पूर्व ही इस विद्यालय के लिये किये गये प्रयासों के लिये नगर शिक्षा अधिकारी महोदय द्वारा सर्वश्रेष्ठ शिक्षक चुना गया है। मित्रों मेरा मानना है कि *शिक्षक को राष्ट्र निर्माता कहा जाता है परन्तु पहले ये भी आवश्यक है कि वह स्वयं का निर्माण करे।*
मेहनत करने वालों को प्रोत्साहित करने के लिए किसी प्रसिद्ध शायर ने भी क्या खूब कहा है--

"कौन कहता है आसमान में छेद नहीं हो सकता, एक पत्थर तो तबियत से उछालो यारों"

मित्रो अगर प्रयास लगन और मेहनत से किया जाये। तो सब कुछ सम्भव है।

मित्रो अपनी इस संघर्ष यात्रा में मै अपनी प्रशंसा वाले चित्र न भेजकर वो चित्र आपको भेज रहा हूँ जो यकीनन ये प्रदर्शित करने के लिये काफी है कि मैने शिक्षा को समाज से जोडते हुए विद्यालय और बच्चों के लिये बहुत सम्मान प्राप्त किया और भविष्य में भी मेरा ये प्रयास निरन्तर जारी रहेगा। आप सब की शुभकामनाओं और आशीर्वाद के साथ .....

नीरज गोयल (प्रधानाध्यापक), प्रा.वि.नं.-10 नगर क्षेत्र शामली, जनपद-शामली

मित्रो आप ने पढ़ा कि किस प्रकार प्रयासों की छोटी- छोटी बूँदों ने एक लहर पैदा करके दिखा दी। जो हम सबके लिए अनुकरणीय है। अतः मिशन संवाद की ओर से नीरज जी सहित समस्त विद्यालय परिवार को उज्ज्वल भविष्य की कामना के साथ बहुत- बहुत शुभकामनाएँ!

डॉ मनोज कुमार वार्ष्णेय सेनानी

शिक्षक मित्रों आज हम बेसिक शिक्षा की रत्नों खान से एक अनमोल रत्न सम्मानित शिक्षक भाई से आपका परिचय करा रहे हैं जो हम जैसे तमाम शिक्षक भाई बहिनों के लिए आदर्श, प्रेरणा और जागरूकता के स्रोत हो सकते हैं।

जिन्होंने अपनी लगनशीलता, सामुदायिक सहभागिता और प्रतिभा की दम से बेसिक शिक्षा विभाग की तमाम प्रतिकूल परिस्थितियों के बाबजूद शिक्षक धर्म के उस मानवीय पहलू को कर दिखाया जिसे हम बेसिक शिक्षा में स्वप्न भी कहते हैं।

वह अनमोल रत्न हैं--

डॉ० मनोज कुमार वार्ष्णेय जी
स. अ. पूर्व माध्यमिक विद्यालय गोठा, वजीरगंज, जनपद-बदायूँ से

जिनकी उपलब्धियों को आप नीचे दिये गये लिंक से देख सकते हैं।
https://m.facebook.com/story.php?story_fbid=1718628368414753&id=159822084712217 3

निम्नवत् पढ़ भी सकते हैं।

□□1-विद्यालय में उत्कृष्ट कार्य करने व सामुदायिक सहभागिता से विद्यालय का विकास करने हेतु विगत दिनों माननीय मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश द्वारा लखनऊ में सम्मानित किया गया।

□□2- बदायूँ जनपद के शिक्षकों के आदर्श और विभिन्न नवाचारों के उपयोग से नयी पहचान।

□□3-इको क्लब के रूप में उत्कृष्ट कार्य

□□4- विद्यालय में जेनरेटर, सममर्सिबल और कंप्यूटर शिक्षा -जैसे नवाचारी कदम उठायें हैं।

□□5- जनपद बदायूँ के शिक्षकों को शिक्षा के प्रति जागरूक करने का इस ध्येय वाक्य
''मेहनत ही सफलता की कुञ्जी है,,
के साथ जागरूकता अभियान जैसा उत्कृष्ट कार्य कर रहे हैं।

□□6-विद्यालय के भौतिक परिवेश को उत्तम बनाने का कार्य।

□□7-विद्यालय में विज्ञान प्रयोगशाला का विकास।

□□8- सुसज्जित कक्षा कक्षों के साथ सुन्दर और आकर्षक मीना मंच के लिए अलग कक्ष।

□□ 9- विद्यालय का दो गुना नामांकन, छात्र उपस्थिति व ठहराव में प्रभावशाली परिणाम प्राप्त किए।

□□10-लोहिया/ समग्र गाँवों के बेसिक के विद्यालयों को बेहतर बनाने में सहयोग करना।

□□11-विद्यालय में स्मार्ट क्लास द्वारा शिक्षण।

□□12 अपने व्यवहारिक और बौद्धिक कला कौशल से सामुदायिक सहभागिता के द्वारा विद्यालय को सात पंखे, वाटर प्यूरीफायर, साउंड सिस्टम, 5Kw का जनरेटर, 14 ट्री गार्ड, समाजसेवियों व ग्रामवासियों द्वारा प्राप्त करने तथा समरसेबिल ग्राम प्रधान द्वारा प्राप्त हो चुका है जबकि ब्लाक प्रमुख वजीरगंज के द्वारा वाउन्ड्री वाल व सी सी हेतु पाँच लाख रूपये का कार्य प्रस्तावित है।

ऐसी अनेकों हमारे सम्मानित शिक्षक भाई की उपलब्धियों का कांरवा अभी अनवरत जारी है।

डॉ जगदीश पाठक

मित्रो आज हम आपका परिचय योगीराज भगवान श्रीकृष्ण की बाल्यकालीन क्रीड़ा भूमि जनपद- मथुरा के बहुमुखी प्रतिभा के धनी डाॅ० जगदीश पाठक जी से करा रहे हैं। कहने को तो बेसिक शिक्षा का विद्यालय प्रत्येक गाँव में है लेकिन क्या सभी विद्यालय और शिक्षकों को एक जैसा सामाजिक सम्मान प्राप्त है? जबकि सभी शिक्षक और विद्यालय सरकार के एक जैसे मानकों के आधीन काम करते हैं। फिर ये अन्तर क्यों?

यह प्रश्न बहुत समय से प्रश्न बना हुआ था। जिसका उत्तर ब्रजक्षेत्र के गोकुल धाम के प्राथमिक विद्यालय और उनके प्रधानाध्यापक

जी की उस पहल से मिल गया। जिसके कारण आज इस विद्यालय को सम्मानित स्थान प्राप्त हो गया। आपके यहाँ हमें लिखा मिला कि--

"हर पत्थर में मूर्ति है---
आवश्यकता है काटने, छाँटने और संवारने के लिए मूर्तिकारों की कोशिश,,

जी हाँ मित्रो हमने विगत दिनों से अनमोल रत्नों के परिचय लिखते-लिखते यही पाया कि हर जगह एक ही समानता मिली। वह है "कोशिश,,

क्योंकि ---

कोशिश कर हल निकलेगा,
आज नहीं तो कल निकलेगा।
अर्जुन के तीर सा निशाना साध,
जमीन से भी जल निकलेगा।
मेहनत कर, पौधों को पानी दे,
बंजर जमीन से भी फल निकलेगा।
ताकत जुटा, हिम्मत को आग दे,
फौलाद का भी बल निकलेगा।
जिंदा रख, दिल में उम्मीदों को,
समन्दर से भी गंगा जल निकलेगा।
कोशिश जारी रख, कुछ कर गुजरने की,
आज थमा, थमा सा, वो भी चल निकलेगा।।

मित्रो बेसिक शिक्षा के लिए यह डाॅ० जगदीश पाठक जी द्वारा अपने विद्यालय में लिखा गया शब्द महामंत्र जैसा काम कर सकता है क्योंकि थमा, थमा सा चल निकलेगा।

तो आइये जानते हैं आपकी कोशिश का फल, आपके शब्दों में---
https://m.facebook.com/story.php?story_fbid=1733274236950166&id=159822084712217 3

मित्रो,

मेरे जनवरी- 2013 में आने से पूर्व विद्यालय काफी अस्त- ब्यस्त था। कक्षा- कक्षों में सामान ..कबाड़ ..आगनबाड़ी की पंजीरी आदि भरे हुए थे। हमने कोशिश कर सब व्यवस्थित किया। आगनबाड़ी को अतिरिक्त कक्ष में पहुँचाया। विद्यालय के लिए RO की व्यवस्था state bank of india से करायी।समरसेबिल की व्यवस्था एक NRI समाजसेवी भाई के सहयोग से की गयी। Projector की अपने पास से व्यवस्था की तथा Laptop अपने पास स्वयं का है। एक शुलभ काॅम्प्लेक्स मथुरा रिफाइनरी मथुरा के सहयोग से बनाया गया है जिसकी लागत 2.58 लाख रुपये है। विद्यालय को अलमारी, रैक, पानी की टंकी आदि ओरिएण्टल बैंक ऑफ़ कॉमर्स मथुरा के सहयोग से किया गया। जल्दी ही जुलाई में water cooler एक गुजरात के समाजसेवी से मिलने का आश्वासन मिला है। विद्यालय हेतु छात्रों के बैठने हेतु फर्नीचर की व्यवस्था CSR FUND से एक बड़े सरकारी corporation से होनी है। विद्यालय में cordless mike की व्यवस्था विद्यालय की अध्यापिका ने अपने बेटे के जन्मदिन पर gift में दान करके की। छात्र उपस्थिति बढ़ाने और बच्चों नियमित रखने हेतु प्रतिदिन समय से आने वाले छात्रों को parle g बिस्कुट और टॉफियाँ दे कर प्रोत्साहित किया जाता है। समय- समय पर स्टेशनरी व बैगों का समाज के सहयोग से वितरण कराया जाता है।

मित्रो आपने पढ़ा कि जो भी विद्यालय में आज आधुनिक और अतिरिक्त व्यवस्था हुई। वह कहीं न कहीं विद्यालय परिवार की कोशिश का प्रतिफल है।

इसलिए आप सब से भी निवेदन है कि कोशिश और कोशिश से शिक्षा एवं शिक्षक के हित और सम्मान की रक्षा के लिए आगे आयें और आगे बढ़े। क्योंकि आज बेसिक शिक्षा, समाज और राष्ट्र को आप के सहयोग की बेहद आवश्यकता है।

मैं डाॅ० जगदीश पाठक
प्रा० वि० गोकुल-प्रथम
वि० खण्ड- बल्देव
जनपद- मथुरा

मिशन संवाद की ओर से ऐसे कोशिश के धनी भाई डाॅ जगदीश जी को सहयोगी विद्यालय परिवार और सहयोग करने वाली सभी संस्थाओं को बहुत- बहुत शुभकामनाएँ!

अखलाक अहमद

मित्रो आज हम आपको बेसिक शिक्षा के अनमोल रत्नों के परिचय में एक ऐसे विद्यालय और उसके प्रधानाध्यापक से परिचय करा रहे हैं। जिन्होंने अपनी कर्तव्यनिष्ठा और सकारात्मक सोच से विद्यालय को और अपने सम्मान को उस ऊँचाईयों तक पहुँचाया जहाँ तक शायद हम जैसे आम शिक्षक अभी सोच भी नहीं पा रहे हैं। क्या हमने आपने अपने विद्यालय को ISO प्रणाम पत्र के लिए सोचा? क्या सीसीटीवी कैमरों से सुरक्षा का विचार मन में आया? क्या स्वयं अपने और बच्चों के लिए बायोमैट्रिक मशीन द्वारा उपस्थिति प्रमाणित करने के विषय में सोचा? अधिकतर हम जैसे शिक्षकों के उत्तर नहीं में ही होंगे।

तो आईये जानते हैं, पढ़ते हैं, समझते हैं और विचार करते हैं उस महापुरुष के सम्बन्ध में जिसने यह सब एक सरकारी और कलंकित

कही जाने वाली व्यवस्था को कैसे परिवर्तित कर दिखाया। उन्हीं के शब्दों में---'
https://m.facebook.com/story.php?story_fbid=1731663177111272&id=159822084712217 3

मित्रो,

मैं अख़लाक़ अहमद (प्र0 अ0) प्रा0 वि0 तितावी न0- प्रथम वि0 क्षे0- बघरा, जनपद- मुज़फ्फरनगर ,उ0प्र0 सितम्बर- 2013 को प्रा0 वि0 तितावी न0 1 वि0 क्षे0- बघरा, जनपद- मुजफ्फरनगर (उ0प्र) में हमने प्रधानाध्यापक के पद पर नियुक्ति पाई थी। उस समय विद्यालय में एक शि0 मि0 दो स0 अध्यापिकाएं नियुक्त थी और विद्यालय में 123 बच्चे नामांकित थे। जिनमें से 35 से 50 के मध्य उपस्थिति रहती थी। विद्यालय परिसर सहित कक्षा- कक्षों में फर्श नहीं था। शौचलाय भी खंडहर बना था। विद्यालय परिसर में कोई फूल फुलवारी का पौधा भी नहीं था। बच्चों सहित शिक्षकों की उपस्थिति अनियमित थी। शिक्षण स्तर निम्न था। ऐसी व्यवस्था को देखकर हमें अपने सारे सपने ध्वस्त नजर आने लगे।_____

लेकिन काफी विचार विमर्श के पश्चात हमने चैलेन्ज मानकर लक्ष्य निर्धारित कर कार्य प्रारम्भ किया गया। बस फिर क्या था?

"*अकेला ही चला था मंज़िले जानिब।।
लोग मिलते गए और कारवां बनता गया।।*,,

01. सर्वप्रथम डी0 पी0 आर0 ओ0 ग्राम पंचायत सचिव व ग्राम प्रधान के सहयोग से कमरों,बरामदा, कार्यालय, विद्यालय परिसर में आर सी सी फर्श लगवाया गया जिसमें लगभग 8.5 लाख रुपये का खर्च आया।

□02. लगभग 38 ट्राली मिट्टी डलवाकर भराव के पश्चात प्रार्थना सभा का स्थल का निर्माण कराया गया।

□03.जीर्णशीर्ण शौचालय का पुनर्निर्माण अपने निजी खर्च पर करवाकर उसमें टाईलस, यूरिनल और वाशबेसिन आदि लगवाई गयी।

□04.विद्यालय का मुख्य द्वार बनवाया गया और टूटी-फुटी बाउड्रीवाल का पुनर्निर्माण 14 वें वित्त से करवाया गया।

□05.कार्ययोजना अनुसार तत्कालीन आदर के योग्य जिलाधिकारी श्री कौशल राज़ शर्मा जी से मिलकर 02KW का सोलर सिस्टम (लागत4.60लाख रूपये)स्वीकृत कराया गया।

□06.अध्यापकों की उपस्थिति सुनिश्चित करने के लिए बायोमेट्रिक अटेंडेंस डिवाइस लगवायी गयी।

□07.समाजसेवी संस्था अभिनव NGO से समन्वय स्थापित कर सी सी टी वीं कैमरे लगवाये गए।

□08.अभिनव सस्था द्वारा ही विद्यालय परिसर में वाटर कूलर (फ्रीज़) विद प्यूरीफायर लगवाया गया।

□09.जिलाधिकारी महोदय से प्रार्थना कर दो हैण्डपम्प जलनिगम से लगवाये गए।

□10.जिला अधिकारी महोदय के सहयोग से मुख्य द्वार के सामने मैन रोड बनवाया गया (लागत 3.5लाख रूपये)।

□11. विद्यालय परिसर में अपने निजी व्यय पर फूल-फुलवारी आदि लगवाई गयी और अपने घर के जकात व दान के पैसों से सबमर्सिबल लगवाया गया। जिससे पौधों को पानी लगाया जाता है।

□12.अपने निजी प्रयास और मित्रों के सहयोग से विद्यालय में पुस्तकालय का निर्माण किया गया। पुस्तकालय में लगभग 2500 ज्ञानवर्धक किताबें मौजूद है ।

□13.अपनी ही सेलरी से एक एम्प्लीफायर विद् कॉर्डलेस माइक सिस्टम खरीदा गया जो प्रार्थना सभा के साथ साथ सांस्कृतिक कार्यक्रमों में काम आता है।

□14. प्रत्येक क्लास के लिए डायस टेबुल निजी व्यय पर बनवाये गए।

□15. NGO द्वारा किचन में टाइल्स लगवाई गयी और कक्षा 01 में फर्नीचर व् 06 पंखे उपलब्ध करवाये गए। फिटिंग व् अन्य रखरखाव शिक्षको ने आपसी सहयोग से पूर्ण किया।

□16. NGO के सहयोग से बच्चों का एक शैक्षिक भ्रमण देहली ले जाया गया जहाँ पर बच्चों ने मेट्रो ट्रेन की यात्रा, जामामस्जिद, गुरद्वारा, लालकिला, सहित वहाँ की ट्रैफिक व्यवस्था का अवलोकन किया।

□17.शायद भारत का पहला ISO सर्टिफाइड परिषदीय प्रा0 वि0 है।

□18.बाल दिवस, शिक्षक दिवस, राष्ट्रीय पर्वो सहित ईद, दीपावली, होली जैसे त्योहारों के साथ- साथ बच्चों का जन्मदिन आदि मनाये जाते है।

□19.बच्चों को प्रति दिन सामान्य ज्ञान के प्रश्न, अंग्रेजी कन्वर्सेशन, पोयम पहाड़े काँटिंग आदि प्रार्थना सभा व छुट्टी से पूर्व कराए जाते है। प्रार्थना सभा में इसके अलावा प्रार्थना हिंदी, उर्दू और अंग्रेज़ी में करायी जाती है।

□20.उपस्थिति का प्रतिशत व ठहराव के लिए प्रार्थना सभा में अनुपस्थित बालक के अभिभावक को फोन किया जाता है रेस्पान्स न मिलने पर उसके घर पहुंच कर सयकोलोजिकल समझाया जाता है। जिससे विद्यालय में बच्चों की उपस्थिति 96% से 98% तक रहती है।

□21.मुस्लिम समाज के तथाकथित धर्म गुरु(मौलवी)के बच्चों का भी नामांकन किया गया है। जिससे अब विरोध खत्म हो गया, वरना वही समय स्कूल का होता था और वही समय मस्जिद मदरसे का। इससे सभी समाज के बच्चे आधुनिक शिक्षा से जुड़ कर पढ़ रहे हैं।

□22.नामांकन के समय तीन फोटो बच्चे के तीन फोटो माता के और तीन फोटो पिता के लेकर एक आईडी और फॉर्म भरवाया जाता है।

□23.स्कूल वर्क और होम वर्क पर स्टार दिए जाते है। मासिक, त्रैमासिक, अर्धवार्षिक और वार्षिक स्टार काउंट कर फर्स्ट सेकैण्ड थर्ड को पुरस्कृत किया जाता है।

□ 24. विद्यालय में गुणवत्ता पूर्ण शिक्षण के लिए कम्प्यूटर सहित टी एल एम का उपयोग किया जाता है। गतिविधि आधारित शिक्षण को वरीयता दी जाती है। कमजोर बच्चों को अन्य बच्चों के बराबर अधिगम के लिए अलग से उपचारात्मक शिक्षण किया जाता है

□25.लगातार उपस्थित रहने वाले स्वच्छ बच्चों को भी पुरस्कृत किया जाता है।

□ 26. नए सत्र से बच्चों का बैंक प्रारम्भ किया जायेगा जिससे बच्चों में बचत की भावना उतपन्न हो सकेगी।

□27.प्रति दिन प्रार्थना सभा में एक सामान्य ज्ञान का प्रश्न और एक अंग्रेजी का शब्द मीनिंग सहित बताया जाता है और छुट्टी के समय पुनः पूछा जाता है।ये सब नोटिस बोर्ड पर भी लिख कर छोड़ा जाता है जिससे बालक भूलने पर पुनः देख सके। □28.विद्यालय परिसर में यदि कोई पेड़ का पत्ता कागज पड़ा है तो बच्चे उसे उठा कर डस्टबिन में डालेंगे ऐसी आदत विकसित की गयी है जिससे विद्यालय तो साफ रहेगा ही साथ ही बच्चे स्वछता की भावना जाग्रत होती है।

□29.शिक्षण कार्य समय सारिणी के अनुसार प्रत्येक विषय अध्यापक को दिनाँक की स्टेम्प दी हुई है होमवर्क या स्कूल वर्क देते और चेक करते समय स्टेम्प से डेट अंकित स्वयं या क्लास मोनिटर से करवाएगा ।

□ 30.पौधो की देखभाल हेतु बच्चों के ग्रुप बनाकर जिम्मेदारी सौपी गयी है।

□31. बच्चों का साप्ताहिक अख़बार निकलाने की योजना जुलाई माह से है।

इस प्रकार आज आप सब की दुआओं व सहयोग से विद्यालय में बच्चों के प्रवेश के लिए कान्वेंट स्कूलों की तरह मारा - मारी और सिफारिश आती हैं। नामांकन- 201 तक पहुँच चुका है। प्रवेश के लिए तितावी सहित निकटवर्ती गाँव धनसनी, नसीरपुर, लखान और जसोई तक के प्राइवेट स्कूलों के बच्चे विद्यालय में नामांकित हैं। इस सत्र में अब तक 62 छात्रों का नामांकन हो चुका है। जिनमें 42 बच्चे प्राइवेट स्कूलों को छोड़ कर आये हैं इसलिए प्राइवेट स्कूलों के संचालकों में हड़कम्प के आपका ये विद्यालय सभी के लिए चर्चा का विषय बना हुआ है।

हमारा मानना है कि---

"विद्यालय और बच्चे ही हम सब का अस्तित्व है जिन्हें बचाने के हम सब आगे बढ़ें,,
धन्यवाद

बेसिक शिक्षा में परिवर्तन की लहर के ध्वज वाहक और सम्मान के रक्षक भाई अख़लाक अहमद जी को उनके सहयोगी विद्यालय परिवार सहित अनन्त ऊँचाईयों तक सम्मानित होने की आकांक्षा के साथ मिशन संवाद की ओर से बहुत - बहुत शुभकामनाएँ!

डॉ सर्वेष्ट मिश्र

मित्रो आज हम बेसिक शिक्षा के अनमोल रत्नों से परिचय के क्रम में जनपद- बस्ती के अनमोल रत्न से परिचय करा रहे हैं। आपने अपनी लगन और सकारात्मक सोच से एक सामान्य विद्यालय को विशिष्ट विद्यालय बना कर दिखा दिया कि---

"*श्रम कभी विफल नहीं होता*,,

जहाँ एक ओर बेसिक शिक्षा में मेहमान शिक्षक भी है जो बेसिक शिक्षा के जहाज को डुबाने के लिए अपने व्यक्तिगत स्वार्थों के लिए

भ्रष्ट व्यवस्था के सहयोगी बनकर अपने प्रयासों को सफल बनाने के लिए सदैव सम्मान सहित उतावले रहते हैं।

वही हमारे बहुत से अनमोल रत्न और गुमनाम शिक्षक भाई/ बहिन बेसिक शिक्षा एवं शिक्षकों के हित और सम्मान की रक्षा के लिए बिना किसी स्वार्थ के अपने वेतन का धन और अपने बच्चों का समय भी व्यय करने में कोई दुःख का एहसास नहीं करते हैं। हम ऐसे महान शिक्षकों को मिशन संवाद की ओर से नमन करते हैं।

तो आईये पढ़ते हैं ऐसे ही अनमोल रत्न की कहानी उनके शब्दों में---

https://m.facebook.com/story.php?story_fbid=1728065107471079&id=159822084712217 3

सम्मानित मित्रों,

मैं डॉ० सर्वेष्ट मिश्र, सहायक अध्यापक, पूर्व माध्यमिक विद्यालय, परसा जागीर, बस्ती सदर, जिला- बस्ती से।
मेरी पोस्टिंग- 2011 में इस विद्यालय पर हुई थी। उस समय स्कूल सामान्य स्कूल की तरह था। कुल चार शिक्षक थे। दो साल के भीतर के भीतर दो साथी शिक्षक अन्यत्र चले गए। प्रभारी प्रधानाध्यापक रिटायर हो गए। अब बचा मैं अकेला। यही से हमने अपने प्रयासों को परिणाम तक पहुँचाने का प्रयास शुरू कर दिया। ऐसे में अपना साथ देने के लिए हमने बी० एस० ए० सर से निवेदन कर अपने पुराने सहयोगी शिक्षक श्री के० के० पाण्डेय को अपने स्कूल पर अटैच करवाया। स्कूल के प्रभारी प्रधानाध्यापक रहते हुए हमने विद्यालय में अपने नवाचार पर कार्य करना शुरू किया। सबसे पहले स्कूल की साज- सज्जा दुरुस्त करने और बच्चों को बेहतर व आधुनिक सुविधाओं से लैश करने का प्रयास शुरू किया। जनपद में पहली बार हमने अपने स्कूल के सभी

बच्चों को बेहतरीन ड्रेस के साथ ही टाई, बेल्ट और प्लास्टिक आईडी कार्ड दिया। इसके बाद स्कूल की दिनचर्या पर ध्यान दिया। हर दिन के लिये अलग- अलग प्रार्थना, योग, खेल कूद, पीटी बच्चों की नियमित दिनचर्या में शामिल किया। सभी बच्चों को मध्यान्ह भोजन करने के हमने एक जैसा स्टील के प्लेट, गिलास व अन्य वर्तन अपने व्यक्तिगत मित्रों के सहयोग से खरीदा। मित्रों के ही सहयोग से बच्चों को खेलने के लिए बैट, बैडमिंटन, फुटबॉल, वालीबॉल, कैरम बोर्ड, चैस, लूडो और अन्य कई खेल सामग्रियाँ खरीदी। इससे न केवल बच्चों का प्रवेश बढ़ा बल्कि वे स्कूल में रुकने लगे और उन्हें पढाई में मजा आने लगा। बच्चों को शत प्रतिशत ड्रेस में और समय से उपस्थिति को हमने अपना लक्ष्य बनाया और शैक्षिक गुणवत्ता बढ़ने के लिए काम करने लगे। स्कूल में मीना रेडियो और अपने लैपटॉप से कंप्यूटर शिक्षा भी शरू की। जिसका परिणाम यह हुआ कि हमारे स्कूल के छात्र सुहैल अहमद को स्टेट लेवल पर मीना रत्न अवार्ड से उसे तथा हमें श्रीमती डिम्पल यादव और यूनिसेफ के अधिकारियों ने लखनऊ बुलाकर सम्मानित किया। 2013 में प्रदेश सरकार द्वारा चलाई गयी आदर्श शिक्षक चयन योजना में हमें आदर्श शिक्षक के रूप में चुना गया। बच्चों की उपस्थित शत प्रतिशत रखने, उन्हें साफ सुथरा रखने एवम् उनमें और बेहतर करने की प्रतिस्पर्धा बढ़ाने हेतु हमने हर 3 महीने में हर क्लास से 10, 10 बच्चों को स्टेसनरी आदि देकर सम्मानित करने की योजना बनायीं। स्कूल के परिसर को आकर्षक बनाने में सामाजिक सहयोग मिला तो परिसर खूबसूरत बन गया। स्कूल की दीवारों पर फ्लेक्स एवं पेंटिंग से और आकर्षकक बनाया। समय- समय पर बच्चों को भ्रमण पर ले गये। एक बार साइंस एक्सप्रेस का भ्रमण कराया। ठंढी में सभी बच्चों को अपने एक मित्र के संगठन से स्वेटर दिलाया। इधर अगस्त- 2015 में हमारे स्कूल में हेड मिस्ट्रेस श्रीमती उर्मिला मिश्रा और सहायक शिक्षिका प्रीती श्रीवास्तव की पोस्टिंग हो गयी। जिससे हमारे इन प्रयासों को और

गति मिली। नई प्रधानाध्यापिका और पूरी टीम के सहयोग से बच्चों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए स्कूल परिसर की खाली पड़ी जमीं पर सब्जियों की खेती शुरू हुई। रसोईया राम चरण, निर्मला और बच्चों के सहयोग से उत्पादित सब्जिया जैसे- गोभी, टमाटर, बैगन, भिन्डी, लौकी, प्याज खासकर मक्के का रिकार्ड उत्पादन किया गया। जिसका बच्चों के साथ शिक्षकों और अन्य स्टाफ ने आनन्द लिया। हमारे उस फसल को देखने बीएसए सर के अलावा दूसरे विभाग के अधिकारी भी आये। सबने हम सबकी तारीफ की। हमारी टीम की मेहनत का परिणाम रहा कि हमारे बच्चों ने इस साल गेम्स में ब्लाक और ज़िला स्तर की विभिन्न प्रतियोगिताओं में टॉप करते हुए स्टेट लेवल तक खेले। हमारे कार्यों और गतिविधियों को जिले के सभी प्रमुख समाचार पत्रों और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ने पूरा सहयोग किया। सोसल मीडिया पर भी अन्य साथियों के मनोबल बढाते रहने के कारण, हमेशा कुछ नया और बेहतर करने की प्रेरणा मिलती रही। जिससे आज हमारा स्कूल जिले ही नही वरन प्रदेश स्तर के स्कूलो में शुमार है। इस मेहनत के परिणाम स्वरूप हमें सांसद माननीय आलोक तिवारी, ए० एन० डी० यूनीवर्सिटी के बी० सी० श्री अख्तर हबीब, डी० एम० श्री अनिल कुमार एवं कई स्वयंसेवी संस्थाओं ने सम्मानित कर उत्साहवर्धन किया। इसके अतिरिक्त अभी हाल ही में हमारे स्कूल का चयन माननीय प्रधानमंत्री विद्यांजलि योजना के लिए भी नामित किया है।

मिशन संवाद की ओर से डा॰ सर्वेष्ट मिश्र और उनकी सहयोगी टीम को बहुत बहुत शुभकामनाएँ!

डॉ खुर्शीद हसन

मित्रो आज हम आपको एक ऐसे शिक्षक भाई से परिचित करा रहे हैं जो विज्ञान की शिक्षा को सतत मूर्त रूप देने में लगे हैं। आपने अपने हाथों से अनेकों विज्ञान के मा◌ॅडल बना कर तथा बच्चों को प्रैक्टिकली रूप में सहभागिता के साथ पढ़ाने का विशिष्ट नवाचारी प्रयोग अपनी मेहनत, लगन और सकारात्मक सोच के द्वारा साकार कर दिखाया। अभी तक आपके द्वारा अपने विद्यालय और ब्लॉक स्तर पर विज्ञान शिक्षक और सन्दर्भदाता के रूप में बच्चों और शिक्षकों को लाभान्वित किया है लेकिन अब हमारा प्रयास होगा कि आप के अद्भुत मा◌ॅडल और प्रयोगों को आप सब तक समय समय पर पहुँचाता रहूँ। इसके लिए हमने आपसे निवेदन भी किया है।

आप देखने में तो सरल है लेकिन अलग अलग दायित्वों को बखूबी निभाने में भी बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं। आप अपने ब्लॉक से सम्मानित महामंत्री के साथ एक सक्रिय विज्ञान शिक्षक भी हैं। जो आज के समय में दुर्लभ काम है। आपके कई प्रयोग सबसे अलग पहचान रखते हैं। जिसमें एक है आलू के द्वारा विद्युत धारा का उत्पादन करने का सरलतम प्रयोग।
https://m.facebook.com/story.php?story_fbid=1721616138115976&id=159822084712217 3

आप हैं ऐसे प्रतिभा सम्पन्न शिक्षक भाई--

डाॅ० खुर्शीद हसन
पूर्व माध्यमिक विद्यालय हस्तिनापुर
ब्लॉक- बड़ागाँव
जनपद- झाँसी

अतः हम सब और मिशन संवाद की ओर से शिक्षा एवं शिक्षक के हित और सम्मान की रक्षा के लिए समर्पित भाई डॉ० खुर्शीद हसन जी एवं उनके विद्यालय परिवार को सतत प्रगति और उज्ज्वल भविष्य की कामना के साथ बहुत बहुत शुभकामनाएं!

ज्योति कुमारी

मित्रो आज हम आपको नवाचारियों की धरती जनपद- भदोही से एक शिक्षिका बहिन का परिचय करा रहे हैं। जिन्होंने अगस्त- 2015 से अपनी सकारात्मक सोच और ऊर्जा से शून्य की ओर निहारते विद्यालय को विकास की गिनती गिनना सिखा दिया। अपने कुशल नेतृत्व और काम करने की क्षमता से विद्यालय को जनपद से लेकर मण्डल तक पहचान दिलाने में कामयाबी प्राप्त की है।

आइये सुनते हैं विद्यालय के विकास की कहानी बहिन जी के शब्दों में- -'''

https://m.facebook.com/story.php?story_fbid=1726260250984898&id=1598220847122173

 जब अगस्त में मैंने पू मा वि कोइलरा का कार्यभार ग्रहण किया था। तो उस समय बच्चों की उपस्थिति 110 बच्चों में से 40-50 के बीच थी वह भी सही संख्या नहीं थी। हमने कोशिश शुरू की तो उपस्थिति

बढ़कर 60-70 के बीच वास्तविक हो गई। कई विषय जैसे- गणित, विज्ञान, संस्कृत की शुरुआत भी नहीं हुई थी। जबकि पर्याप्त स्टाफ पहले से ही था। जब प्रयास शुरू हुए और बच्चों को जब पठन- पाठन का माहौल मिलने लगा तो वह नियमित विद्यालय आने लगे। बच्चों को सिर्फ एक कमरे में फर्नीचर था मैंने पुराने फर्नीचरों को मरम्मत कराके बैठने की व्यवस्था कराई।

कंप्यूटर का cpu ख़राब था। मैंने अपना पुराना cpu लगा कर कंप्यूटर की क्लास शुरू कराई। सिलाई मशीन की मरम्मत करके बच्चियों को सिलाई का प्रशिक्षण देना आरम्भ किया। इन सब कार्यों के लिए मुझे कहीं से कोई धन नहीं मिला विद्यालय अनुदान तथा स्वयं से मैंने सारा कार्य कराया। छात्रों की संख्या पिछले सत्र में 110 थी जो अभी 114 हो गई है नवीन नामांकन के बाद। उनकी उपस्थिति को बढ़ाने के लिए हर माह कक्षावार ज्यादा उपस्थिति वाले बच्चों को पुरस्कृत और सम्मानित करना शुरू किया। जिसका बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा। हमारा विद्यालय पूरी न्याय पंचायत में सर्वश्रेष्ठ विद्यालय चुना गया है और विद्यालय की श्रेणी ब से अ हो गयी है। बच्चों को पढाई के साथ साथ सांस्कृतिक तथा खेलकूद में हिस्सा लेने में सहयोग किया जिसके फलस्वरुप जिला क्रीड़ा प्रतियोगिता में सांस्कृतिक कार्यक्रम में बालिकाओं को प्रथम स्थान और मंडल स्तर पर डिस्कस में बालिका को रजत पदक प्राप्त हुआ। अपने खर्च से मैंने बच्चों की तैयारी करवाई और प्रतिभाग कराया। इन सब सफल कार्यो के संचालन से ब्लाक स्तर पर आदर्श शिक्षक के रूप में चयन किया गया। विद्यालय को न्याय पंचायत स्तर और ब्लाक स्तर पर सर्वश्रेष्ठ ups का पुरस्कार मिला। विद्यालय के विज्ञान मॉडल को ब्लाक स्तर पर सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार तथा क्रीड़ा प्रतियोगिता में सहभागिता के लिए प्रशस्ति पत्र मिला। ब्लॉक स्तर से इस वर्ष के वीरांगना रानी लक्ष्मीबाई पुरस्कार के लिए चयन किया गया।

ब्लाक पर जो भी कार्यक्रम होते हैं विगत 3-4 माह से प्रबंधन की जिम्मेदारी मेरी होती है।

बच्चों के लिए समय समय पर मैं कुछ नया करती हूँ जिससे उनका विद्यालय के प्रति आकर्षण बना रहे जैसे परिचय पत्र वितरण सर्दी में ऊनी टोपी का वितरण, विदाई समारोह, नामांकन मेला, बाल मेला आदि हर माह कुछ नया होता है। इन सब कार्यो में प्रमुख रूप से मेरे संकुल प्रभारी मेरे बड़े भाई श्री विनोद जी का पूर्ण सहयोग और मार्गदर्शन प्राप्त रहता है। तथा बी ई ओ द्वारा भी सदैव प्रोत्साहन मिलता है। स्टाफ में सभी लोग सहयोग करते हैं।

हम आप सब से भी निवेदन करना चाहती हूँ--'

"कि ये जो विद्यालय के बच्चे है। 6 घंटे के लिए तो सिर्फ हमारे होते हैं। अगर हम अपने अंदर ये सोच लाएं कि ऐसा क्या करें की हमारा बच्चा हर तरह से काबिल हो। उसके लिए हर संभव प्रयास करें तो निश्चित रूप से सफलता मिलेगी। अपने हिस्से का कार्य ईमानदारी से करे तो अवश्य सफल होंगे और सुदृढ़ राष्ट्र का निर्माण कर पाएंगे।
धन्यवाद

ज्योति कुमारी
पूर्व माध्यमिक विद्यालय कोइलरा
वि खण्ड- औराई
जनपद- भदोही।

मिशन संवाद की ओर न्याय पंचायत समन्वयक सहित सम्पूर्ण विद्यालय परिवार को शिक्षा एवं शिक्षक के हित और सम्मान की रक्षा के लिए बहुत बहुत शुभकामनाएँ!

विभा शुक्ला

मित्रो आज हम आपका परिचय मिशन शिक्षण संवाद के माध्यम से जनपद- जौनपुर से बेसिक शिक्षा की अनमोल रत्न वन्दनीय बहन डॉ विभा शुक्ला जी से करा रहे हैं। जिन्होंने अपनी सकारात्मक सोच की शक्ति से बेसिक शिक्षा की विषम परिस्थितियों के कारण विद्यालय की मुरझाई व्यवस्था को बच्चों की खुशियों और अभिभावकों के विश्वास के साथ पुनः हरा भरा कर हम सब को अपने कर्तव्य की शक्ति का संदेश दिया।

तो आइये जानते हैं कि आपने कैसे बेसिक शिक्षा के एक विद्यालय को विश्वास का प्रतीक बनाया:--
https://m.facebook.com/story.php?story_fbid=1808089902801932&id=159822084712217 3

सर जी मेरी नियुक्ति विशिष्ट बी० टी० सी० के तहत सन्- 1999 में सहायक अध्यापक के पद पर हुई थी। अब हमारी जिम्मेदारी थी कि बच्चों को कैसे अच्छी शिक्षा दी जाये, बच्चों को कैसे विद्यालय से जोड़ा रखा जाय तथा शासन से प्राप्त सुविधाओं को उन तक कैसे पहुँचाया जाय। ऐसे कौन से कारण है जिससे अभिभावक अपने बच्चों का नामांकन प्राइवेट स्कूल में कराना चाहते हैं।

इन सब समस्याओं के लिए के समाधान के लिए हमने अपने सहयोगी विद्यालय परिवार के साथ बैठक कर कारण और अनके निवारण पर विचार करते रहे।

इसके साथ ही हमने बच्चों को पढ़ाने के लिए उनके मानसिक स्तर के अनुसार शिक्षा देना शुरू किया और नये- नये शिक्षण के तरीकों का उनके ऊपर प्रयोग करना शुरू किया। इसी के साथ बच्चों के अभिभावकों को भी बैठक कर शिक्षा और शिक्षण के साथ अपने द्वारा किये जा रहे बच्चों की बेहतर शिक्षा के लिए प्रयासों से अवगत कराया। उनको बताया कि बच्चे विद्यालय आप समय से भेजें तथा होमवर्क आदि में बच्चों का सहयोग करें हम सब मिल कर प्राइवेट स्कूल से अच्छी शिक्षा और सुविधा आपके बच्चों को देने का प्रयास करेंगे। इन्हीं सब प्रयासों और कोशिशों से धीरे- धीरे अभिभावक विद्यालय की शिक्षण व्यवस्था से संतुष्टि और विश्वास के साथ जुड़ते गये।

इसी बीच 2011 में हमारा प्रमोशन UPS सिंगरामऊ में सहायक अध्यापक के पद पर हो गया। लेकिन इससे विद्यालय का स्टाफ, बच्चे और अभिभावक कोई भी खुश नहीं था। सभी दुखी हुए जिससे हमारा भी स्कूल छोड़ कर जाने का मन नहीं कर रहा था। मन बहुत विचलित हो रहा था। लेकिन बेबस और दुखी मन से हमने 24 जनवरी- 2011 अपने नये विद्यालय पर कार्यभार ग्रहण कर लिया। लेकिन मन में प्राथमिक विद्यालय पुरानी बाज़ार के बच्चों के प्रति आकर्षक और वायदा

सोचकर अपने पुराने विद्यालय वापस जाने की कोशिक शुरू कर दी। क्योंकि वहाँ प्रधानाध्यापक का पद भी रिक्त था। हमारी कोशिश कामयाब हुई। हमारा संशोधन प्रा वि पुरानी बाज़ार के लिए प्रधानाध्यापक पद पर कर दिया। अब हम सब बहुत खुश थे लेकिन इसी के साथ हमारी जिम्मेदारी और बढ़ गयी।

अब विद्यालय में शिक्षण के साथ परिवेश का सौन्दरीकरण करना हमारा जुनून बन गया था। इसके लिए मैदान का समतलीकरण कराया। विद्यालय प्रांगण में थालों का निर्माण कर वृक्षारोपड़ कराया। विद्युतीकरण कराया। नये ढंग से विद्यालय भवन का पुताई और पेन्टिंग कराई। सभी कक्षा- कक्षों को आवश्यक टी० एल० एम० से सुसज्जित किया। विद्यालय में प्रार्थना और सांस्कृतिक कार्यक्रमों हेतु माइक, पी० टी० हेतु ड्रम, खेल- कूद हेतु समस्त सामग्री, मिड डे मील में प्लेट- ग्लास की पर्याप्त व्यवस्था है। जिसमें विद्यालय के स्टाफ का पूर्ण सहयोग है। इसी के साथ अच्छी गुणवत्तायुक्त शिक्षा को पूरा करना शुरू किया। इन सभी कार्यों को पूरा करने में समुदाय के लोगों के साथ - साथ अभिभावकों, विद्यालय स्टाफ, बी आर सी, एन पी आर सी आदि के साथ ग्राम प्रधान जी का अच्छा सहयोग मिला। विद्यालय की शैक्षिक गुणवत्ता से संतुष्ट होकर बच्चों के अभिभावक विद्यालय से जुड़ते गये जिससे वर्ष- प्रतिवर्ष बच्चों का नामांकन बढ़ता गया। हमें गर्व होता है जब कॉन्वेन्ट स्कूल के बच्चे हमारे स्कूल में एडमीशन लेते हैं।

सत्र- 2015-16 में BEO बदलापुर के द्वारा विद्यालय को ब्लॉक का आदर्श विद्यालय घोषित किया गया। जिलाधिकारी जौनपुर की एक पहल थी कि बेसिक स्कूल को मॉडल स्कूल बना कर शैक्षिक गुणवत्ता को सुधारा जाए। ऐसे में विद्यालय को अप्रेल-2016 में मॉडल स्कूल का भी दर्जा मिला। इस समय विद्यालय में 330 बच्चे विद्यालय में

नामांकित होकर अच्छी शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। इसके लिए समस्त अभिभावकों, शिक्षकों बदलापुर, सेवानिवृत्त शिक्षक और समुदाय का प्रोत्साहन मिलता रहा। अन्त में धन्यवाद ज्ञापित करते हुए सहयोगी मो० जमील अहमद, प्रगति बहन जी, दीपिका बहन जी, अरविन्द सर, शोभावती बहन जी, के साथ- साथ शिक्षा प्रेरक रानी सिंह एवं साहिन कौसर जिनके कारण विद्यालय प्रगति पथ पर है और सबसे सबसे अच्छा सहयोग देने के लिए अध्यक्ष smc मो० सिराज अहमद बधाई के पात्र हैं। विद्यालय को आगे बढ़ाने में BEO महोदय श्री अशोक यादव, श्री आशीष पाण्डेय आदि का भी अतुलनीय सहयोग रहा। आगे आप सबके सहयोग की आकांक्षा के साथ---

डॉ विभा शुक्ला प्र० अ०
प्रा० वि० पुरानी बाज़ार
बदलापुर, जौनपुर

मित्रो आपने देखा कि एक बहन ने किस प्रकार शिक्षक के शिक्षण कौशल से सभी का सहयोग लेकर विद्यालय को आदर्श स्थिति तक पहुँचा दिया। मिशन शिक्षण संवाद की ओर से बहनजी और सहयोगी विद्यालय परिवार को कोटि कोटि नमन के साथ विद्यालय की उज्जवल भविष्य की कामना के साथ बहुत बहुत शुभकामनाएँ!

संयोगिता

मित्रो आज हम आपका परिचय मिशन शिक्षण संवाद के माध्यम से जनपद- बिजनौर के प्रा० वि० पोट्टा और उसकी अनमोल रत्न शिक्षिका बहन संयोगिता जी से करा रहे हैं। जिन्होंने के अपने विद्यालय को अपनी मेहनत और सकारात्मक सोच कीे शक्ति से गुणवत्तापूर्ण शिक्षण गतिविधियों का केन्द्र बना दिया। आपने विद्यालय को टी एल एम की विविधता से शिक्षण, अधिगम के अनुकूल एवं बच्चों के लिए आकर्षक और हम सबके के लिए अनुकरणीय बना दिया। यही नहीं अधिगम के अतिरिक्त परिवेशीय व्यवस्था में चार चाँद लगा दिये। जिससे आज हम सम्पूर्ण रूप से कह सकते हैं आदर्श विद्यालय प्रा वि पोट्टा।

तो आइये देखते और जानते हैं कि बहन जी ने किस प्रकार अपने विद्यालय का प्रबंधन करते हुए आदर्श विद्यालय बनाया:---

https://m.facebook.com/story.php?story_fbid=1815144582096464&id=159822084712217 3

सर मैं संयोगिता प्राथमिक विद्यालय पौटा में 2014 मे प्राधानाध्यापिका के पद पर नियुक्त हुई थी। .उस समय विद्यालय में न कोई tlm था न ही बच्चों में पढ़ने की रुचि ...सर मैने सर्वप्रथम विद्यालय के वातावरण को स्वच्छ और सुन्दर बनाने पर ध्यान दिया। जिससे आज मेरे विद्यालय का चयन जनपद में चल रही ज्योतिर्गमय योजना के अन्तर्गत आर्दश विद्यालय के रूप मे किया गया है..।

पहले मेरे विद्यालय के बोर्ड इतने खराब थे जो लिखते ही टूटने वाले थे। आज हम लिखने के लिए whiteboard का प्रयोग करते हैं ।

हम विद्यालय में दो शिक्षिका कार्यरत है छात्र संख्या 81 है.. जो प्रत्येक वर्ष बढ़ रही हैं । हम बच्चों को प्रतिदिन अपना सबसे बेहतर देने का प्रयास करते है। आज हमारे विद्यालय के बच्चे अपने विद्यालय के लिए गर्व का अनुभव करते है। वर्तमान सत्र में हमने माइक, ड्रम, समरसेबिल मोटर फ़िटिग ,बच्चों के लिए पर्याप्त बर्तनों की व्यवस्था आदि मुख्य कार्य किए है।

आपके द्वारा संचालित यह मंच भी बेहतर और बेहतर करने के लिए निरन्तर मार्गदर्शन प्रदान करता है ।

वर्तमान माह में C.D.O.sir की meeting में मैने अपने विद्यालय के बच्चों की activities, rhyme, p.t.की video प्रस्तुत की जिनकी सर ने सराहना की ।

मित्रो आपने देखा कि कैसे एक सरकारी विद्यालय को अपनी सकारात्मक सोच से ही बहन जी ने हंसता, खेलता, चहकता बालउद्यान बना दिया। इसी कर्मयोग को मिशन शिक्षण संवाद की ओर से विद्यालय परिवार सहित बहन जी को उज्जवल भविष्य की कामना के साथ बहुत-बहुत शुभकामनाएँ!

15.

डॉ अनीता मुदगल

★अनमोल रत्नों की अनमोल कहानी★

Mobile_school

मित्रो काम तो हम सभी लोग करते हैं लेकिन जब कोई काम समर्पित और सकारात्मक सोच के साथ मानवता को केन्द्र में रख कर किया जाता है तो वह कार्य मानवीय मिशन बन जाता है।

तो आइये जानते है बेसिक शिक्षा की अनमोल रत्न बहन *डॉ अनीता मुदगल जी* के समर्पित और सकारात्मक सोच के मानवीय मिशन *मोबाइल स्कूल* को :--
https://m.facebook.com/story.php?story_fbid=1811566042454318&id=159822084712217 3

पति की नियुक्ति ग्रेटर नोएडा के SPO के पद पर हैं। इसलिए अवकाश के दिनों में हम वही रहते हैं। जून माह में मुझे वहाँ लंबा

प्रवास करना था मगर मेरे छात्र छात्राओं के बिना मेरा मन ज्यादा कहीं भी नहीं लगता है। इस लम्बे अवकाश में कैसे में अपने छात्र छात्राओं के बीच महसूस कर सकूँ। इसके लिए एक विचार मेरे मन में आया कि नोएडा में इमारतों का कार्य हमेशा ही चलता रहता हैं। इन इमारतों में कार्य करने वाले मजदूरों के बच्चे अस्थिर जीवन शैली के कारण अशिक्षित रह जाते हैं। शिक्षा के लिए इनके मन में ललक पैदा होना जरूरी हैं कार्य कैसे शुरू किया जाये योजना बनाई नाम दिया गया *mobile school* मेरे 10 साल के पुत्र ने sites पर जाकर बच्चों से संपर्क किया फिर उनके माता पिता से बातचीत कर उनको स्टेशनरी वितरित कर शिक्षण कार्य शुरू किया। एक माह के पश्चात इस कार्य का बेहतर परिणाम आया बच्चों में भी परिवर्तन आया। कुछ बच्चे स्कूल से भी जुड़ गये। सिटी मजिस्ट्रेट श्री बच्चू सिंह ने प्रयास की सराहना की। मेरा मानना है कि यह प्रयास लंबे समय तक क्रियान्वित नहीं रह सकता था। लेकिन बच्चों में शिक्षा के प्रति एक ललक पैदा कर सका। अब जहाँ भी अवसर मिलेगा यह कार्य जारी रहेगा। क्योंकि --

पढ़ेगा इंडिया
बढ़ेगा इंडिया

मित्रो आपने देखा कि कैसे शिक्षा और मानवता समर्पित बहन ने एक मानवीय के द्वारा अपने समय को सदुपयोगी बनाया। जो हम सबके लिए अनुकरणीय मिशाल है। अतः मिशन शिक्षण संवाद बहन जी के मानवीय समर्पण को नमन करता है।

अजय सिंह

मित्रो आज हम आपका परिचय मिशन शिक्षण संवाद के माध्यम से जनपद- सीतापुर से बेसिक शिक्षा के अनमोल रत्न, बच्चों की उपस्थिति के विशेषज्ञ भाई अजय सिंह जी से करा रहे हैं। जिन्होंने अपनी सकारात्मक सोच कीे शक्ति और जन सहभागिता से एक सोते हुए विद्यालय को ऐसा जगाया कि उसकी गूँज प्रदेश स्तर पर सौ प्रतिशत उपस्थिति का लक्ष्य प्राप्त करने वाले विद्यालय के रूप में हो गयी है। आपने इतने कम समय में विद्यालय को परिवर्तित कर दिया कि हम सब के लिए आश्चर्य और अनुकरणीय हो गये।

तो आइये देखते हैं कि आपने किस प्रकार एक शून्य की ओर निहारने वाले विद्यालय को शिखर की ओर अग्रसर कर दिया:--

https://m.facebook.com/story.php?story_fbid=1814084978869091&id=1598220847122173

मैं *अजय सिंह* रायबरेली जिले का मूल निवासी हूँ एवं 14 नवम्बर-2015 को प्राथमिक विद्यालय गजोधरपुर वि० क्षे० सिधौली जिला-सीतापुर में सहायक अध्यापक के रूप में मेरी प्रथम नियुक्ति हुई।

जब मैंने विद्यालय ज्वाइन किया तो वहाँ की भौतिक दशा और इमारत को देखकर मन दुखी हो गया। विद्यालय में बच्चे भी नियमित नहीं आते थे। फिर भी कुछ करने की ठानी---

माना पग-पग पर फिसलन है चढ़ना बहुत कठिन है।
किन्तु कभी मैं हार मान लूँ यह कैसे मुमकिन है।।

इन्ही पंक्तियों को आत्म सात करते हुए मैंने धीरे-धीरे आगे बढ़ना शुरू किया और निम्न कार्य प्रारंभ किया।

□1-नियमित अभिभावकों की और एस एम सी की मीटिंग ।

□2- प्रतिमाह बच्चों का जन्मदिन उत्साहपूर्वक मनाना।

□3- बच्चों को लाने के लिए टोली नायकों का चयन।

□4-शत-प्रतिशत उपस्थिति वाले बच्चों को प्रति माह पुरुस्कार।

□5- माह जुलाई में स्वयंसेवा से समस्त 80 बच्चों को आइ कार्ड, टाई और बेल्ट वितरित किया।

□6- माह *अगस्त में नई दिल्ली के होम्योपैथ डॉक्टर श्री गोविन्द सिंह राठौर की मदद से कक्षा-1 के समस्त 24 बच्चों को 3 इन 1 राइटिंग बुक प्रदान की।*

□7- हम, हमारे साथी भरत लाल राजभर व हेड मैडम श्रीमती किरन तीनों लोगों ने मिलकर विद्यालय की दीवारों की आकर्षक चित्रों की पेंटिग करवाई जिसका पुताई सहित खर्च लगभग 21000 रुपये आया।

□8- *माननीय मनीष रावत विधायक सिधौली के सौजन्य से समस्त 80 बच्चों को स्वेटर वितरित किया गया।*

दिनांक 21 सितंबर- 2016 को भरत लाल राजभर के रूप में उर्जावान साथी की प्राप्ति हुई। भरत जी कोहिनूर हीरे के सामान है। जिससे अब हम एक और एक मिलकर ग्यारह के समान गतिशील हो गये।

हमारे विद्यालय की मासिक उपस्थति जो जनवरी में मात्र 65 प्रतिशत थी वह अक्टूबर में 96 प्रतिशत पहुँच गयी है। अतः अनुपस्थिति की समस्या लगभग पूरी तरह समाप्त हो गयी।

अब सुन्दर बालपेन्टिंग द्वारा विद्यालय की दीवारें भी बोलने लगी। बच्चे पढ़ने के लिए मनोवैज्ञानिक रूप से तैयार हो चुके है। अब गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और शिक्षण के लिए हम और हमारे विद्यालय परिवार आगे की कार्ययोजनाओं के साथ पूर्ण समर्पित हैं। जिससे गतिमान कार्य के रूप में शौचालय व boundri की मरम्मत तथा गेट का निर्माण।

भविष्य की कार्ययोजनाओं के कुछ प्रस्तावित कार्य भी हैं जो निम्नवत् है:-

□1- बच्चों के बैठने के लिए फर्नीचर।
□2-शुध्द पानी पीने हेतु आर ओ।

□3- विद्यालय में विद्युतीकरण और पंखे ।

□4-प्रोजेक्टर।

अंत में मैं यही कहना चाहूँगा की-

कुछ कर गुजरने के लिए मौसम नही मन चाहिए
साधन सभी जुट जायेंगे संकल्प का सिर्फ धन चाहिए

जय हिन्द
जय शिक्षक

मित्रो आपने देखा कि युवा उत्साह किस प्रकार युग परिवर्तन की राह पर अग्रसर हो चुके हैं, बस जरूरत है हम सबको साथ चलने की।

ऐसे युवा उत्साही साथी भाई अजय सिंह जी और सहयोगी विद्यालय परिवार को मिशन शिक्षण संवाद की ओर से उज्जवल भविष्य की कामना के साथ बहुत-बहुत शुभकामनाएँ!

राजवीर सिंह प्रभाकर

मित्रो आज हम आपका परिचय मिशन शिक्षण संवाद के माध्यम से जनपद- पीलीभीत से युवा उत्साही अनमोल रत्न शिक्षक भाई राजवीर सिंह जी से करा रहे हैं। जिन्होंने विभिन्न वादों और विवादों से दूर रहते हुए अपनी सकारात्मक सोच की शक्ति से शिक्षा एवं समाजसेवी को आत्मसात करते हुए, अपने विद्यालय को कुछ समय में जनपद पीलीभीत का आदर्श विद्यालय की श्रेणी में पहुँचा दिया है।

जहाँ शिक्षक कभी समाज के बीच में निर्विवाद, निर्दलीय और सर्वदलीय की पहचान रखता था। समाज की श्रेष्ठता और सम्मान का प्रतीक होता था। वहीं आज हम देख रहे हैं कि बहुत से शिक्षक साथी अपना अधिकतम समय जातिवाद, परिवारवाद, धर्मवाद और चुनाववाद में ऐसे उलझे हैं कि वह अपना ही शिक्षावाद भूल कर सम्मान और

स्वाभिमान की खोज करने में लगे हैं। जबकि एक कहाबत हमें निश्चित संदेश देती है कि--

"दुबिधा में दोनों गये माया मिली न राम„

ऐसी स्थिति में गुरुजन न तो अपने शिक्षक धर्म का पालन कर पा रहे हैं और न ही किसी पार्टी का, बल्कि उल्टे समाज को अपने सम्मान के लिए संदेश भी दे रहे हैं। जो सभी जानते हैं कि आज बेसिक शिक्षा पर कितने प्रश्न चिह्न लग रहे हैं।

वहीं कुछ शिक्षक ऐसे भी है जो शिक्षा के उत्थान और शिक्षक के सम्मान के लिए अपना धन, ऊर्जा और समय व्यय करके भी रक्षा करने का प्रयास कर रहे हैं। ऐसे ही एक अनमोल रत्न भाई राजवीर जी भी है जो शिक्षा के उत्थान और शिक्षक के सम्मान के लिए समर्पित और संकल्पित हैं।

तो आइये जानते हैं कि आपके द्वारा किये जा रहे प्रयासों को---

https://m.facebook.com/story.php?story_fbid=1832879986989590&id=1598220847122173

मैं राजवीर सिंह प्रभाकर सहायक अध्यापक प्राथमिक विद्यालय बकैनिया दीक्षित वि क्षे- बरखेड़ा, जनपद- पीलीभीत में कार्यरत हूँ। यहाँ ऐसे कार्य किये गए हैं जो पहले नहीं होते थे। यहाँ वह सभी कार्य जो स्वयं मेरे द्वारा किये गए हैं क्रमशः निम्नवत हैं-

1. सरस्वती माँ की एक बड़ी तस्वीर की व्यवस्था।प्रार्थना शुरू होने से पूर्व बच्चों से धूपबत्ती प्रज्ज्वलित करवाना।
2. इसके उपरांत तीन बार सामूहिक गायत्री मन्त्र का उच्चारण करवाना।

□3.प्रार्थना सभा के उपरांत सामान्य ज्ञान से सम्बंधित रोजाना 40 प्रश्न पूछना जिनके उत्तर बच्चे देते हैं।जिनका उत्तर बच्चे न बता सकें उनके उत्तर स्वयं बताना।

□4.मैंने उनके बौद्धिक स्तर में सुधार करने हेतु कक्षा 3,4 व 5 की परख और हमारा परिवेश की पुस्तक से लगभग 250 प्रश्न उत्तर सहित तैयार करके एक रजिस्टर बनाया है।

□5.प्रत्येक कक्षा में बच्चों से उनके जूते चप्पल पंक्तिबद्ध लगवाना।

□6.प्रत्येक शनिवार को बालसभा करवाना शुरू किया जिसमें उनको अपना परिचय बोलना सिखाया अब बच्चे अपना परिचय हिंदी व कुछ बच्चे अंग्रेजी में बताकर कोई कविता या गीत सुनाते हैं इससे उनकी झिझक दूर हुई है।

□7.मध्याह्न भोजन के समय सभी बच्चों को U, O त्रिभुज आयत या वृत्त के आकार में बैठाना। सामूहिक भोजन मन्त्र बुलवाकर उन्हें भोजन करवाना।

□8.विद्यालय आते समय, घर वापस जाते समय, पानी पीने, पेशाब जाने, कक्षा में अंदर आने या कक्षा से बाहर जाने के लिए अंग्रेजी में बोलना सिखाना।

□9.राष्ट्रीय पर्व व नववर्ष समारोह पर मेरे द्वारा बच्चों से सांस्कृतिक कार्यक्रम तैयार कराना तथा पुरस्कार वितरण।

□10.विद्यालय में पहली बार महापुरुषों की जयंती धूमधाम से मनवाना।

□11.अपने इंचार्ज महोदय की सहमति से अभिभावक बैठक की शुरुआत करायी जो अब प्रतिमास करायी जाती है। इसके कराने से बच्चों की उपस्थिति में वृद्धि हुई है।

□12.सभी बच्चों का जन्मदिन उत्साह पूर्वक मनाना। मैंने जुलाई माह में 31 बच्चों का जन्मदिन मनाया जिसमें स्वयं मेरे द्वारा सभी 31बच्चों को 10-10 रूपये वाली कॉपी दी गयी और विद्यालय के सभी बच्चों को टॉफियाँ दी गयीं।

□13.छुट्टी होने से 20 मिनट पूर्व सभी बच्चों को पंक्तियों में बिठाकर उनसे गिनती पहाड़े दिनों महीनों जानवरों रंगों आदि के नाम बुलवाये जाते हैं उसके बाद नारे बुलवाकर छुट्टी करायी जाती है।

□14.अपने जन्मदिन पर लोग पार्टी के बहाने बहुत खर्च करते हैं। लेकिन मैंने कुछ हटकर एक नई पहल की। मैंने अपने जन्मदिन एक अगस्त 2016 से सभी बच्चों को पेंसिल रबर शार्पनर की व्यवस्था अपने पास से की है अब कोई बच्चा ये सामान घर से लेकर नहीं आता है।विद्यालय में उनको ये वस्तुएं मेरे द्वारा प्रदान की जा रही हैं। इससे बच्चों की उपस्थिति बढ़ी है।

□15.जो बच्चे लगातार विद्यालय आते हैं उन सभी को अगले माह की 1 या 2 तारीख को मेरे स्वयं के द्वारा प्रार्थना स्थल पर पेंसिल रबर शार्पनर या कापी से पुरस्कृत किया जाता है। ये भी अगस्त 2016 से शुरुआत है।

□16.मैंने विद्यालय में बच्चों की मदद से ईंटों की क्यारी बनाई उसमें सदाबहार तुलसी मनीप्लान्ट दस बजिया जैसी फुलवारी लगाई। उससे प्रेरित होकर मेरे साथी भी सक्रिय हुए अब मेरे और साथी रामपाल जी द्वारा विद्यालय में चारों ओर ईंटों की क्यारी बनाकर उसमें गेंदे सदाबहार तुलसी दस बजिया केले आदि के पेड़ों से सजाया गया है।इसमें बच्चों का सर्वाधिक योगदान है जो इसमें प्रतिदिन पानी डालने का कार्य करते हैं। गांव वालों का भी सहयोग है।

□17.कक्षा में TLM व महापुरुषों के चित्र की व्यवस्था है जिससे रोचकता से पढ़ाई हो सके।

□18.मैंने अपने पास से सभी बच्चों को उनके लिए आई कार्ड बनवाकर दिए हैं जिन्हें मिलने के बाद से वे बहुत खुश हैं। उनकी सुंदरता भी बढ़ गयी है।

□19.बीती दीवाली पर मैंने अपने यहां दीपावली महोत्सव मनाया। जिसमें दीपक जलवाकर माँ लक्ष्मी जी की पूजा करायी। मैं बच्चों के

लिए बाजार से पटाखे व फुलझडिया ले गया था। उनसे पटाखे चलवाए। घर के लिए भी उनको पटाखे व फुलझड़ियाँ दिए। अंत में सबको जो मैं बाजार से उनके सभी के लिए चार किलो जलेबियाँ ले गया था। बच्चों रसोइयो और समस्त अध्यापकों में बंटवाई। बच्चों ने खूब आनंद लिया।

□साथियों इस तरह रहा मेरा पूरा एक वर्ष का कार्यकाल (6नवम्बर2015 से 5 नवम्बर 2016तक)।

एक वर्ष सफलता पूर्वक पूर्ण होने पर मेरा दूसरे वर्ष का पहला और जरूरतमन्द बच्चों के लिए महत्वपूर्ण कार्य। मैंने देखा सर्दी पड़ने लगी है लेकिन कुछ बच्चे अभी भी बिना स्वेटर के ही आते हैं पूछने पर पता लगा कि उनके पास हैं ही नहीं। मुझे बहुत दुःख हुआ। मैंने तभी प्रण किया कि मैं सभी बच्चों को अपनी तरफ से स्वेटर दूंगा। मन्दिरों में दान करने से तो ये ही ठीक है। मैंने अपना विचार अपने इंचार्ज और साथी सहायक को बताया तो उन्हें आश्चर्य हुआ।मेरी अडिग विश्वाश को देखते हुए उन्होंने कहा ठीक है आपके बच्चे अभी छोटे हैं जब बड़े हो जायेंगे तो खर्चा पता लगेगा। मैंने कहा कोई बात नहीं जब बच्चे बड़े होंगे तो मेरी सोच भी बड़ी होगी।आखिर मैंने अपने यहां पढ़ रहे 101 में से लगातार आने वाले 96 बच्चों के लिए ओसवाल के स्वेटर खरीदे और अपने खण्ड शिक्षा अधिकारी श्री लक्ष्मी नारायण जी के हाथों सभी बच्चों को 22 नवम्बर 2016 को स्वेटर वितरण करा दिए। इसमें अतिथिगण का स्वागत व जलपान की व्यवस्था हेतु मेरे इ०प्रधानाध्यापक जी व साथी अध्यापक जी का एक हजार रूपये का सहयोग रहा।

मजे की बात तो ये हुई कि कार्यक्रम में बच्चों ने अपना परिचय अंग्रेजी में क्या दिया।बाहर से आये प्राइवेट स्कूल के बच्चे कह रहे थे कि बच्चे अंग्रेजी बोलते हैं। गांव वाले अपने बच्चों को इस तरह बोलता देखकर बहुत प्रसन्न हुए।

□25 दिसम्बर मनाने हेतु कोल्डड्रिंक की खाली ग्रीन बोतलों से बच्चों के सहयोग से क्रिसमस ट्री तैयार किया गया।उसे गुब्बारे व रंगीन पट्टी आदि

से सजाकर बच्चों के समक्ष प्रस्तुत कर उन्हें कम खर्चे में त्योहारों पर सजावट करना तथा सभी धर्मों के त्योहारों का सम्मान करने का सन्देश दिया। बच्चों ने रंगारंग कार्यक्रम पेश किये।।

अब बारी है गणतन्त्र दिवस की। तैयारी जोरों पर है। इस अवसर पर कुछ बच्चों को जूते व मोज़े व उनके उपयोग में आने वाली वस्तुएं भेंट की जाएँगी यदि सबकुछ ठीक रहा....।आप सभी लोगों का सहयोग रहा तो शिक्षा के उत्थान के लिए हम सदैव प्रयासशील रहेंगे।

धन्यवाद.... राजवीर सिंह प्रभाकर सहायक अध्यापक प्रा वि बकैनिया दीक्षित वि क्षे बरखेड़ा जनपद पीलीभीत।

मिशन शिक्षण संवाद पीलीभीत-7409273565

मित्रो आपने देखा कुछ करने का उत्साह, जो एक वर्ष में कहाँ से कहाँ पहुँच चुका है। यही हैं शिक्षावादी और मानवतावादी सोच के प्रतीक भाई राजवीर जी।

मिशन शिक्षण संवाद की ओर से शिक्षा का उत्थान और शिक्षक के सम्मान के लिए काम करने वाले भाई राजवीर सिंह जी एवं उनके सहयोगी विद्यालय परिवार को बहुत-बहुत हार्दिक शुभकामनाएँ!

18.

आशीष शुक्ला

मित्रो आज हम आपका परिचय मिशन शिक्षण संवाद के माध्यम से जनपद-हरदोई के चहुँमुखी प्रतिभा के धनी बेसिक शिक्षा के अनमोल रत्न युवा समाजसेवी शिक्षक भाई आशीष शुक्ला जी से करा रहे हैं। जिनमें मानवता की सेवा के मानवीय गुणों का स्पष्ट संस्कार झलकता है। जिसकी झलक हम आप आपके विद्यालय स्तर पर किये गये कार्यों एवं गरीब परिवार के बच्चों के मुख पर मुस्कान देखने के लिए शुरू किये गये *Operation Resmile* जैसे स्वयंसेवी कार्यों से देख सकते हैं। सफर यहीं नहीं रूकता, बच्चों के साथ गरीब परिवार और अभिभावकों के लिए *नेकी की दीवार*जैसे स्वयंसेवी कार्यों से भी देख सकते हैं।
https://www.facebook.com/shikshansamvad/posts/1806641426280113

जहाँ आज बेसिक शिक्षा के शिक्षक के लिए पग- पग पर बाध्यकारी बंधन ही नजर आता है, वही धन्य है हमारे मिशन के अनमोल रत्न जो हर बाधा को पार कर मानवता की रक्षा के लिए सतत प्रयासरत रहते हुए बेसिक शिक्षा को नई

दिशाएं देने में लगे हैं। हम मिशन शिक्षण संवाद के सभी अनमोल रत्नों को कोटि-कोटि नमन करते हैं, क्योंकि बेसिक शिक्षा आज परिवर्तन के दौर से गुजर रही है जिसे परिणाम तक यही अनमोल रत्न पहुँचा सकते हैं।

तो आइये जानते हैं आपके द्वारा किए गये प्रयासों को आपके ही शब्दों में:----

आशीष शुक्ल

प्रधान अध्यापक

*प्राथमिक विद्यालय बोझवा कुरसेली

विकास खंड हरियावां

जनपद हरदोई*

अँधेरे में एक उम्मीद की किरण....

साथियों मैं हरदोई जनपद से हूँ और मेरी प्रथम नियुक्ति 2 जुलाई 2009 को सहायक अध्यापक के पद पर प्राथमिक विद्यालय कुंवरपुर विकास खंड- भरखनी में हुयी थी। वहाँ की दूरी मेरे निज निवास से 68 km थी इसलिए रोज जाना आना संभव नही था। इसलिए वहीं पर एक कमरा लेकर विद्यालय में नियमित शिक्षण कार्य किया जिसका परिणाम ये हुआ कि वहीं से एक मेरा छात्र सोमेश कुमार अगले वर्ष विद्या ज्ञान केंद्र के द्वारा आयोजित परीक्षा में जिले से चुना गया तब मुझे इसका अहसास हुआ कि गाँव के बच्चे भी बहुत कुछ कर सकते हैं बस उनको मौका मिलना चाहिए ....। पिछले वर्ष मेरी पदोन्नति हुयी जिसके फलस्वरूप मेरी नियुक्ति प्राथमिक विद्यालय बोझवा कुरसेली विकास खंड हरियावां में प्रधान अध्यापक के पद पर हुयी... । इस विद्यालय का निर्माण वर्ष 2012-13 था । जब मैं वहां गया तब एक सहायक शिक्षक व मैं ही विद्यालय को देख रहा था और विद्यालय वैसे ही चल रहा था जैसा एक सामान्य विद्यालय में सभी कार्य होते हैं । बीते माह मुझे मेरे छोटे भाई अभिषेक शुक्ल जो सीतापुर जनपद में सहायक अध्यापक पद पर है उसने मोहम्मद वाइज़ के बारे में बताया जिन्होंने मुझे whatsapp संवाद ग्रुप में जोड़ा जिसमें मैंने विभिन्न विद्यालयों को देखा और सोचा कि जब ये विद्यालय ऐसे बना सकते हैं तो मैं क्यों नही .... फिर

क्या था मैंने विद्यालय में मौजूद सभी संसाधनों को देखा और 11 सितम्बर से इस कार्य की शुरुआत की जिसमें अभी भी बहुत काम हो रहा है।

👉1.मैंने प्रयास करके विद्यालय में 3 सहायक अध्यापकों की नियुक्ति भी करायी जिससे सभी बच्चों को अच्छी शिक्षा भी मिल सके।

👉2.और साथ ही मैदान की मरम्मत करायी क्योंकि विद्यालय एक खेत में बना है जिसके कारन ज़मीन ऊबड़ खाबड़ थी।

👉3.पानी के नल की भी बुरी हालत थी वह भी सही कराया स्वच्छ जल की उपलब्धता सुनिश्चित की।

👉4.अब नियमित तौर पर अभिभावकों को जागरूक करना और उन्हें इस बात के लिए प्रेरित करना कि वो सभी अपने बच्चों को नियमित भेंजे और सभी सरकारी सुविधायों का लाभ उठायें सभी समितियों का गठन किया।

👉5.खेल के प्रति रूचि उत्पन्न करने हेतु खेल के सामान की व्यवस्था की। अब नियमित रूप से सभी बच्चे फूटबाल और बैडमिंटन खेलते हैं।

👉6. 3 कमरे होने के कारण असुविधा अवश्य होती है लेकिन उसके लिए भी प्रयास जारी है।

👉7.पूर्व में नामांकन 211 था जिसमें से न आने वाले बच्चे जो कहीं और नाम लिखा कर विद्यालय में नहीं आते थे उनके बारे में जानकारी करने के बाद उनमें 57 नाम कम किये फिर 154 नाम बचे इस वर्ष नए प्रवेश 26 हुए हैं जो की गाँव की आबादी के हिसाब से सही हैं। उनके आने से 180 बच्चे नामांकित हैं।

👉8. मेरा पूरा ध्यान बच्चों की उपस्थिति पर है जितना अधिक हम बच्चों को विद्यालय के लिए आकर्षित कर सकें उतना अच्छा रहेगा।

👉9 ...समय समय पर अभिभावक समिति की बैठक भी आयोजित की जाती है।

👉10.एक बागवानी समिति भी बनी है जिसके कारण कुछ बच्चों को पेंड़ पौधों की ज़िम्मेदारी दी गयी है।

👉11.गाँव के कुछ लोग कार्य को देखते हुए मेरी मदद को आगे भी आये।

👉12.विद्यालय के बच्चों को टाई बेल्ट आई कार्ड स्वेटर भी बाँट दिए हैं जिससे वो अपनी एक अलग पहचान बना सकें।

👉13. एक अच्छा अध्यापक बनने के लिए बच्चों से सामंजस्य बनाने हेतु उनसे नियमित प्रेमपूर्वक वार्तालाप करना प्रारम्भ किया उनसे मित्रता की।

👉14. हर कक्षा से प्रत्येक माह 1 बालक और 1 बालिका जिसकी उपस्थिति कक्षा में सर्वाधिक होती है उसे सम्मानित करना .... इससे अन्य बच्चे भी प्रेरित होते हैं।

👉15.विद्यालय में विद्युत आपूर्ति के लिए प्रयास जारी है इसी माह सफलता मिलने की संभावना फिर अपने पास से ही हर कक्षा में एक पंखा लगवाने की योजना...।

👉16. पढ़ाई के साथ- साथ नैतिकता और खेलों के प्रति, सामाजिक कार्यों में भागीदारी करने को भी प्रेरित करना...।

👉17.प्रत्येक कक्षा में TLM की व्यवस्था है जिससे रोचकता से पढ़ाई हो सके।

👉18.एक बात और जो मेरे पेशे से अलग है लेकिन एक इन्सान होने की वजह से वह भी ज़रूरी है जिसके अंतर्गत मैं अपनी *Operation Re Smile Team* *के द्वारा अपने जनपद पर कई अलग-अलग अभियान चलाकर लोगों को जागरूक करने का भी काम करते हैं जिसमें *जल संरक्षण अभियान, पर्यावरण संरक्षण अभियान और गर्मी में नियमित जल प्याऊ लगवाने का अभियान वर्तमान में *OPERATION RESMILE*में जिसके अंतर्गत ज़रूरत मंद बच्चों को खिलौने गर्म कपड़े किताबों को उपलब्ध कराना है .... इन सभी अभियानों बारे में facebook whatsapp की मदद से सभी तक पहुंँचाया जा रहा है....ताकि. अधिक से अधिक लोग उसमें भाग ले सकें....। *एक बात और अगर अपने साथियों का नाम न लूँ तो गलत होगा, इन दोनों अभियान में मेरे सभी साथियों श्याम जी गुप्ता, पंकज अवस्थी , अमित शुक्ल, अवनीश तिवारी, सचिन मिश्र, अजीत शुक्ल का भी अपार सहयोग रहा है उन सबके बिना ये दोनों अभियान सफल नही होते.....*

प्रथम प्रयास है अगर कोई कमी रह गयी हो तो क्षमा करियेगा .... धन्यवाद 🙏

अंत में बस यही कहना चाहता हूँ की अभी कुछ माह ही हुए है जिसमें ये सब किया है और अपने आप किया है किसी अन्य की कोई मदद नही मिल पाई न ही किसी अधिकारी की न ही किसी और प्रतिनिधि की .... आगे भी जैसे- जैसे आप सबसे प्रेरणा मिलती रहेगी वैसे ही और बच्चों के लिए कार्य करते रहेंगे...। *इस पथ का उद्देश्य नहीं है शांत भवन में रुक जाना , किन्तु पहुंचना उस मंज़िल पर जिसके आगे राह नहीं*

धन्यवाद.... *आशीष शुक्ल 8182814271, 9628184945*

मिशन शिक्षण संवाद की ओर से आशीष जी एवं सहयोगी विद्यालय परिवार को उज्जवल भविष्य की कामना के साथ बहुत-बहुत शुभकामनाएँ!

प्रज्ञा राय

मित्रो आज हम आपको परिवर्तन की प्रतीक और मानवता की मिशाल अपनी शिक्षिका बहिन से परिचित करा रहे हैं। जिनके कण-कण में समाई है ममतामयी मानवता। आपके परिवर्तनकारी कार्यो को यदि लिखना शुरू करें तो शायद यह दिन भी छोटा पड़ जायेगा। फिर भी कुछ संक्षेप में लिखने का प्रयास कर रहा हूँ जो आम शिक्षकों के लिए परिवर्तन का प्रतीक होगा।

आपने मात्र नवम्बर- 2015 से अब तक अपनी मेहनत, लगन और मानवीय विचारों का ऐसा जादू चलाया कि जो बच्चे पढ़ाई- लिखाई से दूर, दिनभर सीपी, घोघा और चूहा मारने वाले मुसहर बंजारा जनजाति समाज के और पढ़ाई- लिखाई का मतलब न समझने वाले अभिभावकों को मात्र तीन से चार माह में बच्चे पढ़ने को तैयार और अभिभावक जनसहभागिता को तत्पर और विद्यालय ऐसा जो खण्डहर

रूप ले चुका, जिसे अन्य शिक्षक कालापानी की संज्ञा दे रखे थे। मात्र दस बच्चों की उपस्थिति वाला विद्यालय था।

लेकिन आज इतने अल्प समय में ही बहिन जी अपनी लगन और प्रयास से अकेले ही यह विद्यालय जिले के सर्वोच्च पाँच विद्यालयों की सूची में स्थापित है। विद्यालय भवन सुसज्जित है। चहारदीवारी बन चुकी है। छात्र उपस्थिति दस से बढ़कर सौ बच्चों से अधिक हो गयी।

आज जहाँ एक ओर दुनियाँ अधिक सुविधा, अधिक दाम और कम काम की प्रवृत्ति से शहर की ओर भाग रही है वही एक यह बहिन अपने शिक्षा एवं सेवा के संस्कारों से सुसज्जित दुर्गम ग्रामीण क्षेत्र का विद्यालय इसलिए मांग रही है कि वहाँ चुनौतीपूर्ण सेवा का मौका मिलेगा। किसी ने सच ही कहा है कि---

"दुनियाँ बदलती है बदलने वाला चाहिए,,

ये सब कैसे हुआ इसके लिए जानते हैं बहिन जी के विचार-- '' मैंने शुरू से ही एक चुनौतीपूर्ण कार्य को करने की ठानी थी। यही बजह है कि ज्वाइनिंग के समय ही मैंने मैनपुर कोट और धुरिया भाठ में तैनाती का विकल्प दिया था। दोनों ही गाँव मुसहर जनजाति बाहुल्य हैं। मुझे मैनपुर कोट में तैनाती दी गई जिसे मैंने चुनौती के रूप में स्वीकार कर काम शुरू किया। आज परिवर्तन आप सबके सामने है,,

आगे आपका कहना है कि--- " अभी तो मैंने शुरुआत किया है लोगों को ये पता चले कि मेहनत कभी बेकार नही होती है। .....ईश्वर ने हमें मौका दिया है समाज की सेवा करने का, ... उनके लिए काम करने का ....जो खुद के लिए कुछ नहीं कर पा रहे हैं.....हमें जितना हो सके समाज के लिए करना चाहिए। जो शिक्षक

से ही सम्भव है क्योंकि शिक्षा ही मनुष्य के सुखी जीवन की पहली सीढ़ी है,,

आपने पढ़ा, अब आप स्वयं जान गये होंगे कि जिस बहिन के विचार और संदेश ऐसे हों, उसके आगे असम्भव शब्द छुपने के लिए एक कोना तलाश रहा होगा। जैसे :- उजाला के आगे अंधेरा।

आपका पढ़ाने का और काम करने का ढंग भी प्रेममय है बच्चों के साथ भोजन करना, खेलना- खिलाना और पढ़ना- पढ़ाना। इससे बच्चों और अभिभावकों में बहिन के प्रति सम्मान के साथ आज्ञाकारी भाव जाग्रत हो गया। जिससे अब पूरा समाज शिक्षा से सामाजिक परिवर्तन की राह पर तेजी से आगे बढ़ चला।
https://m.facebook.com/story.php?story_fbid=1721994721411451&id=159822084712217 3

अतः मिशन संवाद की ओर से त्याग, समर्पण और परिर्वतन की प्रतीक बहिन प्रज्ञा राय, मूल निवासी आजमगढ़ तथा सेवा क्षेत्र प्राथमिक विद्यालय मैनपुर कोट, ब्लाॅक- कसया, जनपद- कुशीनगर को बहुत बहुत शुभकामनाएं!

सुशील कुमार

मित्रो बेसिक शिक्षा के अनमोल रत्नों के परिचय की इस कढ़ी में हम अपने उस आदर्श शिक्षक का परिचय करा रहे हैं जिन्होंने हमें बेसिक शिक्षा को सफलता की ओर ले जाने का आवश्यक व्यवहारिक पाठ सिखाया। आपने अपने कार्य से उन हजारों नकारात्मकता की सवारी पर भ्रमण करने वाले शिक्षकों को सिखाया कि कैसे एक शिक्षक अपने सरल स्वभाव, सकारात्मक सोच, मेहनत और लगन से एक आदर्श विद्यालय बना सकता है। पिछले कई दिनों से हमारे अनेकों शिक्षक भाईयों की यह जिज्ञासा रही है कि आखिर इतना अच्छा विद्यालय बनाने के लिए धन कहाँ से आता है। मित्रो आज हम अपने आदर्श शिक्षक के शब्दों में आपको पढ़ा रहे हैं कि किसी काम को करने

के लिए धन से पहले आपके मन की जरूरत पड़ती है। जिसे हमारे महापुरुषों ने सिखाया भी है कि---

"मन के हारे हार है, मन के जीते जीत,,

अतः हमें पूरा भरोसा और विश्वास है कि जिस दिन से हम सब एक होकर अपने मन के साथ छः से आठ घण्टे शिक्षा और शिक्षक के हित और सम्मान लिए समर्पित हो जायेंगे। उसी दिन से बेसिक शिक्षा का स्वर्ण युग शुरू हो जायेगा। फिर धन तो बहुत ही तुच्छ नजर आयेगा।

मित्रो आइये जाने कैसे एक विद्यालय शून्य से शिखर की ओर भाई सुशील कुमार जी प्रधानाध्यापक
प्राथमिक विद्यालय गुलरिया, विकास खण्ड- हरक, जनपद- बाराबंकी की लगन से पहुँचा। पढ़े आपके शब्दों में----''
https://m.facebook.com/story.php?story_fbid=172279606466465O&id=159822084712217 3

"सम्माननीय शिक्षक मित्रो--

मैंने 18/07/2007 को स्थानान्तरित हो कर प्राथमिक विद्यालय गुलरिहा में सहायक अध्यापक के रूप में कार्यभार ग्रहण किया। विद्यालय की स्थित अत्यंत ख़राब थी। विद्यालय परिसर में लोगो का कब्ज़ा था। बहुत सारे बच्चे विद्यालय में नाम लिखवाकर प्राइवेट स्कूल में पढ़ने जाते थे। विद्यालय में बच्चे बहुत ही गंदे बनकर आते थे, उनको उठने- बैठने, खाने -पीने, बोलने-चालने का तरीका सही नहीं पता था। बच्चों के पास लिखने के लिए कॉपी पेंसिल तक नहीं थी। विद्यालय प्रांगण में बॉउंड्री नहीं थी।

सर्वप्रथम बच्चों से आत्मीय जुड़ाव स्थापित करके उनमें नैतिक आदतों का विकास के साथ साथ सामान्य बोलचाल की भाषा में सुधार किया। विद्यालय में शैक्षिक वातावरण स्थापित करने हेतु अध्यापकों, अभिभावकों और ग्राम प्रधान जी से सहयोग माँगा। विद्यालय को प्राप्त अनुदान से अच्छी रंगाई- पुताई तथा tlm का निर्माण करवाया। स्टेशनरी, चटाई, खेल सामग्री आदि की व्यवस्था की गयी।
निःशुल्क यूनिफार्म के साथ टाई बेल्ट दी तथा अभिभावकों को प्रेरित करके बालकों के लिए भी यूनिफार्म की व्यस्था की गयी। स्कूल में अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा पाता देखकर अभिभावक भी प्रसन्न थे। उनका हमारी टीम पर भरोसा बढ़ चुका था। शीघ्र ही अभिभावकों ने scholorship के पैसों से बच्चों के लिए स्वेटर की व्यवस्था भी कर दी। अब बच्चे बहुत ही साफ़ सुथरे स्कूल आने लगे। लोग अब विद्यालय की प्राइवेट स्कूल से तुलना करने लगे थे जो बच्चे प्राइवेट में जाते थे वापस स्कूल में आ गए।

शैक्षिक वातावरण बनने के पश्चात मैंने भौतक परिवेश सुधारने हेतु बच्चों अभिभावकों और सहयोगी शिक्षकों की मदत से विद्यालय में क्यारियाँ बनवाकर उसमें पेड़-पौधे लगवाये। बॉउंड्री वाल बनी। एक साल बाद पेड़ पौधों की हरियाली और साफ सुथरे परिवेश पर जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी और पंचायत विभाग के अधिकारियों की नजर पड़ी। सभी के सहयोग से विद्यालय में मिट्टी की पटाई, पटंजा, शौचालय तथा पानी की टंकी कमरे आदि बनवाये गए।

विद्यालय में बालिकाओं की उपस्थिति बढ़ाने के उद्देश्य से 2011 में सहायक अध्यापिका शिल्पी गुप्ता के द्वारा बच्चों को क्राफ्ट के अंतर्गत कई प्रकार के फूल, बुके, गुलदस्ता, फोटो फ्रेम, डॉल, मेहँदी लगाना, रंगोली बनाना, ग्रीटिंग कार्ड बनाना चित्रकारी आदि सिखाना प्रारम्भ किया गया। शैक्षिक वर्ष के प्रारम्भ से लेकर अंत तक

विद्यालय में सभी राष्ट्रीय तथा धार्मिक त्योहार महापुरुषों के जन्म दिन बाल दिवस, प्रवेश उत्सव, विदाई समारोह, सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन, अंक पत्र वितरण के साथ साथ समर कैंप का आयोजन किया जाने लगा। मीडिया तथा सोशल साईट के माध्यम से गाँव के बाहर के लोग भी विद्यालय में हमारी टीम द्वारा किये गए कार्यो से परिचित होने लगे। विद्यालय में सामाजिक सहभागिता बढ़ी। कुछ उद्योग पतियों से संपर्क किया और विद्यालय के बच्चों को mdm ग्रहण करने के लिए प्लेट बैठने हेतु फर्नीचर, जूते मोज़े सर्दियों हेतु गरम पैजामा आदि की व्यवस्था की गयी।

इस प्रकार अपने स्टाफ, अभिभावकों, बच्चों, शिक्षा विभाग तथा पंचायत विभाग के अधिकारियों तथा समाज सेवक व्यक्तियों के सहयोग से विद्यालय का विकास किया गया। आज विद्यालय में संसाधनों का आभाव नहीं है।

विद्यालय में स्मार्ट क्लास की व्यवस्था है। टीवी cd प्लेयर laptop इंटरनेट, dth, tlm आदि के माध्यम से बच्चों को आधुनिक तरीके से प्राकृतिक वातावरण में शिक्षा देने का प्रयास किया जाता है।

□समर कैंप में विद्यालय के साथ- साथ आस- पास के गांव की अन्य बालिकाओं को भी प्रतिभाग करने का अवसर दिया जाता है।

□पुस्तकालय में बच्चों की रूचि से सम्बंधित पर्याप्त पुस्तकें है।

□वार्षिक शैक्षिक टूर की व्यवस्था है।

□बाल पंचायत के माध्यम से बच्चे स्वानुशासित होकर अपनी समस्याओं का निराकरण तथा विद्यालय की व्यवस्था में सहयोग करते है।

□बच्चों की व्यक्तिगत स्वच्छता तथा विद्यालय में साफ सफाई का विशेष ध्यान रखा जाता है।

□विद्यालय प्रबंध समिति विद्यालय की व्यवस्था में विशेष सहयोग करती है।

Thanks

अतः मिशन संवाद की ओर से शिक्षा के लिए समर्पण और परिवर्तन के प्रतीक भाई सुशील कुमार जी को बहुत बहुत शुभकामनाएं!

सम्पन्न कुमार निगम

मित्रो आज हम आपको मिशन शिक्षण संवाद के माध्यम से एक ऐसे अनमोल रत्न शिक्षक भाई सम्पन्न कुमार निगम जी जनपद- बाराबंकी से परिचय करा रहे हैं। जिन्होंने बेसिक शिक्षा में शिक्षण विधियों को व्यवहारिक रूप में जमींन पर प्रयोग और उपयोग कर दिखाया। क्योंकि

बच्चों के सीखने के तीन माध्यम होते हैं।

१- सुनना

२- देखना

३- करना

बच्चों के ज्ञान का स्थाई करण करने के लिए सुन कर सीखने से अधिक देख कर सीखना और देख कर सीखने से अच्छा करके सीखना उपयोगी और कारगर माध्यम होता है।

जहाँ कुछ शिक्षक केवल सुनाने तक सीमित हैं। कुछ शिक्षक लिखाने तक पहँचते हैं कुछ दोनों माध्यम का उपयोग कर लेते हैं। लेकिन कुछ शिक्षक तीनों माध्यम का उपयोग कर अपने शिक्षण को परिणामी बनाना अपने शिक्षक होने का धर्म समझते है। क्योंकि उन्हें शायद यह पता है कि शिक्षक का अस्तित्व परिणामी शिक्षण से ही हैं। उन्हीं अनमोल रत्नों के बीच हमारे आदर्श शिक्षक भाई सम्पन्न कुमार निगम जी हैं जिन्होंने अपने शिक्षण को अपनी गतिविधियों के माध्यम से अपने नाम के अनुरूप ऐसी सम्पन्नता दी कि बच्चों को शिक्षण की प्रभावशाली विधियों में एक क, ख, ग अर्थात क- कहानी, ख- खेल और ग- गीत का ज्ञान के साथ पूर्ण आनन्द भी प्राप्त होता है।

आपने शिक्षण के लिए आवश्यक टी० एल० एम०, बच्चों का रंगों के प्रति आकर्षण के कारण रंगीन चॉक, ऑडियो और वीडियो आदि का प्रयोग करते हैं जिससे बच्चों को रुचिकर, भय रहित वातावरण और खेल खेल में सीखने का आनन्द मिलता है।

आपने अपने कुशल शिक्षण और विद्यालय प्रबंधन के माध्यम से एक खानापूर्ती करने वाले प्रा० वि०बिशुनपुर-२, बाराबंकी को शून्य से शिखर की ओर अग्रसर कर दिखाया।

इसके लिए हम मिशन शिक्षण संवाद की ओर से उज्ज्वल भविष्य की कामना के साथ सम्मानित भाई सम्पन्न कुमार निगम जी एवं विद्यालय परिवार को बहुत -बहुत शुभकामनाएँ प्रदान करते हैं।

आइये देखते हैं आपकी शिक्षण विधियों की झलकियाँ चित्रों के माध्यम से---
https://m.facebook.com/story.php?story_fbid=1782406848703571&id=159822084712217 3

अतः मिशन संवाद की ओर से शिक्षा के लिए समर्पण और परिवर्तन के प्रतीक भाई सुशील कुमार जी को बहुत बहुत शुभकामनाएं!

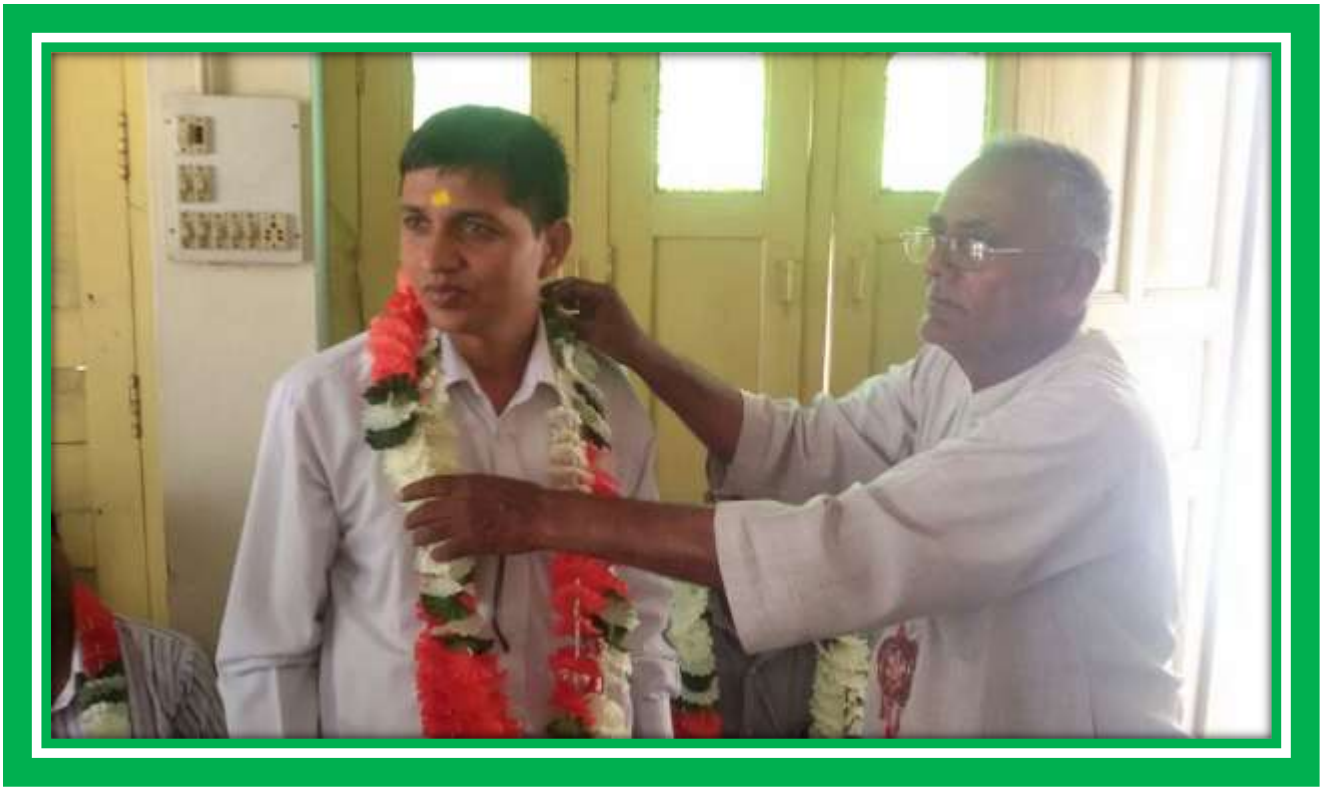

कुँवरसेन जी

मित्रो आज हम आपको जनपद- बदाँयू से बेसिक शिक्षा के उस अनमोल रत्न का परिचय करा रहें हैं जिन्हें हम गुरुओं का गुरु कहें तो अतिशयोक्ति न होगा। क्योंकि आपने बेसिक शिक्षा में अनेक ऐसे असाधारण कार्य किए जो हम सब के लिए अनुकरणीय और प्रेरणा के स्रोत हैं। आपके उत्कृष्ट कार्यों के लिए कुछ माह पहले माननीय मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव जी द्वारा सम्मानित किया गया तथा जिला समिति द्वारा वर्ष- 2016 में राष्ट्रपति पुरस्कार के लिए आपके नाम का प्रस्ताव राज्य सरकार को भेजा गया है। आपने बेसिक शिक्षा के क्षेत्र में अपने पूरे जनपद ही नहीं बल्कि अब पूरे प्रदेश के विद्यालयों, शिक्षकों के लिए त्याग, समर्पण, शैक्षिक और भौतिक परिवेश को अनूठा बनाने में हमारे अन्य अनमोल रत्नों के समान अनूठा उदाहरण प्रस्तुत किया है। आपने अपने विद्यालय को शिक्षकों,

जनप्रतिनिधियों और समाज के सहयोग से नित नई ऊँचाइयों पर ले जाने के लिए अग्रसर हैं।

तो आइये जानते हैं ऐसे प्रेरणा के स्रोत एवं बेसिक शिक्षा के अनमोल रत्न के सम्बन्ध में उन्हीं के शब्दों में---
https://m.facebook.com/story.php?story_fbid=1732358213708435&id=159822084712217 3

सम्मानित मित्रो,

मैं कुँवरसेन पूर्व माध्यमिक विद्यालय हर्रायपुर, विकास खण्ड- बिसौली, जनपद- बदाँयू में दिनाँक- 29/04/2010 को पदोन्नत होकर सहायक अध्यापक के पद पर आया था। उस समय विद्यालय शैक्षिक, भौतिक और नामांकन आदि की दृष्टि से अत्यंत पिछड़ा हुआ था। समाज का विद्यालय के प्रति कोई झुकाव भी नहीं था। कोई सहयोग नहीं था। गाँव की जनसंख्या के अनुपात में नामांकन भी कम था और उनकी उपस्थिति तथा उनका ठहराव एक समस्या थी।

इन्हीं अव्यवस्थाओं से एक शिक्षक के रूप में हमें संघर्ष और बेसिक शिक्षा तथा शिक्षक के सम्मान के लिए कुछ करने की प्रेरणा मिली। इसके लिए हमने सबसे पहले घर - घर जाकर अभिभावकों और ग्रामवासियों से सम्पर्क स्थापित किया और शिक्षा का महत्व समझाते हुए, अपनी बात कही और उनकी बात सुनकर उन्हें उनके बच्चों को अच्छी शिक्षा का भरोसा दिलाया। जिससे हमें सफलता के रूप में 120 बच्चों का नामांकन मिला। अब आगे का लक्ष्य था बच्चों की उपस्थिति और उनके ठहराव के साथ विद्यालय के शैक्षिक स्तर और भौतिक परिवेश को सुधारने का जिसके लिए हमने निम्न प्रयास किये।

1- शत- प्रतिशत उपस्थिति वाले बच्चों को पुरस्कार देना शुरू किया। और घर - घर सम्पर्क कर अभिभावकों को समझाते रहे। इससे उपस्थिति में सुधार हुआ।

□2- बच्चों को आधुनिक और उत्तम शिक्षा के लिए कक्षा- कक्षों को स्मार्ट क्लास के रूप में विकसित किया। प्रोजेक्टर द्वारा शिक्षा का बच्चों में आकर्षक बढ़ा। जिससे उपस्थिति और ठहराव में सफलता मिली।

□3- विद्यालय के बाद अतिरिक्त समय में बच्चों को कान्वेंट के स्तर पर लाने के लिए उनके घर जाकर पढ़ाना शुरू किया। जिससे बच्चों में विद्यालय के प्रति आकर्षण और अभिभावकों में विश्वास बढ़ा।

□4- अभिभावकों से सम्पर्क के लिए और उन्हें विद्यालय से अधिक से अधिक जोड़ने के लिए बुलावा कार्ड का प्रयोग शुरू किया। जिससे अभिभावकों में भी विद्यालय के प्रति आकर्षण बढ़ा।

□5- विद्यालय में मीना मंच का अलग कक्ष बनाया। इसके माध्यम से बालिकाओं की उपस्थिति और ठहराव में सफलता के साथ बालिकाओं ने विभिन्न उत्सवों में अग्रणी भूमिका निभाई। इनके सहयोग से गाँव में शौचालय निर्माण में विशेष सहयोग मिला।

□6- विद्यालय में बेहतर अनुशासन और बच्चों में सेवाभाव जगाने के लिए स्काउट गाइड का प्रशिक्षण प्रदान कर मण्डल स्तर की प्रतियोगिताओं में ए ग्रेड प्राप्त किया। इसके अलावा स्काउट गाइड द्वारा क्षेत्रीय मेलों में कैम्प लगाकर प्याऊ लगवाना तथा स्वच्छता अभियान जैसे कार्यों को भी चलाया जा रहा है।

□7- विद्यालय के भौतिक परिवेश को सुन्दर बनाने के लिए समुदाय के सहयोग से समरसेबिल लगवाया गया।जिससे बृहद स्तर पर पौधारोपड़ कर विद्यालय के परिवेश को सुन्दर और आकर्षक बनाया गया है।

□8- विद्यालय का विद्युतीकरण और कॉन्वेंट की तरह इनवर्टर, पंखों और प्रोजेक्टर आदि की व्यवस्था एस एम सी सदस्यों तथा समाज के सहयोग से की गयी। जिससे गाँव के गरीब परिवारों के बच्चे भी आधुनिक शिक्षा से लाभान्वित हो रहे हैं।

□9- हमारे प्रयासों में सहयोग के लिए जनप्रतिनिधियों का सहयोग सराहनीय रहा है। इसमें हमारे माननीय क्षेत्रीय विधायक श्री आशुतोष

मौर्य जी द्वारा ठण्डे पानी के लिए फ्रीजर लगवाया गया तथा 40000□ नगद कम्प्यूटर के लिए सहायता प्रदान की। बिसौली ब्लाक प्रमुख श्रीमती श्रीवती यादव द्वारा विद्यालय की चहारदीवारी और सी सी रोड बनवाया गया जिससे विद्यालय की सुन्दरता में चार चांद लग गये।

□10- विद्यालय के बच्चों द्वारा खेल- कूद, सामाजिक और सांस्कृतिक गतिविधियों में भी बढ़ कर सहभागिता की जाती है। गत सत्र में कक्षा-8 कुमारी मोनिका ने राज्य स्तरीय खेल- कूद प्रतियोगिता में प्रतिभाग किया तथा जनपद स्तर पर लगने वाली प्रदर्शनी में विद्यालय के बच्चों का सक्रिय प्रतिभाग रहता है।

□11- विद्यालय में ग्राम प्रधान जी की सहायता से उत्तम मध्याह्न भोजन व्यवस्था की जाती है।

12- विद्यालय में बच्चों की रुचियों के अनुसार पढ़ने के लिए सुसज्जित पुस्तकालय है। जिससे बच्चे लाभान्वित हो रहे हैं।

□13- विद्यालय में विभिन्न माॅडलों से सुसज्जित एक सामाजिक विषय कक्ष की स्थापना की गई है जहाँ बच्चे स्वयं करके सीखते हैं।

□14- विद्यालय के बच्चों को समय- समय पर शैक्षिक भ्रमण कराके ज्ञान वृद्धि की जा रही है।

□15- जनपद के अन्य विद्यालयों के शैक्षणिक और भौतिक परिवेश के परिवर्तन के लिए समय- समय पर हमारे द्वारा सहयोग किया जाता रहा है।

□15- विद्यालय के छात्रों को सर्दियों से बचने के लिए शिक्षकों और समाज के सहयोग से गर्म कपड़ों के वितरण की व्यवस्था की जाती है।

□17- विद्यालय में विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से प्रार्थना सभा को आकर्षक और मनमोहक बनाया जाता है। जिससे दिन की शुरुआत एक उत्साहित माहौल से होती है।

□18- वर्तमान सत्र में बच्चों का शैक्षिक स्तर उच्च करने के लिए विद्यालय में 1 जून से 30 जून तक प्रातः 7:00 से 9:00 बजे तक

जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी की अनुमति से ग्रीष्मकालीन कक्षाएं संचालित हैं।

19- आपका विद्यालय अभी हाल में शुरू की गई माननीय प्रधानमंत्री विद्यांजलि योजना के लिए भी नामित किया गया है।

मित्रो आपने अपने बीच के सम्मानित भाई कुँवरसेन जी के विभिन्न प्रयासों और गतिविधियों को जाना। इन्हीं सब उत्कृष्ट कार्यो के लिए आपको मुख्यमंत्री जी से लेकर एस एम सी सदस्यों तक कोई पद बेसिक शिक्षा एवं प्रशासनिक व्यवस्था का ऐसा नहीं है। जिन्होंने विभिन्न अवसरों पर आपको सम्मानित न किया हो।

अतः ऐसे सुयोग्य सद्कर्म के प्रतीक भाई कुँवरसेन जी से हम मिशन संवाद के माध्यम से निवेदन करना चाहते हैं कि आप बेसिक शिक्षा और उसके शिक्षकों के हित और सम्मान की रक्षा के लिए आगे बढ़ कर आयें। क्योंकि यदि कोई समाज बदनाम और कलंकित हो तो उसके सदस्यों को बदनामी और कलंक उपहार स्वरूप स्वयं मिल जाते है फिर व्यक्ति विशेष चाहे कितना भी सम्मानित क्यों न हो।

मिशन संवाद की ओर से भाई कुँवरसेन जी एवं आपके सहयोगी विद्यालय परिवार एवं जनप्रतिनिधियों को बहुत- बहुत शुभकामनाएं!

23.

अलका बाजपेई

मित्रो आज हम आपका परिचय मिशन शिक्षण संवाद के माध्यम से उत्तर प्रदेश की शिक्षा का हृदय कहे जाने वाले जनपद- इलाहाबाद से बेसिक शिक्षा की अनमोल रत्न शिक्षिका बहन अलका बाजपेई जी से करा रहे। उन्होंने अपने प्रयासों से अव्यवस्था का प्रतीक बन चुके विद्यालय को अपने सहयोगियों के साथ मिल कर अनमोल ढंग से सुसज्जित किया है। कवि ने सही भी लिखा है "मानव जब जोर लगाता है पत्थर पानी बन जाता„ अर्थात जब कुछ करने को मन में ठान लिया, तो कोई का असम्भव नहीं रह जाता है। यही जोश, उत्साह और सकारात्मक सोच कीे शक्ति की जरूरत है बेसिक शिक्षा को।

https://www.facebook.com/shikshansamvad/posts/1815859995358256

तो आइये जानते है बहन जी द्वारा विद्यालय के विकास के लिए किए गये अनुकरणीय प्रयास:--

मैं अलका बाजपेई जुनियर हाई स्कूल नैका में 10 साल से कार्यरत हूँ हमारे विद्यालय की स्थिति काफी खराब थी क्योंकि उसके आस पास काफी प्राइवेट स्कूल थे। जिनका भौतिक वातावरण काफी अच्छा था आज के युग में हर व्यक्ति ऊपरी बातों पर फोकस करता है भले ही अंदर उतने योग्य अध्यापक न हो। यही हमारे विद्यालय के साथ होता रहा। क्योंकि हमारे स्कूल के आस पास दबंगो ने कब्ज़ा कर रखा था गाँव के लड़के आकर स्कूल टाइम में खेलते मना करने पर अभद्रता करते थे। स्कूल कैंपस में जानवर चरने के लिए छोड़ देते थे। इन कारणों से कोई भी टीचर कुछ नहीं करना चाहता था। स्कूल बेहद ख़राब स्थिति में था चारों और कूड़े के ढेर थे। एक अविश्वास और निराशा सा माहौल था।

ऐसे में दो माह पहले मुझे स्कूल का चार्ज मिला मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या करें, कैसे स्कूल को बदलना शुरू करें। स्कूल मेन्टेन करने के पैसे भी नहीं थे तब मेरे पति ने कहा तुम स्कूल सुधारो मैं फण्ड दूंगा। तब मैंने आस-पास के लोगो को और प्रधान को बुलाकर स्थिति बताते हुए मदद मांगी सब ने मुझे सहयोग का आश्वासन दिया एसएमसी सदस्यों व स्टाफ ने भी काफी सहयोग किया। मैंने स्कूल की टॉयलेट की मरम्मत करवा कर पुताई कराई फिर स्टाफ के सहयोग से क्लासरूम में वाल म्युरल्स बनवाये कार्टून बनाये ताकि क्लासरूम आकर्षक लगे इस सबसे बच्चों में उत्साह बड़ा। दाई व अनुदेशकों ने भी सहयोग किया। जिन्होंने घर-घर जा कर बच्चे बुलाये। इन सब प्रयासों के बाद मेरी बगिया में फूल खिल उठे बच्चों की चहचाहट से स्कूल गूंज उठा।

आज मेरा स्कूल काफी साफ-सुथरा व आकर्षक है इसके लिए मैं अपने स्टाफ व् आसपास क लोगों को धन्यवाद देना चाहती हूँ और ये कहना चाहती हूँ कि यदि हम ठान ले तो कुछ भी असंभव नहीं है।
एक नई शुरूआत

अलका बाजपेई
UPS नैका बहादुरपुर
इलाहाबाद

बहन जी के सराहनीय प्रयास को मिशन शिक्षण संवाद की ओर से विद्यालय परिवार के साथ बहुत-बहुत शुभकामनाएँ!

प्रीती वर्मा

मित्रो आज हम आपका परिचय मिशन शिक्षण संवाद के माध्यम से जनपद फतेहपुर की आदर्श शिक्षिका बहन प्रीती वर्मा जी से करा रहे हैं। जिन्होंने मात्र एक सत्र में अपने विद्यालय को, जिसकी उल्टी गिनती शुरू होकर शून्य की ओर अग्रसर थी उसे अपनी सकारात्मक सोच से पुनः शिखर की ओर अग्रसर कर दिखाया।

आज जहाँ बेसिक शिक्षा में नकारात्मकता ऐसी जड़े जमा चुकी है। कि अच्छा काम करने वाले को उत्साह की जगह हतोत्साहित करने की निःशुल्क व्यवस्था लागू है। क्योंकि आलोचना वह सुगम हथियार है जो

स्वयं बिना किसी प्रयास के स्वचलित हथियार के समान गतिशील रहती है।

लेकिन मिशन शिक्षण संवाद के सहयोगी एवं अनमोल रत्न ऐसे मानवीय सेवा और राष्ट्रभक्ति के मतबाले हैं जो अपने सकारात्मक सोच की शक्ति से बिना किसी संकोच और शंका के सतत आगे बढ़ने वाले है।

तो आइये मित्रो मिलते है इन्हीं बेसिक शिक्षा के अनमोल रत्नों में बहन प्रीती वर्मा जी से, उन्हीं के सम्मानित शब्दों में :--
https://m.facebook.com/story.php?story_fbid=1791594677784788&id=1598220847122173

28 फरवरी 2015 को हमने प्रा.वि.कुन्देरामपुर में प्रधानाध्यापिका के पद पर कार्यभार ग्रहण किया। हमें यह बताया गया था कि एक समय में यह विद्यालय 'ए' श्रेणी का था परन्तु पिछले कुछ ही सालों में विद्यालय की स्थिति पूर्णतः बदल चुकी है। यह फीडबैक हमारे लिए एक चुनौती था। हमने तभी मन में ठान लिया कि विद्यालय का खोया सम्मान हम वापस ला कर रहेंगे। दिमाग में यह था कितना भी स्तर गिरा होगा पर बहुत खराब स्थिति तो नहीं होगी परन्तु जब विद्यालय आए तो यहाँ का नज़ारा हमारी सोच से बिल्कुल अलग था। विद्यालय में नामांकित छात्रों की संख्या 51 थी उनमें से 20-22 ऐसे जिन्हें कभी विद्यालय नहीं आना था बस नाम लिखे थे। यानी वास्तविक संख्या विद्यालय की मात्र 31-32 ही थी। पूरा सत्र बीत चुका था पर बच्चों को पढाई के नाम पर बस किसी-किसी विषय में एक-दो पाठ लिखवाए गए थे। इसकी वजह जाननी चाही तो सभी शिक्षकों ने एक दूसरे पर जिम्मेदारी डाल दी। खैर अब क्या हो सकता था वार्षिक परीक्षा सर पर थी। परीक्षा समाप्त हुई और नवीन नामांकन का समय आया और साथ ही स्कूल चलो अभियान का।

जब घर-घर जा के अभिभावकों से बच्चों के विद्यालय में प्रवेश के लिए सम्पर्क किया गया तो लगभग सबने यह कहते हुये मना कर दिया नाम लिखवाने से कि विद्यालय में पढाई नहीं होती पर कुछ लोग ऐसे भी थे जो हमारे द्वारा पिछले विद्यालय में स.अ के पद पर किए गए प्रयासों से परिचित थे उनमें एक विद्यालय की रसोईया माता और विद्यालय एस.एम.सी के उपाध्यक्ष भी थे। उनके कहने पर और हमारे इस आश्वासन पर कि आप सब हमारे कहने पर अपने बच्चे विद्यालय भेजिए और अगर अब पढाई न हो तो हमसे शिकायत करने का पूरा अधिकार आपका होगा। इस पर कई अभिभावकों ने अपने बच्चो का विद्यालय में नाम लिखवाया। परिणामस्वरूप सत्र 2015-16 में विद्यालय में नामांकित वास्तविक छात्रों की संख्या जो नियमित विद्यालय आते थे 57 हो गई। उपस्थित प्रतिशत 80-90 का रहने लगा।

अब हमारा मुख्य कार्य था सबसे पहले शिक्षा का स्तर सुधारने का और इसी के साथ अग्रिम सत्र में और अधिक नामांकन हो इसलिए अपने विद्यालय के रखरखाव और बच्चों को कान्वेन्ट के स्तर तक लाने का।

इस हेतु हमन पिछले सत्र में निम्नांकित प्रयास किए-

□1. प्रत्येक कक्षा हेतु समय-सारणी बना कर कक्षाओं का संचालन।

□2. विद्यालय में बिजली न होने के कारण प्रार्थना-सभा एवम् सांस्कृतिक कार्यक्रमों हेतु पोर्टेबल माइक की व्यवस्था की।

□3. छात्रों को अच्छी आदतें सिखाईं जिसमें बडों का सम्मान, खाने के पहले और बाद में हाथ धोना, सफाई रखना, सहयोग से काम करना आदि हैं।

□4. कोई भी कार्य करने में बच्चों के साथ-साथ स्वयं सहभागिता करना जिससे बच्चे हमें खुल कर बात कर सकें और हमें देख कर वे भी प्रेरित हों।

□5. बाल सांसद का गठन किया और विद्यालय में किए जाने वाले रोजमर्रा के कार्यों हेतु सामूहिक ड्यूटी बच्चों को आवंटित की इससे बच्चे हर काम को उत्साह और जिम्मेदारी से करते हैं।

□6. विद्यालय में हुई पुराई और सही देखभाल न हो पाने के कारण विद्यालय की भूमि की उर्वरता समाप्त हो चुकी थी। उसे वापस लाने के लिए हमने बच्चों के साथ मिल कर पूरे साल विद्यालय मे क्यारियों में गुढ़ाई करने के साथ-साथ बार -बार पांस डलावाई।

□7. मध्यावकाश में बच्चों को विभिन्न खेल सिखाए।

□8. आर्ट एंड क्राफ्ट में कुछ सामान हमने खरीदा और फिर पुरानी वस्तुओं की सहायता से अनेक उपयोगी वस्तुएं बच्चों को बनाने की कक्षाएं नियमित रूप से संचालित की।

□9. अच्छे कार्यों और प्रतियोगिता की भावना को बढाने के उद्देश्य से समय समय पर बच्चों को पुरस्कृत किया।

पिछले सत्र के इन प्रयासों को परिणामस्वरूप इस सत्र में छात्र संख्या में और बढोतरी हुई। अब हमारा उद्देश्य शिक्षा के साथ-साथ विद्यालय सुन्दरीकरण भी था। अतः इस सत्र में हमने अब तक निम्नांकित प्रयास किए है-

□1. बच्चों को अपने प्रयास से पूरी ड्रेस टाई-बेल्ट, जूतों सहित वितरित करवाईं।

□2 छात्र दैनन्दिन बच्चों के लिए छपवाईं और उसका उपयोग करना बच्चों को सिखाया।

□3. समय समय पर सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन।

□4. कक्षाओं में आकर्षक टी.एल.एम. बनवाए।

□5. विद्यालय के रखरखाव में पुताई में आकर्षक रंगों का उपयोग किया ।

□6. गतिविधि आधारित शिक्षा पर जोर।

□7. किताबों एवम् कापियों को सुरक्षित रखने हेतु विद्यालय से ही उनमें कवर चढ़ा कर वितरित किया।

□8. विद्यालय में क्यारियों का निर्माण और पौधारोपण।

□9. एक क्यारी सब्जियों की भी बनवाई।

□10. पौधों की सिचाई हेतु पाइप की व्यवस्था की।

इन सभी प्रयासों के कारण इस साल हमारा विद्यालय स्वच्छ विद्यालय पुरस्कार योजना में जिले से चयनित हुआ और अपने विकासखंड से एकमात्र चयनित विद्यालय भी बना। जिस पर अनेंको सकारात्मक और नकारात्मक स्थितियों का सामना भी करना पड़ा। लेकिन हमें जो करना है, जो हमारा कर्म है, एक शिक्षक का धर्म है, वह हम करेंगे ही किसी के कहने और आलोचना को हमने अपनी ताकत बनाना सीख लिया है।

ये तो अभी शुरूआत है...अभी बहुत आगे जाना है। शिक्षण संवाद एवम् गतिविधियों के माध्यम से कई ऐसे विद्यालय देखने को मिले जिनका हम अभी 10% भी नहीं हैं। पर वह दिन भी जल्द ही आएगा जब हमारा विद्यालय भी सफलता और ख्याति के नए-नए कीर्तिमान स्थापित करेगा।

https://m.facebook.com/primaryschoolkunderampur1963/

प्रीती वर्मा (प्रधानाध्यापिका)
प्रा.वि. कुन्देरामपुर
विकासखंड- अमौली
जनपद-फतेहपुर

मित्रो आपने देखा एक बहन का हौसला और उत्साह जो निश्चित ही बेसिक शिक्षा में शिक्षा एवं शिक्षक के हित और सम्मान की रक्षा का सहयोगी बनेगा। अतः बहन जी एवं उनके सहयोगी विद्यालय परिवार को मिशन शिक्षण संवाद की ओर से उज्ज्वल भविष्य एवं सतत प्रगति के पथ पर अग्रसर रहने के लिए बहुत- बहुत शुभकामनाएँ!

उमेश सिंह

मित्रो आज हम फिर आप सब के सामने मिशन शिक्षण संवाद के माध्यम से झीलों का शहर कहा जाने वाला और बुन्देलखण्ड की पावन वीर भूमि का जनपद- ललितपुर में होने वाले राज्य स्तरीय सेमिनार से खोज कर बेसिक शिक्षा का एक और अनमोल रत्न लाये हैं। जिसने अपने कर्तव्य और सकारात्मक सोच से स्वतंत्रता संग्राम के अमर शहीदों के विचारों तथा भारत की पवित्र भूमि के महापुरषों के मानवीय धर्म की रक्षा करने के लिए गाँव और गरीब को शिक्षा देकर उनके जीवन में ज्ञान के दीपक की नयी रोशनी फैलाने का काम किया और कर रहे हैं।

क्योंकि आजादी की लड़ाई मानवीय सभ्यता की रक्षा और समानता के अधिकारों के लिए लड़ी गयी थी लेकिन श्रद्धेय अमर शहीदों और महापुरूषों के स्वप्नों को भ्रष्टाचार रूपी भेद-भाव वाली नीति ने बुरी

तरह से ग्रसित कर रखा है। जिसका प्रत्यक्ष उदाहरण कभी- कभी समाज में देखने को भी मिल जाता है। क्योंकि इस देश के जो नागरिक, देश और मानवीय हित में काम करते हैं, या करना चाहते हैं उनके जीवन और कार्यों को देश के कुछ जिम्मेदार नागरिक भ्रष्टाचार की शक्ति से ड्रामा और मूर्खता कहने में कोई संकोच और लज्जा नहीं करते हैं।

लेकिन आपने इस प्रकार की नकारात्मक शक्तियों को नकारते हुए एक ऐसे गाँव में शिक्षा की ज्योति जला कर गाँव और गरीबों के जीवन में ज्ञान का प्रकाश फैलाने में कामयाबी प्राप्त की है जहाँ के नागरिक निर्धन,मजदूर और अपने को शोषित समझते थे।

आइये देखते है अपने अनमोल रत्न के शिक्षा एवं शिक्षक के हित और सम्मान के अनमोल कार्यों को:-
https://m.facebook.com/story.php?story_fbid=1786560231621566&id=159822084712217 3

मैं उमेश कुमार सिंह , M.A .BHU, प्रधानाध्यापक, प्रा० वि० करमपुर नवीन, शिक्षा क्षेत्र-बेरुआरबारी, जनपद-बलिया, उ० प्र० से।

मेरा विद्यालय ग्रामीण क्षेत्र में स्थित है। इस गाँव की आबादी अत्यन्त गरीब और अशिक्षित है। गाँव के लोग अपनी जीविका चलाने के लिए ईट के भट्ठों पर काम करते है। इस विद्यालय पर मेरे और मेरे सहयोगियों द्वारा मुख्य रूप से निम्नलिखित सफल प्रयास किया गया है जिससे यह विद्यालय एचआरडी मंत्रालय भारत सरकार द्वारा स्वच्छता अभियान में जिला स्तर पर प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया तथा राज्य स्तर पर भी इस विद्यालय का एकलौता जिले से अनुमोदन किया गया है ।प्रयास निम्न है :---

□ 1-विद्यालय में बच्चों को बैठने के लिए डेस्क व बेंच की व्यवस्था NGO तथा चन्दे के माध्यम से किया गया।

□2-बच्चों को विद्यालय मे ठहराव के लिए खेलकूद की गतिविधि को प्रारम्भ किया गया। इसके लिए चर्दे ,NGO के माध्यम से खेल सामग्री -बैट, फूटबाल , झूला स्टैण्ड , आदि की व्यवस्था करना।

□ 3-विज्ञान किट ,गणित किट , मानचित्र, चार्ट आदि की व्यवस्था करना।

□4-बच्चों को ड्रेस के साथ -साथ टाई, बेल्ट, आई कार्ड , जूता-मोजा आदि की व्यवस्था करना।

□ 5- बलिया में स्काउट गाइड की प्रा० स्तर की मण्डल में एक मात्र कब और बूलबूल टीम का गठन ।।

□6-समय-समय पर बच्चों को कम्प्यूटर द्वारा शिक्षाप्रद फिल्म दिखाना , कम्यूटर का बेसिक परिचय कराना , माइक द्वारा प्रार्थना कराना, आदि ।

□ 7-MDM में भोजन मीनू के अनुसार बनवाना , विद्यालय में शिक्षकों के लिए कोई आतरिक्त भोजन नहीं बनवाना,प्लेट , चम्मच, गिलास आदि की व्यवस्था करना।।

□8-विद्यालय परिसर को स्वच्छ,सुन्दर बनाने के लिए गमला, पेड़ पौध लगानाआदि ।।

□9-समय -समय पर जिला, मण्डल, पर आयोजित खेलकूद, स्काउट गाइड प्रतियोगिता , सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता , मेला भ्रमण आदि में बच्चों को प्रतिभाग कराना ।।

□10- विद्यालय पर अभिभावक-शिक्षक मिटिंग का आयोजन करना तथा बच्चों के घर जा कर सम्पर्क करना आदि ।। धन्यबाद

मिशन शिक्षण संवाद की ओर से भाई उमेश कुमार सिंह और उनके सहयोगी भाई सतीश कुमार जी के साथ विद्यालय परिवार को, जिन्होंने टीम भावना से काम कर -विद्यालय को उत्कृष्ट बनाने में सहयोग किया बहुत बहुत शुभकामनाएँ!

आशीष कुमार सिंह

मित्रो बेसिक शिक्षा के अनमोल रत्नों के परिचय के क्रम में आज हम पुनः मिशन शिक्षण संवाद के माध्यम से सीखने- सिखाने और बेसिक शिक्षा में कुछ सकारात्मक सोच बढ़ाने के उद्देश्य से आज आपका परिचय कन्या पूर्व माध्यमिक विद्यालय भुलईपुर, भदोही, संत रविदास नगर के प्रधानाध्यापक सम्मानित भाई आशीष कुमार सिंह जी से करा रहे हैं। जिन्होंने हमें सीखने के लिए मंत्र दिया कि- *"यदि व्यक्ति में कुछ करने का उत्साह, विचार नेक और इरादे बुलन्द हों तो उसका प्रकृति भी मार्गदर्शन करती है।,,* आपने इसी सकारात्मक सोच और ऊर्जा से जिस विद्यालय में रहे उसे हमेशा शिखर पर देखना पसन्द किया। यही राष्ट्र के प्रति समर्पित भाव ही आपको अन्य वेतन और छुट्टियों के लिए जीने वाले शिक्षकों से अलग करता है। जिसे आप लिंक में दिये गये फोटो और विद्यालय की गतिविधियों और उपलब्धियों से समझ सकते हैं।

https://m.facebook.com/story.php?story_fbid=1826259150985007&id=159822084712217 3

➡️विद्यालय की विशेषताएं--

1- उत्तम और सुन्दर बैनर, पोस्टर, रंगाई- पुताई और पेड़ पौधों से सुसज्जित विद्यालय परिवेश तथा बागवानी में सुन्दर फूल और उपयोगी सब्जियाँ

2- टाई, बैल्ट, बैज के साथ अच्छी से अच्छी यूनीफॉर्म

3- समस्त आवश्यक संसाधनों से सुसज्जित गुणवत्ता पूर्ण मध्याह्न भोजन व्यवस्था

4- स्वच्छता और स्वास्थ्य के लिए जागरूकता के साथ चिकित्सकीय परीक्षण और औषधियों का सहयोग तथा पर्याप्त संसाधनों से बच्चों को लाभ

5- साप्ताहिक गतिविधियों में सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी, सांस्कृतिक कार्यक्रम, खेल- कूद के साथ बच्चों की मासिक परीक्षा कराना, मासिक प्रगति को अभिभावकों तक पहुँचाना, तथा कमजोर बच्चों को उपचारात्मक शिक्षण द्वारा अन्य बच्चों के समकक्ष लाने का प्रयास करना।

6- शिक्षा की गुणवत्ता को उत्तरोत्तर प्रगतिशीलता प्रदान कर विद्यालय के बच्चों में प्रतियोगी भाव जागृत करने के लिए सदैव प्रयासरत रहना

7- उत्कृष्ट बच्चों को विभिन्न उपलब्धियों के लिए तथा विद्यालय के वार्षिकोत्सव में विशिष्ट अतिथियों द्वारा सम्मानित कर, बच्चों में सम्मान का भाव जागृत करना।

➡️अतिरिक्त सहभागिता और सम्मान

□1- विद्यालय के अतिरिक्त न्यायालय पंचायत समन्वयक का अतिरिक्त दायित्व

□2- विद्यालय में विभिन्न गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में प्रतिवर्ष वार्षिकोत्सव एवं कवि सम्मेलन

□3- न्याय पंचायत स्तर पर नामांकन मेला और प्रवेश उत्सव का जोरदार ढंग से आयोजन।

□4- आपके उत्कृष्ट कार्यों से प्रसन्न होकर माननीय मंत्री जी द्वारा 51000□ का विद्यालय विकास के लिए सहयोग और माननीय ब्लाॅक प्रमुख जी द्वारा 100 मीटर इन्टरलाकिंग रोड दिया गया।

□5- आपके कार्यों के लिए उत्साहवर्धन और सम्मान के रूप में ए बी आर सी, खण्ड शिक्षा अधिकारी, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी और माननीय मंत्री श्री सुरेन्द्र सिंह पटेल द्वारा सम्मान एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया।

बेसिक शिक्षा को सम्मानित ऊँचाइयों तक ले जाने के लिए सतत प्रयासरत शिक्षा सेनानी श्री आशीष कुमार सिंह जी और सहयोगी विद्यालय परिवार को मिशन शिक्षण संवाद की ओर से बहुत - बहुत शुभकामनाएँ एवं नमन!

सुमन लता यादव

मित्रो मिशन संवाद के अनमोल रत्नों के परिचय में आज हम आपको जनपद कन्नौज की बहन सुमन लता यादव जी से परिचय करा रहे हैं। जिन्होंने अपने शिक्षक जीवन में क्या करें? कैसे करें? बहुत काम है, समय नहीं मिलता, सरकार कुछ करने नहीं देती आदि अनेकों नकारात्मक चुनौतियों के बीच भी अपनी सकारात्मक सोच और ऊर्जा से यह सिद्ध कर दिया है कि---

"जहाँ चाह, वहाँ राह„

के साथ कर दिखाया कि--

काम करने वाले को कोई तूफान कभी रोक नही पाया।

हाँ यदि हम पूर्वाग्रही मानसिकता से ग्रसित होकर कुछ सत्ता और व्यवस्था के दुलारों की नकल कर बैठे तो बेसिक शिक्षा का मतलब हमारे लिए केवल वेतन रूपी दया रह जाता है। जिससे हम एक शिक्षक होते हुए भी सिर झुका कर असम्मान की जिन्दगी जीने को मजबूर हो जाते हैं। जिसका नकारात्मक पहलू आये दिन समाचार माध्यमों से सुनने को मिल जाता है। इसलिए यदि हम शिक्षक हैं तो सम्मान का जीवन जीना हमारा अधिकार है। जो हमें शिक्षक पद के साथ विरासत में मिला होता है। लेकिन यदि हम इसकी रक्षा न कर सके। तो इसमें दोष किसका है???*

इसलिए *शिक्षक मित्रो उठो जागो, और अपनी विरासत की रक्षा के लिए अपने कर्तव्यों के साथ आगे बढ़ो।*

जैसे कि एक बहन ने हमें कर दिखाया कि शिक्षक सम्मान की रक्षा कैसे होती है? तो आइये जानते है सम्मानित बहन के कर्तव्यनिष्ठ प्रयासों को उन्ही के शब्दों में---
https://m.facebook.com/story.php?story_fbid=1748913282052928&id=1598220847122173

मेरी नियुक्ति इस विद्यालय में प्रधानाध्यापक पद पर 2009 में हुई थी। उस समय विद्यालय सिर्फ चलने की भूमिका में था जिससे विद्यालय में छात्र उपस्थिति लगभग 20% के लगभग ही थी। गाँव की आबादी लगभग 6000 लोगों की है। गाँव की आबादी में अधिसंख्य मेहनत मजदूरी करने वाले लोग थे। जहाँ शराब की भट्टियाँ चलती थी।

इसलिए परिवेशीय व्यवस्था अस्त- व्यस्त थी किसी पुरुष को ऐसे माहौल में को पढ़ने - पढ़ाने की बात जानने और सुनने की फुरसत नहीं थी। इसलिए हमने माताओं को शिक्षा के प्रति जागरूक करना शुरू किया। जिसे माताओं ने समझने की प्रयास कर हमें सहयोग देना शुरू किया। हमने सहयोगी माताओं को जनप्रतिनिधियों द्वारा सम्मानित करा के उनके उत्साह को और सहयोगी बनाने के लिए प्रेरित किया। उनकी छोटी- छोटी समस्याओं को हल किया। जिसके परिणाम स्वरूप विद्यालय और समाज के बीच विस्वास की अटूट दीवार बन कर तैयार हो गयी। जिससे आज विद्यालय में 310 छात्र- छात्राएं है, जो स्वच्छ, सुसज्जित और समय से विद्यालय आते हैं। आज सभी अभिभावक हमारे विद्यालय के व्यवहार से खुश है जिससे हमारे विद्यालय परिवार को भरपूर सम्मान मिलता है। हमारे दो नियम हैं---- *"समय पालन और ईमानदारी„* इसी कारण आज हम विद्यालय में किए गये निम्न प्रयासों के साथ आप सब के साथ हैं।

विद्यालय में किये गये प्रयासः-----

□१- शासन द्वारा चलाये गये कार्यक्रमों का अभिभावकों की सहभागिता के साथ आयोजन

□२-बालिका शिक्षा पर माताओं की सहभागिता से अधिक जोर

□३-वित्तीय कार्यों में पारदर्शिता

□४-त्यौहारों पर माताओं अभिभावकों के साथ आयोजन।

□५- माताओं की छोटी- छोटी समस्याओं का सामाजिक सहभागिता के साथ निस्तारण

□६- विद्यालय का बहुत ही सुन्दर भौतिक परिवेश

□७- बच्चों के लिए उपयोगी पुस्तकालय की व्यवस्था

□८- पुरस्कार से मिली धनराशि से विद्यालय में समर, इनवर्टर, सभी कमरों में ट्यूबलाइट और पंखे आदि

इन सब प्रयासों से आज मेरा विद्यालय किसी प्राइवेट विद्यालय से कम नहीं है। बल्कि आगे है। इसीलिए अभी तक विद्यालय को निम्न उपलब्धियाँ प्राप्त हो चुकी हैं।

□१–ब्लॉक आदर्श शिक्षक १३ दिसम्बर २०१२
□२– जनपद आदर्श शिक्षक ०१ मई २०१३
□३– लोकमणि लाल पुरस्कार नवम्बर २०१४
□४– रानी लक्ष्मीबाई वीरता पुरस्कार २४ मार्च २०१५
□५– जिलाधिकारी द्वारा ५ सितम्बर २०१६

इन सब प्रयासों में अधिकारियों और मीडिया सभी का सहयोग रहा है।

जय हिन्द!

सुमन लता यादव
प्रा० वि० कुँवरपुर बनवारी,
वि० खण्ड– छिबरामऊ
जनपद– कन्नौज

मित्रो आपने पढ़ा कि कैसे एक बहन की चाह ने शराब की भट्टियों के बीच अव्यवस्थित गाँव में शिक्षा की राह को आसान कर दिखाया।

मिशन संवाद की ओर से बहन सुमनलता जी और उनके सहयोगी विद्यालय परिवार को उज्ज्वल भविष्य की कामना के साथ बहुत– बहुत शुभकामनाएँ!

अफ़ाक अहमद

मित्रों आज हम आपको एक ऐसे पर्यावरण प्रेमी अनमोल रत्न शिक्षक का परिचय करा रहे हैं। जो श्रम और समर्पण के प्रतीक पुरुष हैं। आपने एक शिक्षक विहीन निष्क्रिय रजिस्टर में चलने वाला तथा उद्दण्ड परिवेश के विद्यालय को अपनी सकारात्मक सोच और ऊर्जा के सतत प्रयास से ऐसा जादू किया जो असम्भव और अन्य शिक्षकों को डरावना लगने वाला परिवेश आज सम्मान के साथ आगे पीछे सहयोग के लिए तत्पर दिखाई देता है। आपने प्रेम और सतत प्रयास से अनेकों बधाओं को झुकाते हुए अपने विद्यालय को जनपद के श्रेष्ठतम विद्यालय के रूप में स्थापित कर दिखाया।

https://www.facebook.com/shikshansamvad/posts/1725143757763214

आज आपके के विद्यालय में कम्प्यूटर शिक्षा, सैटेलाइट, सी डी आदि आधुनिक संसाधन के अतिरिक्त खेल- कूद के अनेकों छोटे- बड़े साधन भी मौजूद हैं।

छात्रों की उपस्थिति के लिए मोबाइल, सम्पर्क और बैठकों द्वारा अभिभावकों से जुड़े रहते हैं। जिससे 250 छात्र संख्या पर प्रभावी नियंत्रण रहता है।

ऐसी अनेकों उपलब्धियों का सतत अभियान जारी है जिसे आप नीचे दी गई फोटो के माध्यम से देख और समझ सकते हैं।

ऐसे कर्मठ लगनशील बेसिक शिक्षा एवं शिक्षक के सम्मान को समर्पित भाई

श्री अफ़ाक अहमद

प्राथमिक विद्यालय रावतपार अमेठिया

विकास खण्ड- लार

जनपद- देवरिया

और इनके सभी सहयोगी स्टाफ को मिशन संवाद की ओर से बहुत बहुत शुभकामनाएँ!

29.

अनन्त तिवारी

मित्रो आज हम परिचय के क्रम में आगे बढ़ते हुए बुंदेलखण्ड की उस पावन भूमि की ओर ले चलते हैं। जो अनेकों महापुरुषों की कर्मस्थली की गवाह रही है, लेकिन समय चक्र के कारण वर्तमान में सूखा और असिंचित भूमि के रूप में जानी जाती है। फिर भी इसी भूमि पर सकारात्मक सोच और ऊर्जा के धनी हमारे शिक्षक साथी भाई अनन्त तिवारी जी बेसिक शिक्षा के परिषदीय विद्यालय में ज्ञान की हरियाली को किस तरह सिंचित कर रहे हैं। जो हम जैसे हजारों शिक्षकों के लिए प्रेरणा स्रोत व सम्मान के प्रतीक हैं।

तो आईये जाने कि वह कौन हैं उन्हीं के शब्दों में:---

https://m.facebook.com/story.php?story_fbid=1729345844009672&id=1598220847122173

□सृजन निखार शिविर□

बालिकाओं को प्रेरित करने हेतु और उनको स्वावलम्बी बनाने के साथ- साथ शिक्षा और विद्यालय के प्रति समुदाय विशेषकर महिलाओं और बालिकाओं के लगाव के लिये *प्रा० वि० देहरे बाबा मसौरा कला* में आयोजित सृजन निखार के शिविर का आज समापन नवांतुक बीएसए श्री *संतोष राय* जी और नगरपालिका अध्यक्ष श्री *सुभाष जायसवाल* जी के आतिथ्य में हुआ।
जहाँ बीएसए महोदय ने कार्यक्रम की सराहना करते हुये बालिकाओं को स्वावलम्बी और रोजगार पूर्ण शिक्षा देने पर बल दिया। वहीं दूसरी और नगरपालिका अध्यक्ष द्वारा इस तरह की सृजनात्मक कार्यक्रम होने पर खुशी जाहिर की। ग्रीष्मकालीन अवकाश में समुदाय को विद्यालय के प्रति लगाव के उद्देश्य से विद्यालय परिवार द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम का उद्घाटन माननीय *डा० रूपेश कुमार जिलाधिकारी ललितपुर* द्वारा दिनाँक २५-०५-२०१६ को किया गया था। अतिथि के तौर पर माननीय श्री *मिथलेश त्रिवेदी एडीएम ललितपुर* शामिल हुये। उद्घाटन के सत्र में जहाँ जिलाधिकारी महोदय प्रतिभागियों से रूबरू हुये वही दूसरी और उनके द्वारा निर्माण की गयी सामग्री को भी देखा। लगभग दो सप्ताह चले इस कार्यक्रम में जहाँ ग्राम की १७६ किशोरियाँ शामिल हुई वहीं स्कूल के छात्र छात्राओं ने भी अपना प्रतिभाग इस कार्यक्रम में किया। शिविर में किशोरियों को
सिलाई,मेंहदी,पेंटिंग,व्यूटीशियन,क्ले आर्ट,टेडी वियर निर्माण,स्टैच्यू मोल्ड,कुशन निर्माण,व्यर्थ साम्रगी से लाभदायक वस्तु निर्माण,कुकिंग आदि विधाओं का प्रशिक्षण प्रदान किया गया।
जहाँ किशोरियों और बच्चों ने पूरे मनोयोग से इस कार्यक्रम में हिस्सा लिया। कार्यक्रम को मूर्त रूप प्रदान करने वालों में सर्वप्रथम एक ऐसी बहिन जो मूक बधिर है *दीक्षा रावत* जी जिन्होंने प्रति दिन ललितपुर से आकर पेंटिंग और मेंहदी का प्रशिक्षण प्रदान किया।
उसके बाद में उन लोग की इस पोस्ट के माध्यम से प्रशंसा करना चाहूँगा जिनके बिना कल्पना ही नही की जा सकती थी मेरी सोच का एक भी कार्यक्रम धरातलीय स्वरूप नहीं ले सकता है वह मेरे विद्यालय में कार्यरत मेरे सहकर्मी *नेहा जी,संध्या जी,बबिता जी*।

आप सभी ने मेरे हर कार्यक्रम में पूरे समर्पण भाव से कार्य किया और इनके साथ साथ प्रा० वि० मसौरा कला की शिक्षिका *बबिता तिवारी* का भी योगदान प्रशंसनीय है।
आप सभी के लगन और मेहनत के बिना इस कार्यक्रम की कल्पना ही नहीं जा सकती थी।
शिविर में एक दिन ललितपुर कोषागार के वरिष्ठ लेखाकार सर *अवध गुप्ता जी* ने भी शिविर का अवलोकन किया।आज समापन के दौरान कई बालिकाओं ने बीएसए सर से बातचीत की और कहा कि हमने ऐसा कभी होते नहीं देखा और निश्चित ही विद्यालय में आकर हम सभी बहुत खुश हैं और बहुत कुछ यहाँ से लेकर जा रहे हैं। आप सभी ने व्यक्तिगत रूप से और सोशल मीडिया के माध्यम से हमारे विद्यालय परिवार को स्नेह दिया है उसका हम सभी आभार व्यक्त करते हैं,और आशा करते है जो भी सलाह आप हमें प्रदान करेगें हम अपने विद्यालय में वैसा करने के लिये प्रयास करेगें।
बस यूं ही आशीर्वाद प्रदान करते रहें।

धन्यवाद
आभार
अनन्त तिवारी (प्र० अ०) एवं
समस्त शिक्षक
प्रा० वि० देहरे बाबा मसौरा कलाँ, ललितपुर

मित्रों आप भी बेसिक शिक्षा विभाग के सम्मानित शिक्षक हैं तो इस मिशन संवाद के माध्यम से शिक्षा एवं शिक्षक के हित और सम्मान की रक्षा के लिए हाथ से हाथ मिला कर अभियान को सफल बनाने के लिए इसे अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाने में सहयोगी बनें और शिक्षक धर्म का पालन करें। हमें विश्वास है कि अगर आप लोग हाथ से हाथ मिलाकर संगठित रूप से आगे बढ़े तो निश्चित ही बेसिक शिक्षा से नकारात्मकता की अंधेरी रात का अन्त होकर रोशनी की नयी किरण के साथ नया सबेरा आयेगा।

सुमन जी

मित्रो आज हम मिशन शिक्षण संवाद के माध्यम से बेसिक शिक्षा को शून्य से शिखर का रास्ता दिखाने वाली आदर्श शिक्षिका बहन सुमन जी से आप का परिचय करा रहे हैं। आपने अपने अन्दर के शिक्षकत्व भाव को जगा कर एक ऐसे विद्यालय को उन असम्भव दिखाई देने वाली ऊँचाईयों तक पहुँचाया, जिसके बन्द करने की फाइल बेसिक शिक्षा विभाग तैयार कर रहा था। लेकिन अन्तिम कोशिश करने के उद्देश्य से पहुँची बहन ने उस उजड़े चमन में भी तीन मुरझाये पौधों से पैंसठ खिलते फूलों वाले पौधों की ऐसी बगिया तैयार की जिसकी खुशबू जनपद ही नहीं वरन मण्डल और प्रदेश स्तर तक फैल रही है। इसलिए बहन जी ने सच ही कहा कि---

“शिक्षा के बढ़ते कदम,

फला फूला उजड़ा चमन।„

तो आइये मित्रो देखते हैं आपके प्रयासों की फोटो एवं शब्दों के माध्यम से झलक---

मैं जब तीन सितम्बर- 2012 में प्रा० वि० अजब पुर मंगावली, विकास खण्ड- मुरादनगर, जनपद- गाजियाबाद पहुँची तो वहाँ की व्यवस्था देखकर दंग रह गयी कि ऐसा भी खराब स्थिति का विद्यालय होता है। जहाँ मात्र तीन बच्चे और एक शिक्षा मित्र, अस्त व्यस्त व्यवस्था के बीच विद्यालय बन्द करने की फाइल तैयार थी। मेरे एक - दो दिन असहज रूप से समय काटते हुए मन में विचार आया:--

" क्या मेरी ड्यूटी स्कूल आकर और इन्हीं बच्चों को पढ़ा कर समाप्त हो जाती है। या इस उजड़े चमन में कुछ और फूल खिला सकती हूँ।„

तब मैंने अपने आप से वायदा किया कि मैं अपना सौ प्रतिशत विद्यालय और बच्चों को दूँगी और अपने उद्देश्य की प्राप्त हेतु मुहिम शुरू कर दी।

आज विद्यालय में 65 बच्चे हैं। इस सफर में घर- घर सम्पर्क से लेकर बच्तों के बाल कटवाने और नहलवाने के अलावा क्या - क्या हुआ वह सब आप लोगों के सामने है जिसे आप फोटो के माध्यम से भी देख सकते हैं।

गतिविधियाँ और उपलब्धियाँ:----

👉१- अभिभावकों से सतत सम्पर्क

👉२- मीना का जन्म दिन धूम धाम से मनाना

👉३- शैक्षिक भ्रमण के माध्यम से बच्चों को बैंकिंग व्यवस्था को समझाना तथा धार्मिक स्थलों के महत्व से परिचित कराना।

👉४- विद्यालय में पेड़- पौधों को लगाना।

👉५- राखी बनाना की कला का प्रदर्शन।

👉६-दीपावली मेला में रंगोली में प्रथम, क्राफ्ट में तृतीय आने पर जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी द्वारा सम्मान प्राप्त।

👉७- ब्लाक स्तरीय और जिली स्तरीय प्रतियोगता में डम्बल और पीटी में गोल्डमैंडल प्राप्त करना

👉८- राइजिंग फाउण्डेशन द्वारा बच्चों को स्पोर्ट यूनीफॉर्म का वितरण।

👉९- वाहिनी फाउण्डेशन द्वारा बच्चों को स्टेशनरी विवरण।

👉१०- विद्यालय में कम्प्यूटर शिक्षा के बेसिक कोर्स के सत्र का संचालन।

👉□११- दोहा अन्ताक्षरी में बच्चों द्वारा मण्डल स्तर पर गोल्ड मैडल प्राप्त करना। और पी टी में तृतीय स्थान प्राप्त मंडल स्तप पर।
👉□१२- दैनिक जागरण द्वारा विद्यालय के परिवर्तन को छापा गया।
👉□१३- बेसिक शिक्षा विभाग द्वारा सम्मानित
👉□१४- दस मार्च को महिला दिवस पर गीतांजलि वेलफेयर एजुकेशनल समिति द्वारा सम्मानित।

मित्रो आपने देखा कि एक विचार के परिवर्तन से पूरी स्थितियों को कैसे बदल दिया। जो व्यक्ति कल तक बच्चों को विद्यालय भेजने के नाम पर भड़कते थे। वहीं अभिभावक बच्चों द्वारा मैडल जीतने पर खुशिया मनाते हैं और बहन जी की सराहना करते हैं। इसलिए आइये हम सब भी अपना विचार बदल कर, बेसिक शिक्षा के प्रति समाज की सोच और व्यवहार बदलें।

विशेष आभार

विनोद कुमार (स०अ०)

पू०मा० विद्यालय अमवा माफ़ी, औराई, भदोही

अवनीन्द्र सिंह जादौन (स०अ०)

पू०मा० विद्यालय कैलोखर, जसवंतनगर, इटावा

मोहम्मद वाइज़ (ABRCC गणित)

ब्लॉक – मिश्रिख , सीतापुर

अमरेश मिश्र (स०अ०)

प्रा० वि० चम्पतपुर, बिधनू , कानपुर नगर

शिल्पी गोयल (स०अ०)

पू०मा० विद्यालय निज़ामपुर, सिकंदराबाद, बुलंदशहर

सैय्यद अरशद अब्बास (प्र०अ०)

प्रा० वि० रेती खुर्द बुजुर्ग, सतांव , रायबरेली

प्रवीण कुमार (स०अ०)

पूर्व मा० वि० गंगपुर पुख्ता, कादरचौक, बदायूँ

प्रांजल सक्सेना (स०अ०)

पूर्व मा० वि० रहटुइया , मझगवाँ , बरेली

सिंह शिवम् कुमार राजेन्द्र (स०अ०)

प्रा० वि० जहुरुद्दीनपुर , सुइथाकलाँ , जौनपुर

Facebook page :- https://www.facebook.com/shikshansamvad/
Email Id :- shikshansamvad@gmail.com
Whatsapp Number of working district :-

मिशन शिक्षण संवाद- 9458278429

1	सीतापुर	8896420420	२५	फतेहपुर	9450227958
२	हरदोई	8182814271	२६	शामली	9411893002
३	जौनपुर	9839364560	२७	सम्भल	9927734444
४	हाथरस	9897333113	२८	महराजगंज	9580218590
५	रायबरेली	9235856605	२९	गोंडा	9450054208
६	पीलीभीत	7409273565	३०	बरेली	7417434208
७	कानपुर दे	7054185939	३१	वाराणसी	9458278429
८	कानपुर न	9450769349	३२	अलीगढ़	7037777077
९	भदोही	9452710600	३३	रामपुर	9927104801
१०	औरैया	9456843029	३४	मथुरा	9410272305
११	चित्रकूट	9453260203	३५	बाँदा	9450226635
१२	झाँसी	8923595100	३६	बुलन्दशहर	9458278429
१३	बदायूँ	9758936438	३७	कन्नौज	9453873201
१४	बागपत	7599245462	३८	गोतमबुद्धनगर	9582914687
१५	एटा	9411464664	३९	कुशीनगर	9458278429
१६	शाहजहाँपुर	9058756016	४०	सुल्तानपुर	9839888477
१७	बस्ती	9415047039	४१	उन्नाव	9453050493
१८	गोरखपुर	9935663399	४२	फ़िरोज़ाबाद	7599448891
१९	बलिया	9451017523	४३	बलरामपुर	8052436046
२०	देवरिया	9532330786	४४	मीरजापुर	9935793234
२१	मुजफ्फरनगर	9411813786	४५	लखनऊ	9936298218
२२	इटावा	9412320607	४६	लखीमपुर खीरी	9807493821
२३	ललितपुर	8604562262	४७	आजमगढ़	8081720904
२४	मऊ	9451082473	४८	इलाहाबाद	7380792777

(नोटः अगर कहीं कोई गलती हुई हो तो क्षमा करें)

जय हिन्द.....!